If all perception be of a transient character
There shou'd be no recollection of past
events, but the fact is that we do
recollect what we had seen in the past.
No knowledge can say that it is
erroneous

श्राउर्ड्

(कफन्)

इन्दिरा

अभिव्यंजना, नयी दिल्ली

यह चतुराई हम नहीं कीन्ही
फिर,
तुम क्यों कर गये हम सौ परिहास

मात्र आपके लिए
इन्दिरा

Your love is a living factor for me
'Anash'
Whom I should ask—love is an
Invention of death ?

मेरा यह प्रयास है उस रूप का
जिसे शब्दा मे पिरोते समय

जीजाबाई	+	शिवाजी
तात्या	+	पृथ्वीनाथ
शाहजहा	+	जहाआरा
नेहरू	+	इदिरा
नारायण	+	इदिरा

—(यह नाम पल-पल स्मरण करने पडेंगे।)

मेरे शब्द

कहा से प्रारम्भ करू, समय नही पाती
अन्त करने का तो प्रश्न ही नही ।
प्रत्यक व्यक्ति
के पास "स्वय" का कुछ होता है, अगर वह उससे छिन
जाए तो उस पीडा की अभिव्यक्ति शब्दो मे व्यक्त करना
असम्भव हो जाती है,
कोई कर पाएगा यह एक अनुत्तरित प्रश्न है,
प्यार ! स्नेह
जिसम मनचली क्षण क्षण गल रही है सम्भवत वेदना
के द्वारा ही पोषण प्राप्त करते हैं जिससे उसकी स्मृति मे
मनुष्य जीने का सम्बल सभाले रहे
जन्म एक शाश्वत सत्य है
मत्यु मात्र प्रतीक्षा
सत्य और प्रतीक्षा के मध्य मनचली आज तक मूल रही है
उस व्यक्ति की छाह म जिसने उसे आकार दिया, रूप दिया
शब्द दिये
मनचली जीवन भर उस व्यक्तित्व के साथ जुडी रहती अगर
वायु का एक झोका न आता ।
उसने सब कुछ बिखेर दिया प्यार, ज्ञान, दशन, बोध और
वह ठगी सी खडी रह गई
निर्वाक
निस्तब्ध
आज भी खडी है,
आप भी देखिए, शायद वह कुछ भूलने की स्थिति मे आ जाए

● इन्दिरा
31 सावन सासायटी
घोडासर
अहमदाबाद-380050

दूरभाष
52067

क्या सम्बोधन दू ?
किसको सम्बोधित करू ?
आशा
निराशा
या
मात्र, यत्रणा
मेरे यह सतप्त शब्द आप तक पहुच सकेंगे ?
विश्वास नही होता
होने का प्रश्न भी नही आज जहा आप हैं वहा कोई
स्वय नही पहुच पाता तो उसके शब्द कैसे पहुचेंगे ?
यह अभिशाप है,
नहीं,
यह यथार्थ है
यथार्थ ही नियति है
यथार्थ ही प्रारब्ध है
लगता है
आज जीवन की दौड मे बहुत पीछे रह गई, नही मैं
बहुत आगे चली गई और जीवन बहुत पीछे छूट गया।
प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अनुभूतिया होती हैं और
इन अनुभूतियो के साथ जुडे होते हैं कुछ रहस्य।
आपको याद होगा आपने एक पत्र मे मुझे लिखा था
"कैसा बुतखाना कहा का दौर कैसी खानकाह
जिस जगह सिजदा किया हमने वो काबा हो गया।"

जीवन का सत्य अगर कुछ है तो आपका एक यही
वाक्य।

आज अनायास मेरा अपना अतीत मेरे सामने आकर
खड़ा हो गया। हम दोनों ही स्तब्ध हैं अवाक् हैं।
सोचा कि मेरे इस अनुभूति भरे अतीत से और
कुछ तो कर नहीं सकी कम से कम अपना कफन तैयार कर लू ?
आज वही कफन तैयार करने का प्रयास प्रारम्भ किया है।
आत्मा और मन दोनो ही संघर्ष कर रहे हैं और इन दोनो
के मध्य मेरा विवेक अट्टहास कर रहा है। "मानो पूछ रहा है
शब्दो का कफन तैयार कर रही हो इतने शब्द हैं तुम्हारे पास
कि पाच फुट की लाश ढकी जा सके ?
इतने शब्द ?
जरूर फिर प्रयास है मेरा, लगता है आपने मेरे साथ
विश्वासघात किया है,
नहीं-नहीं, क्षमा करिएगा, आप तो सदा कहते थे कि पहले
आप आए हैं आप ही जायेंगे प्रस्थान का पहला
अधिकार आपका है
यह तो मेरा हठ था,
मेरा हठ
मेरा हठ कैसे पराजित हो गया, राजहठ, बाल हठ और स्त्री हठ, श्रेष्ठ
हठो मे से हैं ।
राम आदर्श थे, कृष्ण कर्मयोगी, बुद्ध संत मौन, ईसा पर दुख भंजन,
गांधी समय के प्रवाह में जलता हुआ तेज पुंज
लेलिन सर्वहारा, अरस्तु चिंतक, गेटे कवि स्पैंसर
दार्शनिक, शरद नारी का मुक्ति दूत था लेकिन आप इन
सबसे श्रेष्ठ।

(1)

स्थान नया हो या पुराना
परिचित या अपरिचित, हम तो अपने ही तानपूरे
की कीलों मे अपने को बन्द रखते हैं, वेदना की
कील कोई विशेष नहीं होती जहाँ कोई स्थिर स्वर
सुरक्षित रखा जा सके। वह तो एक आमंत्रित होती

है मूर्छा होती है जिसके अन्तगत न चाह कर भी
हमे डुबकी लगानी पड़ती है।
वास्तव मे वह तो मैंजुअरिना का नशा होता है क्योंकि मूर्छा
की अनुभूति अवसाद देती है, ग्लानि को जन्म देती है
लेकिन नशा तो मादकता है वेदना से उसका (कोई स्थाई
या अस्थाई) किसी प्रकार का सम्बन्ध नही होता उसकी
तो सतरगी अपनी दुनिया होती है जहा पराभव के काले
धुए मे न जान कितने पटबीजने आख मिचौनी करते रहते हैं
नीले आसमान और हरी धरती के ऊपर कितन चन्दन महल
बनते हैं।
जो सशक्त एव वास्तविक चन्दन महल नही बना पाता उसे क्या
अधिकार है इस प्रकार के चन्दन महलो म रहने का ?
झिलमिलाती सीढिया ऊपर जाने के लिए और एक आकर्षक
महल, फिर क्या चाहिए। देवराज इन्द्र सीधे प्रतीक्षा मे रत
उन्हे भी चन्दन महल की सीढियो के प्रति विशेष लगाव है,
तभी वह सदा राज सिंहासन पर विद्यमान रहते हैं विष्णु की
भांति विष्णुप्रिया के साथ शेषनाग पर विहार नही करते।
भय से मुक्त
अतीत से दूर
भविष्य से निश्चित
मात्र वतमान म जीते हैं
मत्यु और जीवन, बथ और डैथ इमका प्रश्न ही नही,
न कफन बनाने की चिन्ता, न लेने की न देने की
तभी तो एल० एस० डी० की स्वप्निल सासें वहा सरगम
की लय पर थिरकती रहती हैं।
शायद इस प्रकार की सरल प्रतिक्रिया ही जीवन है ?
व्यक्ति का Inner most क्या है ?
जन्म और मत्यु के बीच के भोगे कुछ पल
क्या Inner most हो सकते हैं ? दूसरे शब्दो मे कहे तो
व्यक्ति के जीवन के व्यक्तिगत तथ्य और सघष
ही इस शब्द को साथकता देते हैं ? क्योंकि
प्रश्नो और समस्याओ से रिक्त तो कोई भी
मानसिक अनुभूतियो का चन्दन महल नही है।

(2)

आज बस इतना,
कोई नया विचार ?
आकाश नीला नीला रक्ताभ आभा लिए दूर कौने पर
रक्त जैसा लाल दिखाई दे रहा है, आसमान इतना
नीला है या मेरा मन ? कृष्ण काय हो चुका है,
मैं कब से एकटक निहारे जा रही हू । वास्तव मे तो
मैं यह भी नही जानती कि मैं क्या निहार रही हू ?
क्षितिज का छोर लाल अगारे की भाति दहक रहा है या
मेरा मन !
एक को अनुभव कर रही हू और दूसरे को निहार रही हू
काश्मीर की वादियो म डूबता सूरज हो, जहा सोने के फूल
मल्हार गा रहे हो, पचमढी का इको पाइट हो, कोडोयो-
कनाल की बलखाती सडकें उन पर बिछे हुए मानवीय
सुर, महाबलेश्वर की मुद्रा पीक लानी सब
स्थानो पर अगारो की भाति प्रज्वलित हैं और इन
सब के मध्य का लाल एहसास जो निता त मेरा है, बस
मेरा धधकता हुआ रक्ताभ मन !
आज मैं अकेली हू,
शब्द और यादें
काश अगर आज आप आ जाए तो एक शब्द भी
उच्चारित न करन दू आपको, क्योकि मैंने आपकी बोलती
आखें पढी हैं, आपका बोलता स्पश अनुभव किया
है। शब्दो की आवश्यकता आज मुझे अपना
कफन तैयार करने के लिए है, जिसे मैं ओढ सकू
लेकिन मुझे कफन उढाएगा कौन ?
आज तो ,
खैर।
आपन एक पत्र म मुझे लिखा था—"My dear life
is not always a smooth sailing --
One has to take rough along with
Smooth

आज आप नही आपक शब्द हैं आपका यह वाक्य क्या -
मेरा उपहास उडा रहा है या मेर अ तमन की व्यथा को

मथ रहा है आप तो पतवार छाडकर स्थाई रूप मे चले
गये, जीवन की सच्चाई सुख और दुख दोनो हैं नियति
का निष्पक्ष न्याय मात्र दुख ही नही हो सकता फिर यह
कौन सा रहस्य मेरे भाग्य म आया वादो के घेरे मे
जाकर भी अगर चुनरी रगी जाए तो क्या वह सतरगी होगी ?
जीवन के कितन रग, कितन इज्म होते हैं, मूर्तिकार की
छेनी श्रमिक के हाथ, सगीतज्ञ के स्वर, वादक की लय, निधन
की आहे, श्रेष्ठी का ऊफ, बुद्धिमान की उमस, एव मूख की
वाचालता सभी तो अपने का रग या इज्म के मुखोटो से
ढके हुए हैं।
काल्पनिक द्वन्द्व का सहारा लेकर आकाश गगा के सभी
नक्षत्र आज मेरी मुट्ठी मे हैं चौंकन का भय नही क्योकि
यह यथाथ सत्य है। पागलपन नही और न ही काल्पनिक
विद्रूपता, मेरी हथेली जल रही है आकाश गगा के
भी तो अपन नक्षत्र हैं, उनकी उष्णता स हो सकता है
कि इनम फफोले पड जायें, लेकिन एक दिन न मेरी
हथेली होगी, न आकाश गगा के नक्षत्र, सब कुछ धूमिल
हो जायेगा बदरग होते-होते अस्तित्व ही शून्य मे
परिवर्तित हो जाएगा लेकिन परिवतन नही आएगा तो
आकाश मे, धरती मे
मैं यह नही पूछूगी
कि,
फिर मानस मे परिवतन क्यो ?
क्याकि,
उसे ही कफन की आवश्यकता पडती है।
उसके पास बुद्धि है क्या यह इतना बडा अभिशाप है
कि उसे उसके लिए चिरन्तन डोर गूथते रहना चाहिए
आपन मुझे कई बार सप्तर्षि दिखाए थे मुझे तो आज कल
वह भी दृष्टिगोचर नही होत, होगे भी कैसे जब आकाश गगा
मेरी हथेली को अग्निदाह का ममत्व दे रही है, ममत्व,
हा ममत्व ही पीडा का सही रूप है सही अथ है
परिवतनशीलता मानवीय गुण है तो शब्द कोषो के अर्थ भी
एक भ्रम भरी सान्त्वना के प्रतीक बन जाने चाहिए।
बस यही एक आवश्यकता निशेष है
घर मे आनन्द मगल के बीच कोलाहल था

वडी भाग्यशालिनी है पाच पीढ़ी के बाद घर म लक्ष्मी
पधारी है
मनचलो।
किसी ने आवाज दी
उस आवाज ने मुझे पहली बार वताया कि मेरा ज म एक
उच्च एव सास्कृतिक परिवार म हुआ है। गवनर की
पोती और आई० ए० एस० की बेटी।
प्यार के हिंडोले म वढ़ती गई।
रात दिन मेरे नौकर चाकर थे
रात मे कभी अधेरा नही देखा
दिन मे अधेरे का प्रश्न ही नही
समय के साथ साथ शायद मैं कभी नहीं वढ़ी, वढ़ी मेरी उम्र।
इन सव के उपरा त विचारो का अधड मेरे मन को
अवसर मथ जाता लेकिन शिशु मन क्या कभी अपना
अधड व्यक्त कर पाया, शायद उस समय भी मेरा
बालपन मुझ से हठ करता था कि मैं कम से कम
उसको तो वता दू कि मैं कौन हू। मैंने गुडिया
का व्याह कभी नही रचाया मैं परिवार के और
बच्चो के साथ कभी नही चहकी शायद मैं कभी
बच्चा रही ही नही?
कितना विचित्र सयोग था कि दादा जी की गगनचुम्बी हवेली के
ठीक सामने पेडो की झुरमुटो से घिरा श्मशान था, मैं अक्सर
अकेली छत पर वैठी निर्निमेष दृष्टि से आग की तीव्र लपटो मे
रगो का सम वय ढूढती थी। मेरा दामन निराशा ने कभी नही
थामा, मैंने कई बार चिता मे सतरग देखे। इ द्रधनुप मे
सत रग होते हैं लोग उसे देखने के उपरा त आह्लाद एव
सुखद आश्चय का अनुभव करते हैं लेकिन उन सतरगी रगो से
मुझे कभी सुख की अनुभूति नही हुई हा उन सतरगो की
डोरी के ऊपर वैठकर मैंने न जाने कितने मनुष्यो को वैकुण्ठ की
ओर जाते देखा है।
मनुष्य मरता क्यो है?
फिर उसे कफन में क्यों लपेटते हैं?
फिर उसे जला क्या देते हैं।
यह इ द्रधनुप अपन रगो पर विठाल कर क्या वास्तव में
उसे वैकुठ धाम ले जाता है? ये अपना अस्तित्व इतना

आकपक कैसे रख पाते हैं ?
रग क्या कभी जड होता है ?
रग ता जीवन है
रग तो बहार है
फिर यह कफन क्यो ?
मेरा नन्हा बालमन ऐसे न जाने कितन निर्दोष प्रश्नो
में भटकता रहता। आज सोचती हू कि मेरे पास
स्थिरता कहा से आती, ढेर सारी जिज्ञासाए जो थी।
आज मात्र पीडा है।
पीडा नही मेरे शब्द जिसके द्वारा मुझे मेरा कफन
तैयार करना है। जिन्दगी की तेज सुपर फास्ट दौडती
ट्रेन में और कोई कर भी क्या सकता है पीछे
जरा भी देखा तो अतीत की बडी बडी विशालकाय पहाडिया हैं, चाहे
सुखद हा या दुखद, जरा भी पांव
फिसला तो फिर चार कन्धो पर चढ़ा कर लोग
यही ले आयेंगे चिता जल उठेगी और क्या मैं जब भी रग देखती
रहूगी ?
इन्द्रधनुष के रगो की गिनती कर सकूगी।
नही, कभी नही,
यथाथ जीवन तो मौन है
बाकी मात्र भ्रम।
इस भ्रम से जब पहली बार मन को शान्त देखा
सामन कफन में लिपटी दादा जी की लाश थी—
मन ने शीघ्र पूछा,
मैं भी एक दिन इसी प्रकार कफन में लिपट जाऊगी ?
हा एक दिन अवश्य !
यह बालपन और किशोरावस्था के स्वप्न थे, या भ्रम थे
आज,
हा आज !
आज लगता है निर्मोही शब्द भी तो मुझ से बीस वष दूर
रहे और किसी को यह आवश्यकता नही थी कि मुझे यह
शब्द सिखाए।
मैं लडकी थी।
कफन का और मेरा क्या सम्बन्ध !
नारी,

किसी की दासी, किसी की अर्धाङ्गिनी, किसी की मा
बनना मेरे भाग्य की रिजल्टशीट थी जो सम्भवत परिवार
वालो ने ज म के समय ही तैयार कर ली थी। मुझे तो कफन
भी दूसरे देंगे, कोई नवीन सत्य नही
एक चिरन्तन सत्य
एक यथार्थ सत्य
इस रिजल्टशीट के लिए न पडित की आवश्यकता
न कुडली की।
नारी अपनी कुडली अपने साथ लेकर ज मती है उसकी
भाग्य रेखा धरती पर पडते ही पढ ली जाती है।

रहस्यवादो की शिथिल चट्टानो पर घुमडता मेरा मन, मेरी पथ-
प्रदर्शिका गोरी मेम मैं दानो की बुद्धि का भार उठाए
चली जा रही थी कि जीवन में एक बडा झाका आया मैं
सात म जाग उठी। गगनचुम्बी अट्टालिका से निकाल कर स्कूल
नाम के अजायबघर में भर्ती करा दी गई। हा मेरे लिए
मात्र वह अजायबघर था जिसमें छोटी बडी कितनी सारी
आवाजें थी आकृतिया थी। मैं प्रयत्न करने के उपरा त भी
न किसी से अपनी आवाज मिला पाई न किसी आकृति की हम-
जोली बन सकी और एक दिन पता लगा कि मैंने मैट्रिक पास
कर लिया है और अब मैं ईसा बेला ट्रीर्ट कालज लखनऊ
में भेजी जा रही हू।
घर छोडने का विचार मेरे सम्पूर्ण अस्तित्व को
कपा गया। नकारने का साहस मेरे पास नही था और न ही
घर वाला क विचार और मेरी जि दगी के बीच
कोई समझौता हुआ। उस दिन की मेरी सिसकिया शायद किसी
के कानो को स्पर्श करने का साहस नही जुटा पाई
मैंने, अकली ने, कितनी बार वेदना की लोरी गा गाकर
स्वय को निद्रा देवी की गोद में डाला और शायद इसीलिए
शब्दो से अथाह प्यार हाने के उपरा त भी मैं शब्दो
से आज तक प्यार नही कर पाई।
लगता था सभी मुझ से बहुत दूर हैं,

पिता को दूर से देखती,
विचार करती,
बस जाकर लिपट जाऊ यही एकमात्र वह इन्सान है जो
मेरे सब प्रश्नो के उत्तर दे सकता है।
कभी लगता है
मेरे लिए इतने बडे घर मे बस इन्ही की आखो मे
अथाह प्यार है।
यह आखें सदा मुझे आश्वस्त करती
जीवन की सीढियो पर चढते चढते कब किशोरावस्था को छोडकर
यौवन की देहली पर आकर खडी हो गई मुझे तो पता ही नही लगा।
आज जब खुली तो सारे घर मे कुहराम मच रहा था मैं
सकपका गई अधखुली आखो से सुनने की चेष्टा की क्योकि
कान साथ नहीं दे रहे थे, धक से रह गई इस कुहराम की
नायिका मैं थी, खलनायिका थी मेरी दादी।
देखा तो नही था सुना था कि मेरे दादा जी की यह धर्मपत्नी
अपने मायके से अपने वजन का सोना दहेज मे लाई थी
बडे फारवड परिवार की थी उनकी भाभियो को पढाने गोरी
मेम आती थी उनका ही आज विरोध था कि अब मुझे
वापिस पढने के लिए न भेजा जाए। मा ने भी अपनी सास
का ही पक्ष लिया। वास्तव मे सारा घर दादी की हा मे हा
मिला रहा था।
मैं बिलख उठी।
पहली बार दादी के प्रति नफरत पैदा हुई।
उस दिन प्रथम बार मुझे यह अनुभूति हुई कि मैं अकेली
हू मेरा कोई नही। मैं बस मर जाना चाहती थी। काश
मैं मर गई होती।
काश, किसी जलती चिता में जाकर कूद पडती,
ऐसा कुछ नही कर पाई मैं पर याद है कि उस दिन
पहली बार मेरे सोलह वर्षीय सुकुमार
मन मे विद्रोह की ज्वाला भभक उठी थी
बालपन का मन कच्ची
मिट्टी का होता है उसी कच्चे घडे को लेकर मैं घर से निकल
पडी। दरवाजे, नही अपने पिता की आलीशान कोठी के
फाटक से आप आ रहे थे।
कहा जा रही हो ?"

मैं एकटक देखती रह गई
' बोलती नही, कहा जा रही हो चलो मैं छाड दू"
काई उत्तर नही सूझा, जी चाहा आपसे लिपट कर फूट
फूट कर रो लू।
आपका स्नहिल हाथ मेरे क धे पर था, वह स्पश मैं आज भी नही
भूली। पहली बार मुझ मे प्यार का एहसास जगा था आप मुझे
बहुत अच्छे लगे थे, उस क्षण उस बच्ची उम्र की पूर्ण सार्थकता
मैंने अनुभव की थी।
सौ सदस्यो के परिवार मे पहली बार मैंने अपने पापा को अपने
पास पाया था।
"चलो अन्दर" वह मेरी उगली पकड कर छोटे बच्चे की भाति
अन्दर ले आये थे।
मैंने सुना था आप दादी से कह रहे थे "इस का भार मुझ
पर छोड दो।"
उस समय की हमारे परिवार की पारिवारिक परम्परा म पापा का अपनी
मा से इतना बोलना अक्षम्य अपराध था। मैंने प्रथम बार
आपको बोलते देखा था, मेरी प्रसन्नता का पारावार नही था
मुझे आप पर गर्व हो गया पहली बार जाना कि
पुत्री का पिता होता है।
फिर दो विचारो के बीच झूलती मेरी जिन्दगी, मैं बहुत डर
गई थी क्या मैं अपने स्वप्नो को साकार कर सकूगी? एक
प्रतिष्ठित डॉक्टर बन सकूगी? बालमन बार बार सहम जाता
अपने ही घर म अनजानी सी भटकती रही बिना खाना
खाए ही सो गई।
वह प्रथम प्रभात।
वह बालपन का तेज नशा,
वह जीवन जीने की ललक,
और आपकी बाहो मे समा जाने का जोश
' उठोगी नही, आज तुम्हे कालेज म एडमीशन लेना है।'
मेरा एडमीशन हो गया।
कितना सुखद एहसास था कि पहली बार मैं अपने
पिता के नाम स पहचानी गई थी आज तक तो मेरे
नाम के आगे गवनर साहब की नवासी ही लगा रहता था
आज मैं मात्र आपकी बेटी थी।
यह सब सत्य है?

मेरा मन इस सत्य को स्वीकार नही कर पा रहा [illegible]
का प्रश्न नही था। दादा जी की हवेली मे घण्टे [illegible]
घड़ियाल बजते थे जब पुजारी जी पूजा करते लेकिन
मुझे प्रतीत हुआ पूजा तो आज हुई है। कितनी प्रसन्न
थी मैं वह स्वय को भी नही बता सकती फिर उस
आनन्द को शब्दो मे कैसे व्यक्त कर पाऊगी ?
शायद शब्दो का अभाव सदा मेरे जीवन मे रहा।
ग्यारह बज गये, अब कल लिखूगी।

(3)

जीवन का एक नया अध्याय,
सुखद मोड।
मैं स्वय को भूल गई, बस आप ही आप।
परिन्दो की भाँति मैंने आकाश म उडना सीख लिया
था धरती का स्पश ही भूल गई मेरे लिए रात
चादी की और दिन सोने के हो गये।
आपका Transfer हो गया।
मैं होस्टल म चली गई आपको छोडन का
अथाह दु ख था। रोई तो नही लेकिन आज भी याद
है 15 दिन से खाना छोड दिया था। आप रात-
दिन मुझे समझाया करत थे एक नन्हे शिशु की
भाँति
होस्टल मे मेरा जी नही लग रहा था।
आपने मुझे पहला पत्र लिखा

"Things do not always happen in the
way we would like them to happen Many
times they happen an unexpected way and we find
ourselves in difficulty unless we get with courage
and patience The difficulties will defeat us"

और मैं एकदम समझदार हो गई।
जीवन म मुझे जो कुछ मिला है वह तो अदभुत है, कौन-

सी ऐसी बेटी होगी जिसे ऐसा भाग्य मिले। मुझे तो वह मिला है जिसकी मैंन कल्पना भी नही की थी। मैं नरक स निकल कर स्वग म आ गई थी।

दादी से बचकर जब पापा के पास पहुच गई ता यह समय भी कट जाएगा।

मुझे किस बात का दुख।

मुझे याद आया कि होस्टल क दरवाजे पर आपन मुझ से कहा था, ' मनचली जीवन म विद्या से अधिक कुछ नही तुम पढना चाहती थी, खूब पढो इतनी ऊची बनो कि मैं यह कहने म गव अनुभव करू कि यह मेरी Creation है।"

मुझे आज भी वह क्षण भली प्रकार से याद है कि आपको छोडने की पीडा म भी मुस्करा दी थी। मैंने झुककर आपके पैर छू लिए थे।

आपने प्यार से मेरा माथा चूम लिया था और तेजी से पलट कर कार मे जाकर बठ गये थे। मैं उस कार का वही खडी खडी पीछा करती रही थी जब तक वह आखो से ओझल नही हो गई

दिन, महीने बप जाते देर नही लगती

मैं एम० ए० पास हो गई।

यूनिवर्सिटी टाप की थी मैंन, पहली बार आपकी पलको मे प्रसन्नता के आँसू देखे थे।

मैं पीडा मे नही गव से लाल अगारो की भाति दहक उठी थी आप मुस्करा दिये थे।

परम पूजनीय ब्राह्मण परिवार की मैं पहली लडकी थी जिसने बी० ए०, एम० ए० किया था।

"इतिहास" एक शब्द है,

लेकिन मेरे लिए सम्पूर्ण इतिहास !

' क्या पढ रहे हैं आप ?'

"मोस"

"क्या है इसमे ? ' कहते हुए मैंने हाथ से किताब ले ली।

बहुत अच्छी किताब है मनचली इतिहास कसे लिखे जात हैं सभ्यता और सस्कृतियो का उत्थान और पतन कैसे होता है ? इसम बडे रोचक ढग स बताया है क्रिश्चयनिटी का पूरा ब्यौरा है यह किताब।'

आप बुक वाम थे कितना पढते थे और मैं अभी तक अपने
को छोटा-सा बच्चा समय कर आपके आगे पीछे घूमती रहती
थी। आप पढते और मुझे सुनाते जैसे दादी नानी कहानिया
सुनाया करती हैं पुस्तको का व्यसन था आपका और इस
व्यसन मे न जान कब मैं भी शरीक हा गई थी घण्टो
आपसे चर्चा करती। कभी कभी ता गेटे, मिल्टन, कालीदास, शरद
रवीन्द्र, वर्नाड-शा स्पेन्गलर और यहाँ तक कि मारीओ पूजो
पर वाद विवाद करते-करते सारी रात व्यतीत हो जाती न
मैं थकती न आप इस बीच आपन एक नया नाम मुझे
दे दिया था मनचली। मैं मु नी से मनचली हो गई
मैं प्रसन्न थी मेरे आकाश का चन्दन महल कितना अच्छा है
कितना भव्य।
मैं अब हास्टल नही जाऊगी।
क्यो ?
मेरा मन नही लगता।
आप वहा मन लगान के लिए जाती हैं या पढन के लिए।
मुझे नही पढना।
पढोगी नही ? आप चौक गये।
हा, अब मै आपसे दूर नही जाऊगी।
तुम जानती हो न मेरा ट्रासफर होन वाला है
अगर तुमने एडमीशन यहा ले भी लिया तो मैं
चला जाऊगा फिर तुम्हे होस्टल मे ही रहना पडेगा।
नहा मुझे होस्टल मे अब नहीं रहना।
फिर पढाई।
नही पढूगी।
पढना तो हम दोना का स्वप्न है, क्या तुम मेरा स्वप्न पूरा
करना नही चाहती ?
मेरी आखें भर आई और मैं एक नन्ही-सी बच्ची की भाति
आपकी गोद मे मुह छिपाकर रो उठी थी।
वर्षों म शायद यह मेरी पहली हठ थी, कहीं अन्दर से
आप भी बहुत भीग चुके थे, बहुत छोटी थी शायद इसीलिए
हठ कर बैठी
पर आज सोचती हू
कि आपके लिए मेरी पढाई मेरा भविष्य ही सब कुछ था
उसे आप किसी भी कीमत पर Disturb करना नही चाहते थे।

आपने मुझे शरद का एक उपन्यास तीन भाषाओ मे लाकर
दिया था सब व्यवस्ता का आले मे रख कर हम दोनो ने
उसकी नायिका कमल पर जम कर वाद विवाद किया था।
आपको कमल अच्छी लगती थी कम के क्षेत्र को उसने
अपनी नियति माना था वह अपने समय से बहुत
आगे थी। तभी ता वह इजीनियस से कि इतना स्पष्ट कह सकी
थी तुम क्या भगाकर ले जाओगे, जब किसी की गाडी नहीं
चुरा सकते ? मन्द मन्द मुस्करा देते थे आप तब, कितन
तक देते थे।
कमल अपन ही एक छोटे से कमरे म एक पराए पुरुष
का बिस्तर बिछाकर कह दती है सो जाओ मैं नीचे
सो जाऊगी।
मैं भी जितना कमल के सम्बन्ध म सुनती उतना
ही आदर और सम्मान उससे
करने लगी थी
आपके द्वारा उसका विश्लेषण सुनकर असीम प्रसन्नता होती
थी वैसे आप तो मेरे लिए Encyclopidia थे
मैं भी अक्सर आपको अपने मन द्वारा निर्मित चरित्रो मे
ढूढती रहती।
एम० ए० की मैरिट लिस्ट मे मेरा नाम था रिकाड तोड दिया
था मैंने पिछले पन्द्रह वष का।
आप बहुत बहुत खुश थे।
पहली बार नही, बार बार अब मैं यह अनुभव करने लगी
थी कि अगर आपको कोई प्रसन्नता प्रदान कर सकता है तो वह
मैं, मैं अक्सर यही समझती थी कि न आप प्रसन्न होते हैं
न दुखी।
लेकिन यह सत्य नही था।
तुम जानती हा मनचली मैं चाहता हू कि तुम बहुत-बहुत
ऊची बनो तुम्हे देखकर मैं गव स कह सकू कि तुम मेरी अपनी
Creation हो। *कितना गहरा था आपका यह वाक्य !*
मैं अपलक आपका मुह दख रही थी सोच रही थी जी हा मैं
आपकी ही Creation हू।
आपन खडे होकर धीरे से मरा माथा चूम लिया। मैं भाव विह्वल
होकर आपस लिपट गई आप न जाने कितनी देर तक मेरी पीठ
थपथपाते रहे।

आप कमठ पुरुष थे।
उस दिन हम बहुत देर तक रवी द्र और शरत् की बातें करते रहे। आपने मेरी सफलता के उपलक्ष्य मे मुझे रवीन्द्र और शरद साहित्य उपहार स्वरूप दिया था।
मेरे पैर तो जमीन पर पडते ही नही थे।
वास्तव मे उन्मुक्त पक्षी की भाति मैं तो गगन म मुक्त विचरण करती थी विश्वास था कि न कभी कोई जाल बिछाएगा न कभी कोई बहेलिया आएगा मैं कितनी भी दूर उड जाऊ आपकी दो सशक्त आखें सदा मेरा पीछा करती रहेगी। यह एहसास कितना सुखद है वही जान सकता है जिसने अनुभव किया हो
इस बार मैं होस्टल नही जाऊगी।
'क्यो फिर वही जिद" आपने मेरी ओर देखते हुए कहा
'तुम तो बहुत पढना चाहती थी बस एक सीढी चढकर ही डगमगा गई।"
"नही अब मैं आपके पास रहकर पढूगी"
"पढ सकोगी, मैरिट लिस्ट मे आ सकोगी ?"
'क्या ?" मैंने प्रश्न पूछा।
"सदा मुख पर खेलने वाला वही चिर-परिचित स्मित आपके मुख पर फैल गया।
न फिर मैंने कोई प्रश्न किया न आपने कुछ पूछा'
मैंने एम० ए० (अर्थशास्त्र) और एल० एल० बी० (फायनल) मे एडमीशन ले लिया।
आप महीने मे बीस दिन दौरे पर रहते राजस्थान, महाराष्ट्र और गुजरात तीन प्रान्तो का कार्यभार था आपके पास।
लेकिन जैसे ही दौरे से लौटते मेरी ढेर सारी बातें प्रारम्भ हो जाती न आप सुनते थकते और न मैं सुनाते।
न मैंने कभी आपको थके हुए देखा न कभी गुमसुम।
अब मैं वास्तव मे बडी हो गई थी सब कुछ समझने लगी थी आपसे आशातीत प्यार था अधिकार था लेकिन इसके साथ-साथ अब उसमे श्रद्धा समाहित हो गई थी। मन के किसी कोने मे, मैं आपकी पूजा करने लगी थी।
दत्तचित्त!
वैसे तो पूरे परिवार पर मे मैं छाई हुई थी घर का हर बडा सदस्य मन ही मन मेरी जैसी बेटी की

कामना करता था।
सारे परिवार पर मेरे व्यक्तित्व की गहरी छाप
स्थापित हो चुकी थी। अब पुरानी मनचली नहीं
थी। उनकी राय के बिना घर का पत्ता नहीं
हिलता था। छोटे ही नहीं परिवार के बडे सदस्यो
को भी पापा तक पहुचने के लिए मेरे पास
आना पडता था।
"मनचली, शोभा की शादी है और बीस हजार रुपये की
आवश्यकता है अगर दादा इस समय मदद कर दें तो "
पापा को सारा परिवार यहा तक कि दादा और दादी जी भी
दादा ही कहते थे। हमारे परिवार की पारिवारिक सस्कृति म
बडे बेटे का नाम लेकर पुकारना निषेध है।
"आप चिन्ता क्यो करती हैं, मैं पापा स बात करूगी मैंने
अपनी ताई जी से कहा।
ताई जी की एक ही लडकी थी। परमात्मा न सौन्दय और
बुद्धि दानो से ही उस वचित रखा था।
पापा हमे ये पैसे देन ही चाहिए।
दे सकोगी ?
मम्मी का कोई जेवर दे दीजिए।
सुना था मेरी मा भी दादी के समान ही अपन वजनका सोना तोल कर दहेज
लाई थी।
मेरी दादी और मेरी मा,
दोनो ही एक लीक एक परिपाटी पर चलने वाली थी।
मा तो वेचारी ऊपर चली गई लेकिन दादी का अहम
मैंन वर्षों झेला था।
"क्यो ठीक है" मैंने पापा की ओर देखते हुए पूछा
"शादी तो होनी ही चाहिए शोभा की।"
पापा मुस्करा दिए थे।
क्या था इस मुस्कराहट मे,
अपार वात्सल्य ममत्व, अपनत्व, प्रेम कितनी ढेर
सारी भावनाए एक साथ एकत्रित थी उन्ह आज
याद करू तो भी क्या एक साथ शृखलाबद्ध
जोड पाऊगी, कभी नही वह तो पूणमासी की
चादनी क समान मुझे आलिंगन म बाधती रहती

हैं।
बस फिर,

(4)

आज प्रात से ही आप नाराज तो नही पर हा उद्विग्न
अवश्य थे।
तुमने यह फाम क्यो भरा ?
मैं सर्विस करना चाहती हू।
क्यो, होस्टल मे तो रह नही सकी अकेली रह पाऊगी ?
अपने पैरो पर खडे होना चाहती हू शायद यह आकषण
इतना बडा है कि आप से दूर रह पाऊ।
अभी तक तुम्हारा कोई ऐमा आकषण है जिसकी पूर्ति न की
गई हो ? कहते हुए आप बाहर चले गए।
इसके उपरात इस सदभ मे कभी कोई चर्चा घर मे नही
हुई। यू० पी० एस० सी० की ढेरो पुस्तकें लाकर आपन ही मुझे दी। सत्य
है यह कि पहले प्रयास मे ही मैं राजपत्रित अधिकारी
घोपित कर दी गई।
यह परिश्रम मेरा नहीं था।
कितना विचित्र है आपका चरित्र,
जो आपको पसद नही
नियुक्ति पत्र मेरे हाथ मे था,
मैं आपके सम्मुख खडी थी।
न जाने कितना समय निकल गया। आप अचानक सिगरेट
फेंक कर उठ खडे हुए मेरे कधे पर हाथ रख कर बाले
"मैं चाहता था कि अब तुम घर बसा लो।"
मैं शायद पहली बार और अन्तिम बार उस दिन फूट फूट
कर रोई थी।
"मुझ से कुछ भी कहो पापा लेकिन कभी ऐसा मत
कहना मेरा जीवन आपका है मैं आपको छोड कर
कही जाने की कल्पना भी नही कर सकती।"
पता नही उस रात आप कितनी देर तक मुझे समझाते
रहे, मैं अपनी गाथा गाती रही, नारी समाज

की मुक्ति में सफल पुरुष की सफलता, जीवन की
आवश्यकताएं शारीरिक जरूरतें, हमारा समाज
सभी विषयों पर हमने तर्क किए थे। मेरे मन में एक विद्रोह
था उसकी ऊंची-ऊंची आवाजें थी समाज को परिवर्तन करने
की एक झूठी आकांक्षा थी। नारी की मुक्ति का मोह दंड
सम्भवतया मैंने अपने हाथ में ले रखा था।
उस रात हम बहुत अच्छे मित्र बन गए। श्रीकांत और शरद
इतने वाद विवाद के उपरान्त,
मेरी सर्विस जो पसन्द नहीं थी गौण बन गई।
कितना adjustment
कितनी understanding
मेरी नियुक्ति जबलपुर में हुई।
मेरा पूरा डिब्बा लाल गुलाब के फूलों से सजा था। मुझे
पता लगा था कि उस दिन दो ट्रक फूल आया था।
ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई नवेली पिता के घर से
ससुराल के लिए विदा हो रही है, नववधु के चारों ओर
सुगन्ध ही सुगन्ध थी।
सत्य भी था। मैंने ही तो आपसे कहा था कि मेरा विवाह
मेरी सर्विस से कर दीजिए।
मेरा दूल्हा नियुक्ति पत्र मेरे साथ था।
विदाई तो विदाई ही है।
मेरा हठ था।
आपकी सदा की भांति स्वीकृति,
आप मुझे रोज एक पत्र लिखेंगे,
आपका पहला पत्र Living without you in this house
is really a punishment The place is looking
vacant and lifeless due to your absence
I feel your absence every second
This is a fact which I have
been experiencing since your
departure You have taken away every thing
from here The taste of the morning tea quality
of good taste Cleanliness of house, clothes etc all
have gone away with you How can I
than remain happy and peacefully here

बचपन की उपेक्षित लडकी,
जो श्मशान की जलती चिताओ मे इन्द्र धनुष क रग
खोजती थी।
जो अपने कफन के लिए न हे नन्हे शब्द एकत्रित करती
थी।
और आज,
जीवन के यह रग कितने शोख थे।
मैं इन्हे निहारती, पढती और पढाती ही रह जाती थी।
कालेज मे भी किसी पिता के ऐसे पत्र किसी पुत्री के
पास आए हो सम्भव नही।
और जो पत्र मेरी रूम मैटस के पास आते थे उन्हे बिना पढे
ही मैं फेंक देती थी।
मेरे पत्र,
ये उस देवता के है जिनकी कृतज्ञता का प्रतिदान मैं किसी भी तरह नही दे
सकती जिसे, मेरा हृदय प्रतिपल प्रणाम करता है।
मैं चली आई थी।
पढना एक नशा था।
सर्विस, लगा एक पीडा है, क्लेश है।
इस क्लेश के साथ आपसे दूर होने की पीडा अधिक
सालने लगी। मैं सशक्त हू अपने पैरो पर खडी हू एक
क्षण के लिए जब इस अनुभूति मे डुबकी लग जाती तो
अच्छा लगता पर एक क्षण से अधिक नही
उस क्षण भी आपको भुला तो नही पाती पर आपसे दूर
हो जाती उस समय की मेरी अवस्था अह्लाद की नही
विषाद की भी नहीं लेकिन कुछ ऐसा अवश्य था जब
मन की ग्रन्थियो न खुलन का उपक्रम करती न बन्द होने
की चेष्टा। ऐसे शून्य के मध्य मैं अपने को स्थिर
रखन की चेष्टा अवश्य करती।
मेरे मित्र तो एकमात्र आप ही थे। कालेज मे मेरा कोई मित्र
नही था क्योकि आपने कहा था कि तुम मन्दिर मे आओगी।
तभी मैं समझ गया कि तुम्हे मान्यता से हटाकर मैंने भूल
नही की। मैं कभी नही चाहती थी कि आपके इस विश्वास
को तनिक सी भी ठेस लगे इसलिए पढना, बस रात दिन
पढते रहना मेरे जीवन का ध्येय था।
बाकी सब बोरडम।

आपके पास पहुचन की गति
आज जब सर्विस ज्वाइन कर ली है ता यह एहसास कि
आप अकेले हैं और मैं इतनी दूर। पीडा दे जाती है।
पिता-पुत्री का रिश्ता कब पीछे छूट गया और आप मेरे
स्नेहिल आत्मीय मित्र बन गये कब, यह तो मुझे भी
पता नही चला।
आपका पत्र बिना नागा मुझ मिलता था प्रात से मेरी दृष्टि
पोस्टमैन को खोजती रहती चाहकर भी आपके पत्र मिलन से
पूव मैं अपनी दिनचर्या प्रारम्भ नही कर पाती थी आपका
पत्र आता दो चार बार पढ़ती और उसके उपरान्त मेरे
मन का भास्कर प्रसन्न होता।
जबलपुर के जिलाधीश बड़े अच्छे थे।
मैं शीघ्र ही उनके परिवार मे घुल मिल गई अक्सर
वह मेरा मजाक उडाते थे कि अरे इनको इनके पिता
जी जितनी religiously पत्र लिखते हैं, कोई प्रेमी
भी अपनी प्रेमिका को नही लिखेगा।
उनके परिवार मे उन्मुक्त हसी का ठहाका गूज जाता।
मैं और और गहरे आपके विचारो मे डूबती जाती।
आपको हर पल याद करना मेरे लिए आवश्यक नशा
था।
किसी के विचारों मे अपने को भूल जाना भी
अपने आप मे परम आनन्द का अनुभव देता है One who loves
must be superior

प्यार की पीडा अधिक दिन झेलना असम्भव हो गया और मैं
प्रत्येक महीने हजारो किलो मीटर का सफर तय करके आप के पास पहुचने
लगी।
आपने न तो मना किया
और न ही यह पूछा, तू क्यो बार बार आती है?
शून्य की स्थिति एक दार्शनिक की है
मैं तो नही,
लेकिन आप अवश्य हैं।
आप तो महान ज्ञाता हो आपके पास मेरे लिए
मात्र वात्सल्य ही नही था मैं पहले भी कह चुकी हू कि
बहुत कुछ था।

तभी तो मेरे बिना चाय भी नही अच्छी लगती जिसकी
पचास कप प्रतिदिन की आपकी आवश्यकता थी।
प्यार आपकी नियति है, प्यार आपका स्वभाव है, प्यार
आपका जीवन है।
वर्षा ऋतु अपने यौवन के वेग पर है। दूर-दूर तक अनन्त
की दृष्टि सम्पूर्ण रूप से हरी है, पानी श्वेत झरने
सृष्टि की पवित्रता का आह्वान कर रहे हैं। मेरा मन श्वेत
बगुलो की भाति आपसे मिलन को आतुर। कल्पनाओ के
पखो पर बैठ कर विचरण कर सकती हू पर सशरीर उडकर
आपके पास नही पहुच सकती। अभी थोडी देर पूर्व
दूरभाष पर आपसे बातें हुई हैं फिर दौडने भागने की चाह
क्या लेकिन मन तो मन ही है, छत पर आपके पास
लेटकर नक्षत्रो की जन्मपत्री सुनना चाहती थी वह
आपका प्रिय शौक, वृहस्पति, राहु, केतु, एक-एक
नक्षत्र दिखाकर आप इस सम्बन्ध मे घण्टो मुझसे
चर्चा करते थे और मैं आज्ञाकारी श्रोता की भाति
सुना करती थी। लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रखती
थी कि आपका ध्यान मेरे ऊपर ही केन्द्रित रहे।
शायद नक्षत्रो से मुझे ईर्ष्या होने लगी थी।
आज आकाश अगारे की भाति दहक रहा है आप कहते थे न
कि जब कोई बडा व्यक्ति ससार से जाता है तो आकाश लाल
अगारो जसा रक्तिम हो जाता है।
अपने आफिस की बडी टेबिल पर अकेली बैठी हू सोचते
सोचते किसी स्वप्न मे खो जाती हू,
मेरी जिद,
वही तो एक शस्त्र था मेरे पास।
"पापा उठो न"
"बस थोडी सी फाइलें हैं'
"नही बस उठ जाइये"
"प्लीज माई डियर"
"आप नही उठेंगे ?"
"उठता हू भाई"
"उठते उठते आपने कितनी देर लगा दी" मि० एण्ड मिसेज
सोजानितिक्सा रशिया से आये हैं उन्हे लेकर मुझे चीफ
मिनिस्टर के पास जाना है।"

पापा का स्वर मेरे स्वरो म दबा गया । वह पुन बोले,
"मैं तुम्हें गाडी ले देता हू तुम घर जाओ
मेरा appointment है हितेन्द्र भाई क साथ"
' कल मिल लीजिएगा । आपके सी० एम० चले थोडे जायेंगे ।"
"कैसी जिद करती हो तुम जैसी जिम्मेदार आफिसर
के मुह " एक क्षण रुक कर बोले, "जानती
हो क्या कह रही हो ?"
हठ ही था ।
बचपना आज नही कहूगी ।
उस दिन भी नही ।
सच ही कहा था पापा न, मैं भी क्लास वन
आफिसर थी ।
उस दिन
मैं गुस्से मे भरी बाहर निकल गई ।
घर आकर ओ० के० पर बरस पडी । छह-सात काच के
गिलास तोड दिये । झटपट नीचे उतरी गाडी निकाली बचारा ओ० के०
उसकी बात सुनने का अवकाश किसे था यौवन का गरूर,
ढेर सारी सुखद परिस्थितिया और आपका अनकथ प्यार । मैं तो
दीन दुनिया से अलग ।
मैंने गरेज स गाडी निकाली और रवाना हो गई ।
कहां जबलपुर कहा अहमदाबाद ।
तीस बत्तीस किलोमीटर ही पहुची हूगी कि आपकी गाडी ने
मेरा रास्ता रोक दिया ।
शायद मेरे निकलते ही ओ० के० ने घबरा कर आपको फोन
कर दिया होगा ।
क्या पागलपन है यह ?
मैं जबलपुर जा रही हू
ठीक है जाओ वापिस चलो ।
आपको तो बहुत काम है जब आपका काम खत्म हो जाए
टेलीफोन कर दीजियेगा ।
आप मुस्करा दिये थे, 'चलो घर"
मैं बिना कुछ कहे वापिस आ गई । मैं जो गाडी चला
रही थी वह ड्राइवर ले आया ।
घर आकर बहुत दुख हुआ । मुझे ऐसा नही करना
चाहिए । यह बचपना नही, पागलपन है ।

मेरे साथ ऐसा होता तो ?
पापा एक बहुत जिम्मेदार आफिसर हैं।
पापा मुस्कराते हुए मेरे पास आये, ' अब तो क्षमा कर दो
मेरी मां '
मैं हंस अवश्य दी लेकिन मन ही मन निर्णय
लिया कि भविष्य में कभी कोई ऐसी हरकत नहीं
करूंगी।
मैं बिस्तर बिछाने ऊपर चली गई
जब वापस आई तो पापा पढ रहे थे।
"क्या पढ़ रहे हैं ?"
"TOPAZ"
"अच्छी किताब है"
'हां '
'मेरे से भी अच्छी"
' नहीं तुमसे अच्छी कोई चीज नहीं दुनिया में" आपकी दोनो
हथेलियों के बीच मेरा मुंह था।

(5)

ट्रन-ट्रन टेलीफोन की घण्टी बज रही थी।
हलो !
तुम यहां आ जाओ
क्या बात है पापा
यहां आओगी तो तुम्हें बहुत अच्छी न्यूज दूंगा।
क्या क्या फिर आपने मेरे लिए कोई लडका देखा है ?
नहीं अपने लिये
शायद पापा मुस्कराये होंगे लेकिन मैं खिलखिलाकर हंस
पडी
अच्छा
जल्दी आना
मैं आज ही Casual leave की application दे देती हूं।

फोन बीच मे ही डिस्कनैक्ट हो गया
आज की डाक अभी आई नही थी मैं प्रतीक्षा मे अन्दर
बाहर घूम रही थी।
कल का पत्र "I feel That my peace of mind
has remained behind you I do
not like to be disappointed in
the matter concerning you There
is nothing particular to talk about
but I am desirous of hearing your
voice It is an urnest and innoc-nt
desire and it deserves to be
fullfield"

इगलिश के शब्द हो या हिन्दी के लेकिन जब ये शब्द
मिलकर वाक्य रचना करते हैं, उससे जो अर्थ बनते हैं
वह कैसे गहरे और अन्तमन को छू लेने वाले होते हैं
इसका परिचय सभी को नही हो सकता।
आपकी आवाज और वाक्य रचना सुनने को मैं कम
आतुर नही। महर्षि वैश्वपायन की भाति आप लिखे नही
बोले जाए और मैं सुनती रहू। आपकी आवाज मुझे
पवित्र मन्दिरो की घण्टियो के समान लगती जो जीवन म
प्रेम और शाति ही देती है।
आपकी आवाज मेरी पूजा थी। सुन्दर काण्ड का पाठ था
सप्ताह म आपके दो फोन अवश्य आते थे और मेरे
फोना की तो कोई गिनती ही नही थी। कभी कभी लगता
था कि ट्रककाल का बिल भरने के लिए ही मैं सर्विस
करती हू।
फिर भटक गई मैं।
इस पत्र मे तो ऐसा कुछ नही लिखा था।
मेरा अवकाश उसी दिन स्वीकृत हा गया और दूसरे
दिन प्रात ही आकर जब काल बेल बजाई ता
Freedom at the midnight हाथ मे लिए आप
सामने खडे थे।
"बस किताब"
मैंने किताब सोफे पर रख दी और आपसे लिपट
गई।

"आप इतनी जल्दी प्रगट हो जाएगी ऐसा तो
मैंन सोचा नही था।"
आपके मुख पर मुस्कराहट थी और मेरे मुख पर
जिज्ञासाए।
आओ एक कप चाय पियें पहल
मैंन पापा क पैर छूत हुए पूछा कि पहले यह
बताइय आपन बुलाया क्या ?
"अरे हा, अभी आया" कह कर आप अन्दर चले गय।
और मैं वहां सोफ पर पैर फैला कर बैठ गई।
"देखो" अखबार हाथ म लिए वह अन्दर से आय। "यह
दस तारीख का अखबार है। मीना कुमारी कमाल अमरोही
से तलाक लेन की सोच रही है। मैंन सोचा मैं अपना नम्बर
लगा दू लेकिन पहले अपनी बटी स पूछना आवश्यक था।"
हम दोनो की हसी बहुत देर तक गूजती रही कितनी देर
तक हम दानो हसत रहे। फिर आपन ही पूछा, "क्यो मरा
proposal पसन्द नही आया।"
अरे एकदम बढिया है पापा
देखी थी न interesting news !
एकदम
पापा की प्रिय अभिनत्री थी मीना कुमारी, उसका सम्पूण
व्यक्तित्व आपको पसन्द था और दूसरी थी ग्रटा गारबा।
दोना ही कमाल की अदाकारा।
कम सनसनीदार खबर है ?
नही इससे अधिक सनसनीदार कोई और खबर हो सकती है ?
कब बम्बई चलेंगे ?
अभी ता एप्लाई भी नही किया।
मैं हस दी।
अच्छा अब आर नहा लीजिये।
पहले आप नहा लीजिये।
तुम नही जा रही ?
नही।
उस दिन मैं नहाने गई ही नही वैसे ही खाना खाने
बैठ गई।
सर्दी हो या गर्मी पापा बारह महीने दोनो
समय नहाते थे। दिन मे पचास बार हाथ धोते थे मैं अक्सर

फोन बीच म ही डिस्कनैक्ट हा गया
आज की डाक अभी आई नही थी मैं प्रतीक्षा मे अन्दर
बाहर घूम रही थी।
कल का पत्र ' I feel That my peace of mind
has remained behind you I do
not like to be disappointed in
the matter concerning you There
is nothing particular to talk about
but I am desirous of hearing your
voice It is an urnest and innocent
desire and it deserves to be
fullfield "

इगलिश के शब्द हो या हिन्दी के लेकिन जब य शब्द
मिलकर वाक्य रचना करते हैं, उनसे जो अर्थ बनते हैं
वह कैसे गहरे और अन्तमन को छ लेन वाले होते हैं
इसका परिचय सभी को नही हो सकता।
आपकी आवाज और वाक्य रचना सुनन को मैं कम
आतुर नही। महर्षि वैशम्पायन की भाति आप लिखे नही
बोले जाए और मैं सुनती रहू। आपकी आवाज मुझे
पवित्र मन्दिरो की घण्टियो के समान लगती जो जीवन मे
प्रेम और शान्ति ही देती है।
आपकी आवाज मेरी पूजा थी। सुन्दर काण्ड का पाठ था
सप्ताह म आपके दो फोन अवश्य आते थे और मेर
फोना की तो कोई गिनती ही नही थी। कभी कभी लगता
था कि ट्रककाल का बिल भरने के लिए ही मैं सर्विस
करती हू।
फिर भटक गई मैं।
इस पत्र मे तो ऐसा कुछ नही लिखा था।
मरा अवकाश उसी दिन स्वीकृत हा गया और दूसरे
दिन प्रात ही आकर जब काल बेल बजाई ता
Freedom at the midnight हाथ मे लिए आप
सामने खडे थे।
' बस किताब"
मैंने किताब साफ पर रख दी और आपसे लिपट
गई।

'आप इतनी जल्दी प्रगट हा जाएगी ऐसा तो
मैंन सोचा नही था।"
आपके मुख पर मुस्कराहट थी और मेरे मुख पर
जिज्ञासाए।
आओ एक कप चाय पियें पहल
मैंन पापा के पैर छूत हुए पूछा कि पहले यह
बताइय आपन बुलाया क्या ?
"अरे हा, अभी आया" कह कर आप अन्दर चले गये।
और मैं वहां सोफ पर पैर फैला कर बैठ गई।
"देखा" अखबार हाथ म लिए वह अन्दर स आये। "यह
दस तारीख का अखबार है। मीना कुमारी कमाल अमरोही
स तलाक लेने की सोच रही है। मैंन सोचा मैं अपना नम्बर
लगा दू लेकिन पहले अपनी बेटी स पूछना आवश्यक था।"
हम दोनो की हसी बहुत देर तक गूजती रही कितनी देर
तक हम दाना हसत रहे। फिर आपने ही पूछा, "क्यो मेरा
proposal पसन्द नही आया।"
अरे एकदम बढिया है पापा
देखी थी न interesting news !
एकदम
पापा को प्रिय अभिनेत्री थी मीना कुमारी, उसका सम्पूण
व्यक्तित्व आपको पसन्द था और दूसरी थी ग्रेटा गारबो।
दाना ही कमाल की अदाकारा।
कम सनसनीदार खबर है ?
नही इससे अधिक सनसनीदार कोई और खबर हो सकती है ?
कब बम्बई चलेंगे ?
अभी तो एप्लाई भी नही किया।
मैं हस दी।
अच्छा अब आप नहा लीजिये।
पहले आप नहा लीजिये।
तुम नही जा रही ?
नही।
उस दिन मैं नहाने गई ही नही वैसे ही खाना खाने
बैठ गई।
सर्दी हो या गर्मी पापा बारह महीने दोनो
समय नहाते थे। दिन मे पचास बार हाथ धोते थे मैं अक्सर

मजाक उडाती थी आप कितन गन्द हैं, क्या लग जाता है
आपके हाथो म जो बार बार आप हाथ धात हैं ?
दो दिन कहा व्यतीत हा गय,
पता ही नही लगा ।

□□

आपका पत्र,
वही पुरानी दिनचर्या
17 तारीख का पत्र
आह Russia जा रहे हैं और मैं तीन माह की छुट्टी का
आवदन पत्र दे दू। मेरे पाव ता धरती पर नही पड रहे थे
मैं जानती थी कि मेरा तीन माह का अवकाश नही स्वीकृत
किया जायेगा लेकिन रशिया जाना तो मैं किसी भी
मूल्य पर मिस करना नही चाहती थी। काण्डला डिमाड
काल लगाया वह भी नही लगा। मेरे बगल क सामन
ही सी० एम० मध्य प्रदेश का बगला था, उनके घर गई
फिर भी उस दिन कॉल नही हो सका।
अगले दिन अपने जिलाधीश से मिली और आपकी
तबियत का बहाना बनाकर एक सप्ताह का अवकाश
ले लिया।
मैं अब इन्दौर मे थी।
जिलाधीश इन्दौर के ऊपर आपके एहसान थे। म० प्र०
म अकाल पड रहा था। गेहू की अत्याधिक कमी हो
गई थी। वैगन मिल नही रही थी कुछ स्पेशल गेहू का
काटा गुजरात से म० प्र० के लिए स्वीकृत किया
गया था पर कुछ टेक्नीकल परेशानियो क
कारण अभी तक निर्यात प्रारम्भ नही किया गया
था। एक दिन वह बहुत परेशान थे अचानक मैं
पहुच गई मुझे देखत ही बोले "तुम्हार पापा तुम्ह
इतना प्यार करते हैं उनसे कह कर हमारी मूवमैंट
प्रारम्भ करा दो।"

हमारे लिए तो गर्व की बात थी कि हम अपने कलैक्टर
का काम आप से करा सक्ते हैं हम तो वैसे
ही आकाश गंगा में विचरते रहते थे। पापा
से उन्ही के आफिस से बात की।
तीसरे दिन आपका पत्र आया जो मैंने जिलाधीश महोदय
को दे दिया। As desired by you movement of wheat
to INDORE has been already commenced even
from Bhavnagar 80 wagons, i e about 1200 Tons
have been despatched remaining 1300 Tons from
Bhavnagar would be completed with in this week
There after balance of about 1150 Tons would also
start moving from Ahemedabad

आपका तो हमारे जिलाधीश ने धन्यवाद के पत्र लिखे थे
ट्रंककाल पर बात की लेकिन मेरे अवकाश लेने का रास्ता
अत्यन्त सरल हो गया था। अब हमे अवकाश की
स्वीकृति के लिए किसी की शरण स्वीकार नही
करनी पडती थी।
बाद मे मुझे पता लगा था कि आपने जो मूवमैंट दी
थी उसका मिलना अत्यन्त दुष्कर था। गुजरात से
म० प्र० को गेहू भेजा भी जाता या नही इसमे भी
शंका थी।
जिलाधीश आपसे मिलने स्वय आये थे।
उस दिन पजाब मेल बहुत लेट थी दौडकर
इन्दौर से जब मैं रतलाम पहुची तो पता लगा
कि पजाब मेल पाच घण्टे लेट है।
पाच घण्टे स्टेशन पर।
अहमदाबाद आते-आते सध्या दीप जल उठे थे लेकिन मन
प्रसन्न था कि आप आफिस से घर आ चुके होंगे।
घर पहुचते ही आपसे भेंट।

(6)

मेरी दृष्टि धरती पर ता रहती ही नही थी हालांकि

मुझसे आप अक्सर कहते थे जमीन पर दृष्टि गडा
कर मत चला करो उससे अच्छा है कि दूर-दूर तक
देखा पास देखकर अपनी स्वप्निल आखो और नाजुक कदमो को पीडा
पहुचाना ठीक नही ।
पापा को मेरी आखें बहुत प्यारी थी ।
पापा और मैं एअरोफ्लोत विमान से मास्को पहुचे
पापा यहा शासकीय अतिथि थे अत हमारे खान पीन
और ठहरने की उत्तम व्यवस्था थी । रूसियो के सम्बन्ध
मे मैं बहुत पढ चुकी थी रूसी साहित्य और रूसी भाषा
से भी परिचित थी । विमान परिचारिका जितनी घोषणाए
करती वह हिन्दी और रूसी दोनो भाषा मे होती थी । पता नहीं
कब आख लग गई । पापा ने जगाया तो मैं चौंक पडी
"हम मास्को आ गये ?"
मास्को का हवाई अड्डा बहुत बडा था मैं तो देखती ही
रह गई फाम वगैरह कम्पलीट करके जब हम बाहर निकले
तो शाम के चार बज रहे थे।
पापा आपने एक बात देखी ?
क्या ?
हम पचास कि० मी० से भी दूर आ गये पर रास्ते म अभी
तक एक भी पोस्टर या दीवारो पर लिखा हुआ कुछ नही
मिला ।
हा
हम जहा ठहरे थे । वह एक आलीशान बिल्डिंग थी सब
सुख सुविधाओ से पूण ।
पापा अब आप कहा जा रहे हैं ?
विदेश मत्रालय । जानती हो मनचली आजकल यहा विकट
अन्न सकट चल रहा है । पापा मुस्करा रहे थे ।
अच्छा हमारे इन्दौर की परेशानी यहा भी आ गई ।
तुम शाम को तैयार रहना मैं आफिस से आकर तुम्हे
शहर दिखान ले चलूगा ।
गोगोल चेखव गोर्की के बेटे, स्तालिन की बीबी
एव ख्रुश्चोव की समाधि के आस-पास मैं और
पापा बहुत देर तक घूमते रहे ।
पापा बहुत अच्छी रूसी भाषा जानते थे पर उस समय मेरे

लिए यह भाषा बहुत जटिल थी। पापा मेरे अनुवादक थे
पापा इस स्थान का नाम क्या है ?
नोवोदिविचिये पहले यहा मठ था, भिक्षुणिया रहती थी
लेकिन अब यह सावियत रूस के महान लेखको और
विचारको का समाधि स्थल है।
जानती हो ताशकद का अथ क्या होता है, पत्थरो का शहर।
यहा पर कपास बहुतायत मे उत्पन्न होती है इसके अलावा
चावल, गुलाबी तरबूज, खरबूजे और काराकुल के लिए
यह शहर प्रसिद्ध है।
काराकुल क्या होता है पापा ?
यह हमारे पशमीन की भाति होता है पर बहुत महगा
होता है, ताशकद को रूस का अहमदाबाद भी कह
सकते हैं।
बहुत देर तक हम घूमते रहे, जब वापस लौटे दस
बज चुके थे।
एक सप्ताह पापा बहुत व्यस्त रहे। मैं डा० पीच और
अलग्या के साथ घूमती रहती।
एक दिन जिद करके अलग्या मुझे अपनी नानी के घर
ले गई वहा इशा और शूबा नाम के पदाथ खाये बडा
स्वाद आया। वापिस आकर बहुत देर तक पापा को अलग्या
की नानी के घर के सम्बन्ध मे बताती रही।
कितन स्थानो की भीड, बसो ट्रेनो की भीड देख कर
यही लगता कि मैं अपने देश मे ही घूम रही हू।
एक दिन पापा शाम को चार बजे ही वापस आ गये
मुझे लगा कि आज वह बहुत प्रसन्न हैं। मैं डा० पीच
के पास जाने के लिए निकल ही रही थी। मैंन पापा
से पूछा, 'आज आप बहुत प्रसन्न हैं ?"
हा मनचली
मैंन सैण्डिल उतार दिये और आतिशदान के पास आकर
बैठ गई। उस समय धीमी जलती मोमबती जल कर पूण
रूपेण बुझ चुकी थी चारो ओर मोम ही मोम
बिखरा पडा था।
पापा ने पूछा, 'कही बाहर जा रही थी"
"जी हा डा० पीच के घर पर अब नहीं, उन्हे टेलीफोन
कर देती हू"

मैंने डा० पीच से कहा कि आज पापा जल्दी आ गये हैं।
अत: आज मैं आपका दिमाग चाटने नही आऊगी।
डा० पीच को दिमाग चाटना शब्द बहुत पसन्द आया
था अत मैं उनसे बात करते समय दो चार बार
तो अवश्य ही इस शब्द का प्रयोग करती।
हा पापा अब बताइये
मैंने प्रो० सुलेमानोव से बात कर ली तुम्हे यहा
विश्वविद्यालय मे प्रवेश मिल जायेगा।
मैंने आश्चय से पूछा लेकिन अपन लोग तो परसो
वापस जाने वाले हैं
मैं चला जाऊगा।
मैं अकेली रहू ?
अरे तुम्हे लेनिन विश्वविद्यालय मे प्रवेश मिल रहा
है यहा तुम्हारे भविष्य के लिए कितना स्कोप है अच्छा
नही लगे तो वापिस चली आना।
नही पापा।
क्या बच्चो जैसी बातें करती हो जानती हो मैंने
तुम्हारे लिए कितने प्रयत्न किए हैं।
दो दिन के उपरात डा० पीच और प्रो० सुलेमानोव
के हाथ मुझे सौंप कर पापा वापिस भारत के लिए
रवाना हो गये।
मास्को के हवाई अडडे पर उन्हे विदा करते समय मन
चीख-चीख कर कह रहा था मुझे यहा नही रहना
पापा ने अत्यन्त प्यार से मुझे अपनी बाहो म भर
लिया। मेरे माथे पर अपना चुम्बन अकित करते
हुए बोले "अपना ध्यान रखना।"
पापा अन्दर चले गये।
मैं डा० पीच के साथ वापिस आ गई।
मैंने हास्टल मे प्रवेश नही लिया मैं अलग्या को छोडना
नही चाहती थी अत उसके घर ही रहने का
निणय मैंने लिया।
उस रात मैं सो नही सकी। अलग्या और उसकी
वद्धा मा ने मेरा ध्यान बटाने का भरसक प्रयत्न
किया पर मैं चाहकर भी सामान्य नहीं हो पाई।

०००

अलग्या ने मुझे बताया कि मास्को आट थियेटर के
कलाकारा ने आजकल बडी धूम मचा रखी है
"नाटक देखने चलो" अलग्या ने वड प्यार से
मुझसे कहा वह मेरी मनोस्थिति स परिचित
थी अत वह चाहती थी कि मेरा मन इधर उधर
बटा रहे।
कौन सा नाटक है ?
अभिनान शाकुतलम्
अच्छा
अच्छा नही तुम्हें चलना है
मैं और अलग्या बडी कठिनाई से भीड को चीरते
हुए सस्कृति भवन पहुचे इस बीच कितने लोगो
ने अलग्या से पूछा आपक पास एक टिकिट है। एक
वृद्ध व्यक्ति न अलग्या का बडी दीनता स बताया कि
उसको टिकट उसके लिए नही अपनी प्यारी पौत्री के लिए
चाहिए।
कहा था मानवीय सम्बन्धो का अन्तराल एक दादा
अपनी पोती के लिए टिकिट खरीदने आया था कहा है
विभिन्नता भारत और रूस म
वैसे भी
बहुत सारे लोग बार बार आकर एक लडकी से एक ही
प्रश्न पूछ रहे थे "एक टिकट है आपके पास ?"
रूसी भाषा के कुछ शब्द मैं समझने लगी थी।
अलग्या ने मुस्करा कर पूछा, "क्या सोच रही हो ?"
मैं हस पडी, मैंने कहा, "मैं अलग्या मुझे पाब्लो नेरुदा
की एक पक्ति अनायास याद आ गई।
"क्या ?" अलग्या ने पूछा "I am convinced
that there will b mutual under standing
amongst human beings achieved inspite
of all the suffering the blood the
broken glass"

अलग्या हस पडी फिर धीरे म उस की नानी जो हमारे

पास ही बैठी ओशिए से टिवोड़ी बना रही थी बोली
मानवीय हृदय तो सभी स्थाना पर एक स हाते हैं
जी हा, नानी मा सबका रक्त लाल ही हाता है
"सब शब्द एक से होते हैं सब की अनुभूति एक सी होती
है सभी शब्दो का उच्चारण मुख स ही करत हैं फिर
शब्दा म अन्तराल कैसा, भावनाओ या अनुभूतियो म
अतर कैसा ?
हा अलग्या तोलस्ताय गाधी, रवीन्द्र के बौद्धिक स्तर
में क्या विभिन्नता है ?
हम लोग बातें कर ही रहे थे कि डा० पीच आ गए। उन्हान
कहा "बौद्धिकता अधिक तक उत्पन्न करती है"
' हा ' मैंने उत्तर दिया, ' बौद्धिका के तक म समानता
शायद न हो पर विभिन्नता नही हाती।"
डा० पीच जोर से हस पड, उन्होंने कहा
' जानती हो मनचली भूदास प्रथा क दिना म ही
तोलस्तोय एक महान कलाकार के रूप म असाधारण यश
पा चुक थे उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा जीवान्त प्रश्ना को उठाया था
इसीलिए उनकी कृतियो न विश्व साहित्य मे श्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया
उनका देश उस समय सामन्ती जुए क तले सिसक रहा था
वह विकास क अग्रिम रूप म सामन आए हालाकि उस
श्रेष्ठ साहित्य को बहुत कम लोग जानत थे। लकिन उस समय भी उनक
साहित्य को घर घर पहुचाने के लिए लोग कटिबद्ध थे
और तभी क्रान्ति का जन्म हुआ और देश न करवट
बदली। वह सवहारा कहलाए।
"आप ठीक कहत हैं डा० पीच हमारे यहा रवीन्द्र ने भी गीताजलि लिखकर
साहित्य को उत्कृष्ट मोड दिया। कालिदास क उपरात
पुन एक निष्णान्त साहित्यिक धरा पर आया और
गीताजलि जैसा ममज्ञ, तत्त्व चिन्तन एव दशन का समन्वय उसने
एक साथ किया। इन्द्रधनुष के सतरगी रगो से लेकर, विश्व
प्रकृति एव ब्रह्म का जो वणन रवीन्द्र कर सक वह सम्भवत
कोई लेखक आज तक नही कर सका इसीलिए वह
महामानव कहलाते हैं।
उसी समय रोदिओन मेफादियेविच का टेलीफोन
आ गया। प्रो० रोदिओन मेफोदियेविच भी डा० पीच
की भाति दशन शास्त्र के प्रोफेसर थे, तथा डा० पीच

के अभिन्न मित्र ।
डा० पीच ने बताया कि वह उनके घर बठे हैं और
उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं उन्होने मुझसे और अलग्या से
भी अपने घर चलने का अनुरोध किया ।
वहा जाकर पता लगा कि प्रो० रोदिओन मेफोदियेविच मात्र
दशन शास्त्र के प्रोफेसर ही नही एक सवेदनशील कवि
भी हैं। मयाकोव्स्की की कविता को वह श्रेष्ठ कविता
मानते थे बाकी सब बेकार
उनका लाल मुह और उस पर दमदमाती श्वेत द त पक्ति
मैं आज तक नही भूल पाई।
डा० पीच के घर मैं पहली बार ही आई थी यहा
आने के उपरात पता लगा कि उनके पिता उनसे अत्याधिक
रुष्ट हैं वह उन्हे भूमि का इजीनियर बनाना चाहते थे
और डा० पीच करने लगे कविता। बन गये दशन शास्त्र
के प्रोफेसर। मैं उनकी बातें बडी लगन से सुन रही
थी तभी डा० पीच न धीरे से कहा,
"शाश्वत सघष, शान्ति के हमने केवल सपने दखे है।
जानती हो इसके रचियता हैं ब्लोक।"
मैं मुस्करा दी
पिता श्री की डाट के उपरान्त भी वह ब्लाक की चर्चा करते
हैं।
डा० पीच एकदम मेरे पास आ गए और बोले, "मनचली
तुमने रशियन मूवी देखी है ?
जी हा, अनना कैरेनिना देखी थी उसमे मेरी
प्रिय अभिनेत्री ग्रेटा गार्बो काम कर रही थी
तुमने कौन-सी किताब पढी ?
प्रश्न बेतुका सा था मूवी की बात से एकदम साहित्य पर
मैं पुन धीरे से मुस्करा दी फिर बोली "जी हा लेनिन और
गाधी पढी है अलैक्जैंडर शिफ्यान की "टालस्टाय
और भारत" भी पढी है।
अचानक मेरी दृष्टि सामने की दीवार पर लगी घडी पर गई
"अरे नौ बजने वाले हैं अब घर चलना चाहिए'
दो-तीन दिन के उपरात मैं और अलग्या लेनिनग्राद गए।
लेनिन की समाधि पर फूल चढान वाला का लम्बा क्यू
लगा था।

लाल मैदान म यह लाल पत्थरो का बडा ही भव्य एव
गम्भीर स्थल है जिसने मेरा मन मोह लिया। मैं कितनी
देर तक वहा बैठी उस समाधि को निहारती रही। विश्व के
जा माने समाजवादियो के लिए यह एक महान तीर्थ स्थान
है। एकदम मध्य मे एक आकर्षक काच की पेटी मे
युग निर्माता लेनिन का शव रखा हुआ है मानो
थक कर कुछ क्षणो के लिए वह विश्राम कर रह हा। अभी
जग जायेंगे युग पुरुषो के समाधि स्थल
भी कितने प्रेरणादायक होते हैं और रूस म तो
बडे ही व्यवस्थित रूप म महान लोगो के भौतिक शरीर को
सदा के लिए सुरक्षित कर दिया है।
एक क्षण के लिए मन म आया कि काश हमारे
देश म भी ऐसे ही भव्य समाधि स्थल बनाये जात
इसके उपरात लेनिन लायब्रेरी देखी। कहा जाता है यहा
विश्व का सबसे बडा ग्रन्थालय है इसके अन्तगत दो करोड
से अधिक पुस्तकें हैं।
वहा स हम मैट्रो से मास्को वापस आए। बम्बई
लोकल की भाति वहा भी बिजली की रेलें चलती हैं।
लकिन हमारे देश की भाति धक्का मुक्की नहीं होती
बडी अनुशासित भीड होती है। साफ सुथरे रेलवे स्टशन
चमचम चमकते सगमरमर के फश मानो दूधिया चादनी
बिखरी पडी हो।
वहा से निकल कर हमन दस्तोव्स्की म्यूजियम देखा
कैथेड्रल देखा, पुश्किन म्यूजियम देखा। कहते हैं जब पुश्किन
शादी के उपरात अपनी पत्नी को शैम्पेन आफर कर रहे थे उस समय
शैम्पेन छनक गई थी।
अलग्या ने बताया, "जानती हो मनचली हमारे यहा इसे
अपशकुन मानते हैं।'
मैं चौंक गई।
' अलग्या यहा भी अन्धविश्वास।"
मानव मन सब एक से हैं। मेरे अन्तर मे आवाज आई।
अलग्या आगे बता रही थी, 'बेचारे पुश्किन अडतीस वष
की उम्र म ही चल बसे वाल्तेयर का एक स्केच उनकी
कविताये कुछ रुक कर अलग्या ने
कहा, "यह वही कपडे हैं मनचली जिसको पुश्किन गोली

लगते समय पहने हुए थे उन्होंने अपनी पत्नी के चरित्र
पर सदेह किया था और उस व्यक्ति को द्वन्द्व युद्ध
के लिए ललकारा था और उसी में उनके प्राणों का
अन्त हो गया।"
अलग्या ने मुझे पुश्किन ग्राम भी बताया। कई कला
संग्रहालय देखें।
हम लौट आए।
मन नहीं लग रहा था इतना घूमने, देखने के उपरान्त
भी मन दौड कर पापा के पास पहुच जाता था।
अभी दस दिन ही हुए थे पापा को गए और मुझे
प्रतीत होता था मानो वर्षों हो गये। कभी-कभी तो
मुझे लगता कि अगर मैं दौड कर उनके पास नहीं
पहुच गई तो मेरा दम घुट जाएगा। मुझे अपनी
धडकनों का स्पन्दन ध्यान पूर्वक सुनना पडता।
अलग्या उसकी मामा उसकी नानी डा० पीच इन
सभी के सम्मुख मैं अपने को सामान्य रखने का
प्रयत्न करती लेकिन मेरे नेत्र सदा डबडबाए रहते मानो
वर्षा ऋतु के बादल हो अब बरसे तब बरसें। वास्तविकता
तो यह थी मेरी आखें सदा पलकों से अनुनय करती
रहतीं टपकना नहीं।
मुझे कुछ अच्छा नहीं लगता था।
आज पापा का पहला पत्र मिला। उनकी एक पंक्ति को
मैंने सौ से अधिक बार पढा। I hed left
behind my sleep with you, I came here leaving
my self behind you

मैंने उस रात पापा को बहुत लम्बा पत्र लिखा।
पन्द्रह दिन हो गए
मुझे लेनिनग्राद विश्वविद्यालय मे प्रवेश मिल गया
था।
पापा का टेलीफोन आया।
ओफ, मुझे मानो स्वर्ग मिल गया एक महीना आठ
दिन के उपरान्त पापा की आवाज सुनी थी। शाम की
डाक से पापा का पत्र मिला। I got your letter yesterday
your letter is very sweet and full of
understanding ! wish you always write to

me such letters Please be careful about
your health and always remember that I do
not forget you for a minute even

उस रात सो नही सकी । जाग्रत अवस्था म रात भर पापा
के स्वप्न देखती रही ।
"हैलो लिटिल एंजिल"
मुझे एक महीना हो गया था विश्वविद्यालय जाते हुए ।
डा० सोजनैतकोविसा, पता नही क्या मेरा सीमा मे अधिक
ध्यान रखते थे । पिछले एक माह मे उन्होंने चालीस बार
मेरी आखो के आसुओ को पढा होगा, कभी कभी उनका
उतना चिन्तित होना मुझे बहुत अच्छा लगता और कभी
लगता कि उनकी दो आखें हर पल मेरा पीछा करती
रहती हैं तो मैं घबरा भी जाती ।
मेरी पलको म बस हुए आसुओ की व्यथा को उन्होन
बडी सूक्ष्मता से पढा था पर जितनी अच्छी उनकी
बातें लगती उतनी ही पैनी लगती थी उनकी दृष्टि । कभी-
कभी तो ऐसा हो जाता था कि मैं उनसे दृष्टि
भी नही मिला पाती थी ।
और अचानक एक दिन मुझे लगा कि उनके पास मात्र
पुरुष की दृष्टि है
उस दिन मैं खूब रोई ।
बात बहुत छोटी सी थी उन्होंने मेरा हाथ पकड कर कहा
था "मनचली । I love you'
मेरे तो आसू रुकने का नाम ही नही लेते थे
डा० पीच न कितना मुझे समझाया
मलग्या दोस्त थी न मेरी उसने तो यहा तक कह दिया
कि 'मैं पागल हो गयी हू"
मैंने मुह फेर लिया, हा मैं पागल हो गई हू ।"
अभी तीन महीने समाप्त होने म आठ दिन बाकी हैं मैं वापस
चली जाऊगी । नही रहना यहा मुझे ।
' लिटिल एंजल तुम वापिस जाना चाहती हो ?"
सामने प्रा० सोजनैतकोविसा खडे थ ।
बडा साहस जुटाकर मैंने कहा, मेरा मन नही लगता '
' तुम झूठ बोलती हो '

मैं काप गई।
"झूठ के पैर लम्बे नही होते, एक बात याद रखना
मनचली I really like you I love you"
मैं कुछ बोलू या उनकी ओर देखू जब तक वह
जा चुके थे।
उस दिन तो नही समझ पाई थी लेकिन अब जरूर
सोचती हू प्यार के रूप भारत म ही नही विदेशो मे
भी है फिर वही बात मानवीय सम्बधो म अन्तराल
कहा ? कितने वष व्यतीत हो गए आज भी उनके ग्रीटिंग्स
आते ह। मैं नही भेज पाती। पता नही क्यो ?
दूसरे दिन जब मैं विश्वविद्यालय पहुची डा० सुलेमानोव सामने
मिल गए।
मैं तुम्हे ही तलाश कर रहा था
"कहिए सर"
"मैंने सुना है कि तुम वापस जा रही हो जानती हो, तुम्हारे
फादर ने इस विश्वविद्यालय मे तुम्ह प्रवेश दिलाने
के लिए कितने प्रयत्न किए हैं। तुम्हें तो गौरव होना
चाहिए।"
बडा साहस जुटाकर मैंने कहा, "मेरा मन नही लगता"
क्या पागल जसा प्रलाप करती हो ?
मैंने सिर झुका दिया।
उस दिन डा० सुलमानोव मुझे अपने घर ले गए। उनकी
पत्नी सोजानोवा बडी प्यारी महिला थी।
बहुत देर तक लेनिनग्राद के सम्बध मे बातें होती रही
उहोने बताया कि लेनिनग्राद का पुराना नाम पत्रोग्राद
था लेनिन की स्मृति मे इसका नाम लेनिनग्राद
रखा गया। विश्वविद्यालय के सम्बध मे ढेर सारी
बातें होती रही। बहुत समझाया उहोंने पर ,
वास्तव मे उनकी हृदय से आभारी हू।
आज भी नियमित उनके पत्र आते हैं जो मुझे
पल-पल शिक्षा देते रहते हैं "जीवन की सबसे बडी
आवश्यकता है इन्सान बनना।"

oooo

आज जब सोचती हू तो लगता है जीवन कितनी
करवटें बदलता है ।
इ सान मात्र नियति के सहारे चलता है ।
इसीलिए शायद इतिहास की याख्या बदलती रहती है ।
नियति का बोध आज भी मानव को आबद्ध किए है । मन
से जब मन का बिलगाव होता है तब क्या उसे सहजता
से स्वीकारा जा सकता है ? मन और आत्मा भी
विभक्त हो जाते हैं । उदारता, स्नेह, त्याग सब निरथक
शब्द लगते हैं क्या यही परम्परा है ?
इतिहास देश समाज सभी की व्याख्याए बदलती हैं
लेकिन परम्परा वह ता स्थिर है उसकी व्याख्या
नही बदलती । जो बीत गया वह भूलने योग्य नही
इसीलिए शायद हम उस इतिहास की सज्ञा देते हैं ।
लेकिन इतिहास प्रतिशोध का भी ता नाम है मैं
किससे प्रतिशोध लू व्यक्तिगत इतिहास भी
तो लिखे जाते हैं सुरक्षित रखे जाते हैं
मैं किससे प्रतिशाध लू ? अपना इतिहास स्मरण
रख के नियति से ?
महाभारत के अ तगत मृत्यु के तीन रूप चित्रित किए
गए हैं पहला है अर्जुन, अर्जुन को मृत्यु का भय
न होता तो गीता न होती । दूसरा धतराष्ट्र, महाविनाश
के उपरान्त, यह कहने वाला पात्र, मोह माया को छोड
दो, मनुष्य तो मात्र कच्ची मिटटी का बर्तन है । तीसरा
युधिष्ठिर मेरे कारण इतना विनाश आत्मग्लानि
से पीडित ।
मेरे पास तो तीना म से एक भी रूप नही
है । तो क्या मैं आत्महत्या को प्रस्तुत हू,
आत्महत्या पाप है
पाप है या डरपोक हू
यह कैसी मन स्थिति है मरी है कोई जा मेरे तपत
हृदय का शान्ति दे सके ?
कैसे अनगल विचार आते रहते हैं मेरे मस्तिष्क मे ?

क्या शोषित और शोषक के बीच समता हो सकती है
नियति और मैं शापित और शोषक ही तो हैं।
मैं यहा नही रहूगी।
मैं कुछ सोचूगी भी नही।
जब प्लेन मास्को स उड गया, मुझे लेकर तब मैंन
शान्ति की सास ली। मानो कैद मे मुक्त हो गई।
ओफ!
मैं प्रत्येक माह पापा के पास नही पहुच सकती, इस
विचार न मुझे मानसिक ही नही शारीरिक रूप से भी
एकदम तोड दिया था। बम्बई उतरते ही मैंने अपना वजन
ताला तीन माह सत्तरह दिन म मैं दस पाउण्ड वजन
खो चुकी थी।
ऐरोड्रम से जब बाहर निकली तो पहला विचार मन
मे कौंधा, पापा बहुत नाराज़ होगे। नाराज नही भी
हुए ता दु खी तो अवश्य ही हागे मुझे ऐसे पढाई
छोटकर बिना उनसे पूछे वापिस नही आना चाहिए
था। जीवन मे पहली बार बहुत बडी बवकूफी करी।
लेकिन कर चुकी थी अब उसको सुधारना मरे वश
मे नही था।
काण्डला के प्लेन म अभी चार घण्टे का समय
था। मैं सीधे क्राफ्ट मार्किट गई और वहा से एक
सिलासिलाया बुरका खरीदा।
जानती थी यह सब पागलपन है
पौन नौ बजे मैंने काल बेल पर डरते डरते हाथ
रखा। वास्तव मे दिसम्बर के महीन मे भी
मैं सम्पूर्ण रूप से पसीन म तर बतर थी। मर
दिल की धडकन जेट प्लेन से भी अधिक रफ्तार
मे दौड रही थी। मैं समझ ही नही पा रही
थी कि पापा मेरे साथ कैसा व्यवहार करेंगे? मुझे
आन से पूव कम से कम फोन पर ता उनसे बात
करनी चाहिए थी।
दरवाजा खुला।
मैं पापा की बांहो मे थी।
बुरका उतारते हुए मैंन पूछा कि आपन कैसे पहचान लिया
कि मैं हो सकती हू।

पापा मुस्करा दिए ।
मैंन आफिस स 6 माह का अवकाश लिया था अभी
तीन माह बाकी थे न पापा न कहा कि तुम ज्वाइन कर लो
न मैंने ही सोचा ।

(7)

' आप थाडी सिगरट कम कर दीजिए"
पापा चेन स्माकर थे दिन भर म सौ सिगरेट पीत थे
' क्या ?" उनकी दृष्टि मर मुख पर जम गई ।
"आप जितनी सिगरट पीत हैं उतन म मेरी चार
साडिया तो प्रतिमाह आ ही सकती हैं '
पापा न सिगरेट का गहरा कश खीचा और धीर
से बाले, ' आपके पास कितनी धोतिया हैं ?"
"तीन सौ तो होगी ही"
उन्होने एक पल के लिए घूर कर मुझे देखा फिर
धीरे मे मुस्कराए ।
'इसमे मुस्कराने की क्या बात है ?"
पापा बाले "सुना तुम्ह आज एक किस्सा बताता हू"
मैं छाट बच्चे की भाति चिहुक पडी, 'सुनाइये"
"एक गाव म दो बडे गहरे दास्त रहते थे, एक दिन
एक दोस्त अपन दास्त से बाला मैं तो गाव के
इस जीवन स तग आ गया हू अब चाहता हू
कि शहर म जाकर कुछ कारोबार करू ।
फिर वर्षों व्यतीत हो गये ।
गाव म जा दास्त रहता था उसन सोचा क्या न चल कर
अपन दास्त की खोज खबर ली जाए । यह सोचकर
वह बेचारा शहर मे आया । दोस्त बडे प्यार से मिला
स्टेशन से वह सीधे उसे अपन आफिस ले गया ।
आफिस जाते ही वह काम मे व्यस्त हो गया । बेचारा
दोस्त बडी देर तक चुपचाप बैठा उसको देखता रहा
उसको खुशी हुई कि उसका दोस्त कितना काम करता

है लेकिन उस बडा दुख हुआ कि उसका दोस्त
दनादन सिगरेट पिये जा रहा है आखिर उस बेचारे
से नही रहा गया उसन पूछा, "यार कितनी
सिगरेट राज पीते हो ?"
"चालीस पचास"
"कितन की आती है ?"
"पचहत्तर रुपय की"
"कब से पीते हो ?"
"बीस वष स अधिक हो गये"
"बाप रे बाप" वह कुर्सी से खडा हो गया सामने
एक बडी खिडकी थी वहा से बहुमजिली
बिल्डिगें स्पष्ट दिखाई देती थी। वह खिडकी के पास
जाकर खडा हो गया। धीरे से बोला, "जानत हो
सामन ये छह मल्टी स्टोरी बिल्डिगें हैं, अगर तुम सिगरेट
नही पीते तो इनम से दो तो तुम्हारी अवश्य हाती।"
दास्त जोर से हसा अपनी कुर्सी स उठकर उसके
पास आया उसके कधे पर हाथ रख कर बोला
"मेरे दोस्त ये सामने दिखन वाली दो नही छहो
बिल्डिगें मेरी हैं। इतनी सिगरेट पीन क बाद"
पापा मुस्करा रहे थे।
और मैं अपलक उन्हे निहार रही थी।
मुझ अपन विभाग से आदेश मिला कि मेरा
Posting रायपुर हो गया है।
पापा का Posting कलकत्ता हो गया दो माह के लिए
उन्हें कलकत्ता जाना था मैंन सोचा चलो मैं भी
पापा के साथ ही रायपुर चली जाऊगी। अत मैंने
पापा से कहा कि आप मुझे रायपुर छोड दीजिए।
इतना अवश्य हुआ कि इन छ महीनो के अवकाश
मे मैंन एम० ए० (अथशास्त्र) की परीक्षा दे दी थी
और अब मैं कम से कम पापा पर तो अपना रौब
झाड ही लेती थी कि मैं तीन विषयो मे एम० ए०
कर चुकी हू।
रायपुर के डिवीजनल आफिसर ने पहले मे ही मेरे लिए मकान
ढूढ कर रखा था अत वहा परेशानी नही हुई
पापा तीन दिन मेरे साथ रहे।

' पापा इस डिवीजन मे तो कुछ काम ही नही है
यहा जी कम लगगा ?"
' मनचली मेरी एक बात मानोगी"
"जरूर
"तुम बहुत अच्छा लिखती हा । इतना अच्छा घर ।
और इतना अधिक समय है तुम्हारे पास म चाहता
हू कि तुम खूब अच्छा लिखो ।"
"हू"
"कम से कम इतना ता कहना मानो मेरा"
' अच्छा पापा, मैं एक उपन्यास प्रारम्भ करूगी"
'सच ? प्रोमिस करती हा"
"प्रोमिस
'मुझ हर खत म लिखना कि रोज कितन पृष्ठ
लिखती हो ।
"जरूर लिखूगी'
"टालना नही"
'जी नही मैंन प्रोमिस दिया है आपको"
कलकत्ता पहुचन पर पापा का पहला पत्र मुझ
मिला ।

'While I was at Raipur you had agreed to take up
writing your first novel I hope you have
already started it In absence of your letter
I am not aware about the way in which
your days are passing you have a talent in
writing and by not giving a scope you
are doing in justice to your self I assure
you that you would succeed if you
permit yourself to take the trouble of
writing It is one of my ambition to
see your books in print You will make
name and fame Hindi language also
needs good writers You can serve
the nations language by writing I
know the force of your writing and

i e why I am persuding you to make a try Ouce you start the things will develop itself in a real shape You can rely on the realities of life to give you sufficient rich materials From your books many girls may learn how to make some sense out of the ordinary life in the grip of which many are living Suffocating existence Life is some thing that ties between bir th and death For everybody begining and end are commn but in between two ends nothing is common I am not a writer but you are capable of understanding what I am intendeng to convey to you '

इससे बडा गुरु और उपदेशक मेरा कौन हो सकता है ?
जिस विश्वास से पापा ने मुझे पत्र लिखा, क्या मैं
उस विश्वास को सुरक्षित रख सकूगी ?
प्रयत्न तो अवश्य करूगी ।
पापा कहते हैं सदा मनुष्य को पूरी ईमानदारी के
साथ काय करते रहना चाहिए । फल मागने की वस्तु
नही है वह स्वय प्राप्त हो जाता है ।
मैंने लिखना प्रारम्भ कर दिया ।
पत्र पापा को मैं रोज लिखती थी लेकिन मैंने अपना
उपन्यास प्रारम्भ कर दिया है, यह किसी पत्र म नही
लिखा । मैं उनको Surprise देना चाहती थी
बीस या पच्चीस दिन के उपरान्त, पापा का पत्र—

' In your letters you have not mentioend whether you are trying to write something as was suggested by me My dear you should not waste your talent. You are always anxious to fullfill my desire Why do you not pay attention to my wish of making you an authress of hindi books

unless you give yourself a fair trial you will not
have done justice to your education and talent'

कौन मुझे प्यार करेगा ?
कौन मुझे इतना समझाएगा ?
आज
कोइ नही।
जीना, आज आकाक्षा नही लाचारी है।
पापा आज आप नहो हैं। मैं नही जानती कि मैं
लेखिका हू या नही लेकिन मेरी सोलह पुस्तकें प्रकाशित
हो चुकी हैं। रूसी, तलगू, तमिल, मराठी म
अनुवादित हो चुकी हैं।
काश ? आज आप होते ?
है कोई ऐसा स्थान जहा आकर मैं आपका अपनी
व्यथा दिखा सकू ?

☐
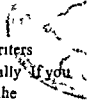
पत्र के उत्तर म मैंने अपनी पाण्डुलिपि के कुछ पष्ठ
भेज दिए।
उत्तम समीक्षक की समीक्षा
इतनी उत्तम समीक्षा आज तक नही मिली।

'I have been reading your pages I think you
are trying to explain too much in too a few words
Your language is excellent but the impression are not
impersonal It would be lamentable arrow to expect
each and every charcter in the novel to speak
in the same style In the portion I have so far
read very wide scope have been left for the
reader imagine things and probabilities It is
my humble view that hindi reader has yet to
reach that stage of understanding, which would

unable him to fill up the gaps left by writers perhaps Even intentionaly and artistically If you intend to do an honest effort to write the story which I have told you then you have to tell in the manner it had happened At least the formation should be same so that inconsisten cies may not invade the narration unless you forget yourself it would be difficult for you to write realistically about the manner, behaviour and reaction of other character I am not critising or belitting your efforts There is too much in your mind and your thoughts that you want to come out you are not going to write only one book and therefore you should sharing and spend jewels of your experience Do not display all the jewels at a time The real life is entwines by an endless chain of human failure, hope ambition cruelities, love affection and various combination of emotions Let all this have their due share in your novel rather than allowing high principles to prodominate in every page I know the importance of high principles and need of preaching them but I would feel ex tremely unhappy and so would feel many readers If you sacrifice reality for propagating principles If you permit me I would not hesitate to say that context of pr sent day complexities of human life principle have become unatainable absurdities As long as human mind is not all bad The basic principles will not have only fair but also ample chance to survive even if they get surrounded by drastic realities of human endevours I hope you would not mis understand me

मैंने वे पृष्ठ फाड डाले।

नए सिरे से लिखना प्रारम्भ किया
बार-बार लिखती रही
कौन मेरा ऐसा क्रिटिक होगा ?
किस को आवश्यकता है इस प्रकार की आलोचना करने
की।
कहा मिलगा आप जैसा आलोचक ?
कहा मिलगा आप जैसा पाठक ?
आज भी लिखते समय बार-बार कलम आकर कही
ठहर जाती है।
मुस्कराते हुए आप सामने आ जाते है ?
साथ मे,
अनायास आ जाती हैं,
आपक पत्रा की पक्तिया।
फिर भी।
बहुत से प्रश्न अनुत्तरित रह जाते हैं, बहुत-सी
समस्याओ का समाधान नही हो पाता।
कलम लगातार चलन के उपरान्त निष्पक्ष न्याय करन
वाला कोई नही।
कभी कभी तो लगता है यथार्थ हो नही।
फिर,
सिद्धान्त कहा ?
एक दिन आपन कहा था, "कालिदास सस्कृति हैं तो शेक्सपीयर प्रगति"
फिर आप कहा ?

(8)

पापा आपका जीवन बस पढना और सिगरेट
पीना" मैंन हाथ म से किताब लेत कहा।
"बहुत अच्छी किताब है"
"समाजवाद" मैं मुस्करा दी 'कोई अर्थ है इन
सब बातो का ? मैंन भी आज दोपहर म इसक कुछ
पृष्ठ पढ़े थे।"

"अच्छी नही लगी"
"आप समझते हैं कि बुद्धिजीवी लाग पूजीपतियो तथा पूजीवादी
राज्य की सेवा करन के अभ्यस्त हैं ?"
'नहो आज शिक्षित लोग श्रमजीवी जनता के पक्ष मे आने
लगे हैं। पूजी द्वारा खरीद गुलामो के प्रतिरोध का भग कर रहे हैं।
वे महान प्राणवान एव सजनात्मक कार्यों की
ओर बढने लगे हैं। जानती हो आज स्वय अपनी
शक्तियो के बल पर यह लोग समाजवादी निर्माण का
कार्य पूरा करने मे जुट गये हैं। लेकिन इसके उपरात
भी उनके हृदय मे कही हीन भावना है और यह
स्वाभाविक भी है। कोई भी क्राति या कोई भी वाद एक
झटके मे इन गुणा का निस्तार नही कर सकते। जो
जीवन भर तगी और भूख के कारण काम करन के लिए
विवश थे उनसे आज कहा जाए तुम्ह भरपेट राटी और
आराम मिलेगा ता उन्ह यकीन कैसे आएगा।
"अच्छा एक बात समझाइये। इन नव क्रान्तियो के द्वारा कभी स्त्री
को मुक्ति मिलेगी पापा ?"
"जरूर, लेकिन महत्व इस बात का है कि तुम मुक्ति किसे
कहती हो। स्त्रियो की असमानता समाप्त कर दी गई है
उनके निर्माण के लिए जमीन साफ और चौरस कर दी है
लेकिन निर्माण काय तो स्वय स्त्री को करना है।'
'आपको ऐसा नही लगता कि इस स्वतन्त्रता के उपरात
भी वह घर की दासी बनी हुई है। घर के काम का
उसे मतिमूढ बनाता है उसका सामाजिक स्टेटस ? कम
करता है, रसोई घर और बच्चो का पालन-पोषण के
काम से उसे अवकाश ही नही मिलता वह मात्र कोल्हू के
बैल की भाति चक्की म लगी रहती है और यह बोझ उसकी कमर तोड देते
हैं, उसका दम घोट देते हैं। और इसे
आप मुक्ति कहते हैं। किसी सभ्य समाज की सभ्यता म
इन सस्कारो का सम्मिश्रण किया जा सकता है ?
ऐसे पुरुष प्रधान समाज का तो मुह भी नही देखना चाहिए।"
पापा एक पल तक मेरा मुह दखत रहे और फिर बाले,
'My dear child all tolerances have limit
What would you have been telling in the name
of women libratrion and civilization I would
pray god to save ind an girls for them Please

conduct yourself well so that I have peace of mind"

वह उठकर बाहर टहलने चले गये।
मैं अवाक उनको बाहर जाते हुए देखती रही, क्यों क्या कुछ नहीं नहीं बहुत कुछ गलत कह दिया
मैंने शायद बोलने के जोश म मैं भूल गई कि मैं स्त्रियो मे बैठकर मात्र कोरे आदश की बातें नही कर रही और न ही पुरुषो के मध्य बैठ कर नारी मुक्ति आन्दोलन का जिहाद जगा रही हू। मैं अपने पापा से बात कर रही हू जिन्होने पुरुष होकर मुझे भरपूर प्यार दिया है जिन्होन अपनी उगली पकड कर मुझ सस्कारो के बीच चलना सिखाया है जिन्होने अपनी गोद म बैठा कर नारी का आदश सिखाया है उसकी महानता बताई है।
उनके सामने मुह खोलने का साहस उस दिन तो मैं नही जुटा पाई।
बस दो दिन और अवकाश के शेष थे फिर मुझे चल जाना है। घर से जाना मुझे कभी अच्छा नही लगता। मेरी इतनी उखाड-पछाड के बाद भी पापा मुझ से कभी नही कहते कि तू त्याग पत्र दे दे। मै हर बार आतुर रहती। एक बार तो पापा कहें।
लेकिन।
वह, इस सम्बन्ध मे सदा मौन।
'आप चाय पिएगे?' पापा बाहर बगीचे म बैठे थे। उन्हे गुलाब और लिली के फूल बहुत पसन्द थे।
वह कहा कहा से गुलाब मगवाते थे सत्रह कलर के गुलाब हमारे बगीचे मे थे।
आज मुझे गुलाब स घृणा हो गई। गुलाब की गन्ध म आज भी अनुभव करती हू। उसका स्पश पर उसमे न पापा की गन्ध है न उनका स्पश। गुलाब के काटो की भाति गुलाब के विहसते फूल मेरे हृदय को टीस या पीडा स अधिक कुछ नही दे पाते।
मैंने सारे गुलाब के पौधो को जड स उखाड कर फेंक दिया। जीवन भर पापा की याद के काटे को ही सुरक्षित रखना है तो उस पूणरूपेण सुरक्षित रखूगी

सारे बगीचे मे कैक्टस लगा दिए। अब चूमन के लिए प्यारे से लाल गुलाब का काटा नही होगा। विभिन्न जाति के कैक्टस हैं अत विभिन्न जाति के काटे सतत चूमते रहगे।

अरे फिर खो गई।

उनके स्वभाव के अनुसार उनके हाथ मे किताब थी। अपने स्वभाव के अनुसार मैंने उनके हाथ से किताब ले ली। किताब खोल कर देखी कोई धार्मिक सस्कृत की पुस्तक थी।

पन्ने पलटते हुए मैंने पूछा, "पापा, महाभारत मे वर्णित वैष्णव धम का प्रचार बौद्ध धम से पूव हो चुका था। न?

पापा ने चश्मा उतारते हुए कहा, "हा, भक्ति धम का उदय तो पहले ही हो चुका था किन्तु उसे निश्चित स्वरूप श्रीकृष्ण के अर्जुन को गीता के उपदेश देन के पश्चात ही प्राप्त हुआ। श्रीकृष्ण की पूजा का प्रचलन ईसा पूव पाचवी शताब्दी से हो चुका था।"

"अच्छा पचरात्रि का सिद्धान्त क्या है?"

"वैष्णव धम की सर्वाधिक प्राचीन सज्ञान पचरात्रि है पचरात्रि का प्रसिद्ध सिद्धान्त चतुर्व्यूह है। पचरात्रि ही सात्वत मत कहलाता है। सात्वत वे क्षत्रिय थे जो यादव वश के थे। श्रीकृष्ण का जन्म इसी कुल मे हुआ था। महाभारत के आदि पव मे भी सात्वतो का उल्लेख किया गया है तथा वासुदव को ही सात्वत कहा गया है। द्वितीय शती मे मात्र भारतीय ही नही बल्कि जो विदेशी यहा बस गये वे भी वासुदेव की भक्ति करने लग थे। हेलि ओडोरस ने वासुदेव के सम्मान मे गरुड स्तम्भ बनवाया था।"

"अच्छा पापा, श्रीमद्भगवद्गीता को वेदो से अलग क्या माना जाता है?"

"वेदो का उपबृहण इतिहास तथा पुराण से होता है अत रामायण महाभारत तथा पुराण भी प्रमाण माने जात हैं ये सब वदो के व्याख्या ग्रन्थ हैं श्रीमदभगवदगीता के श्रीकृष्ण ने उसका उपदश अर्जुन को उसके अधिकार के अनुरूप स्मृनि रूप म

दिया था। स्मृति रूप म लिखे होने क कारण
श्रीमदभगवदगीता का वेदा से अलग माना जाता है।"
'पापा वल्लभाचाय को भी तो पुरषोत्तम कृष्ण का अवतार
माना गया है।'
"हा कहते हैं कि वल्लभाचाय की माता न काशी से
चौडानगर जाते समय इन्ह जन्म दिया था। बच्चे का
मृतक समझ कर माता पिता जगल म छोड कर चौडानगर
चल गये। कुछ समय क उपरान्त उसी जगल क रास्त
से जब यह लोग काशी वापिस आ रह थ तो उन्होंने
देखा कि जिस स्थान पर वह बालक का छोड कर गय
थे वहा अग्नि जल रही है और वह नन्हा बालक
अग्नि मे खेल रहा है अग्नि क्योंकि श्रीकृष्ण का मुख है।
इसीलिए उन्ह पूण पुरषात्तम भगवान का अवतार मानत हैं।
"पापा आपने इन सब धर्मो के बारे म पढा है, कितन ढर सार
धम सम्प्रदाय हैं हमार देश मे।"
पापा ने मेरी बात का कोई प्रत्युत्तर नही दिया। बस इतना
ही कहा, 'तुम भी खूब पढा करा। पुस्तका स श्रेष्ठ एव
शुभचिन्तक कोई भी मित्र नही। जितना अधिक पढोगी उतना
अधिक अच्छा लिख पाओगी। पढने से अच्छा काइ व्यसन
नही।"
ओ० के० खान क लिए दो बार बुला चुका था तीसरी बार
जब वह आया तो मैंन अपनी दृष्टि घडी पर डाली
'अरे पौन बारह बज गए' पापा की ओर दष्टिपात
करते हुए मैंने कहा, 'आप शीघ्र नहा लीजिए बहुत देर
हो गई।'
"ओ० के० की ओर देखते हुए मैं बोली, "चलो फटाफट
खाना लगाओ।'
वैस बारह और एक के बीच हमारे भोजन का सामान्य समय
था।
पापा जैसा विद्वान का मिलना असम्भव नही तो सम्भव भी
नही,
मेरे दादा जी सस्कृत के बहुत बडे स्कालर थे। वसे भी
श्रेष्ठ ब्राह्मण परिवार म जन्म लेने के उपरान्त सस्कार और
विद्वता तो उन्हें जन्मघुट्टी मे मिले थे। बत्तीस भाषाओ
के निष्णात ज्ञाता थे वह।

पापा अक्सर मुझ से कहते थे कि अच्छा और भावनात्मक
साहित्य पढना चाहती हो तो फ्रास की भाषा सीखो।
शरद साहित्य पढना चाहती हा तो बगला सीखो। जो
साहित्य पढना चाहती हो ता उस साहित्य की उसकी
भाषा मे उसको पढो। मैंने उनसे सत्रह भाषाए सीखी
जीवन के सही अर्थों म,
वह मेरे ज‍मदाता थे,
वह मेरे गुरु थे,
वह मेरे पथ प्रदशक थे,
वह मेरे मित्र थे।
एक साथ मैंन कितना कुछ खाया है।
एक साथ मैंने कितनी घनीभूत पीडा झेली है।
कितना,
कितना वैभव पूण जीवन था मेरा।
मेरे मन की आकाश गगा म निर्मित मेरा भ‍य महल
वास्तव मे भ‍य ही था। मुझे क्या पता था कि यह
भव्यता मेरे लिए अत्यधिक कष्टप्रद होगी।
दीपावली
चार दिन शेष रह गये थे। मैंने पाच दिन की
कैज्युअल लीव के लिए अरजी दे दी
टेलीफोन की घण्टी बज उठी।
नहाने जा रही थी। दौड कर आकर रिसीवर उठाया।
आपरेटर कह रही थी, "काल फार काण्डला।"
प्रसन्नता की लहर सम्पूण अस्तित्व मे दौड गई आज
सोचती हू तो समझ ही नही पाती कि पापा का
सामीप्य पापा के पत्र, पापा की आवाज, ये सब
कुछ मेरे लिए क्या थे ?"
"गुड मार्निंग मनचली।"
"गुड मार्निंग"
"तुम कब निकल रही हो ?"
"मैं आज शाम की ट्रेन से निकल रही हू नौ बजे
रतलाम से पजाब मेल पकड़ूगी दो बजे बडौदा चार
बजे बडौदा से अहमदाबाद और फिर ढाई बजे
पालनपुर पालनपुर पर आप आ रहे हैं। ढाई बजे मैं
पालनपुर पहुच जाऊगी।"

"मैं आज बम्बई जा रहा हू तुम जब पालनपुर
पहुचोगी उसी समय मेरी बम्बई से काण्डला के लिए
फ्लाइट है तुम पालनपुर मत रुकना, पाच बजे की
ट्रेन से सीधी काण्डला चली आना। स्टेशन पर
मि० कुलकर्णी होंगे वह तुम्हे सीधे गाधीधाम ले
जायेंगे तब तक मैं भी घर पहुच जाऊगा।'
"I must go manchali" फिर तुम्हारे पहुचने के साथ ही
साथ मैं भी घर पहुच जाऊगा। दस पन्द्रह मिनट का ही
अन्तर पडेगा।
मुझे बहुत गुस्सा आया। धड़ाम से मैंने रिसीवर पटक
दिया।
ऐसा एक बार नहीं हजारों बार ऐसा हुआ होगा। आज जब पापा
नहीं हैं तो सोचती हू कि वह कितना परेशान होते होंगे।
कही उन्होंने मुझे इन्ही सब जिदो की सजा तो नहीं दी है
नहीं, नहीं कभी नहीं वह ऐसा कभी नहीं कर सकते क्योंकि
वह जानते थे कि मैं उन्हे कितना प्यार करती हू। मेरे
अनन्य देवता थे वह। मैंने मन्दिर मे कभी हाथ नहीं जोडे
मेरे वही आराध्य थे यह तो मेरा बचकाना हठ
था जो मैं अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहती थी।
आज।
जब अतीत बिना आमन्त्रण दिये मेरे सम्मुख आकर
खडा हो जाता है तो मैं एक प्रश्न अक्सर पूछती हू कि
मानव मन इतना स्वार्थी क्यो होता है। प्रेम मे एकाधिकार
की भावना उसे साधारण से असाधारण मे क्यो परिवर्तित
कर देती है। प्रेम मे एकाकार होने के उपरान्त क्या
मानव एकनामल हो जाता है?
दीपावली के नन्हे दीपको से हमारा सारा घर जगमगा
उठा। हमारा घर सदा अतिथियो से भरा रहता था। पापा
को खाली घर अच्छा ही नहीं लगता था। डायनिंग टेबिल पर
बीस मनुष्य न हो तो उनके
गले से ग्रास ही नीचे नहीं उतरता था।
दीपावली के ढेरो अनार और फुलझडियो के मध्य
मे ही मैं जगमगा रही थी पता नहीं कैसे अनार के पटबीजन
मेरी साडी से आकर लिपट गए।
मुझे जब होश आया तो मैं पापा की बाहो मे थी और पापा

पसीने से तर बतर।
बाद म मालूम पडा कि मेरे पल्ले म आग लग गई थी
और पापा किसी से कह रहे थे, "जलने की पीडा कितनी
भयानक होती है म जानता हू भगवान मेरी मनचली पर
उस पीडा का छाया भी न पडे"
मुझे साडी म आग लग जाने का दुख नही था जितनी खुशी
हुई थी पापा की घबराहट देख कर।
हमे कोई इतना प्यार करता है।
इस गव के अनुमान का वही अनुभव कर सकता है
जिसन इस गव का अनुभव किया है। प्यार एक नशा है
जिसका सरूर भी वही अनुभव कर सकता है जिसने नशा किया
हो।
मैंन कही पढा था या पापा के मुह से ही सुना था, "मनुष्य
के पास एक ही वस्तु है जो पशुओ के पास नही है और
वह है उसका मन जो शताब्दिया मे परीशीलित होकर
आज उसके गव की वस्तु हो गई है।"
सत्य
यह मरा मन ही तो है जिसने मुझ इतना अगाध सुख
दिया है। उसी की सशक्तता के कारण तो मैं सुख का
अथ समझ सकी।
अक्सर मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि पापा सामा य मानव
नही हैं वह भूतल की लौकिकता से बहुत ऊपर उठ चुके
हैं, लेकिन जा लौकिक माह माया से ऊपर उठ जाते
हैं, वह भी प्रेम से स्वय को विलग नही कर पाते,
पापा उनमे से एक थे।
सीप से क्ही समुद्र उलीचे जाते हैं। मानव हृदय से
क्या कभी प्रेम की भावना समाप्त हो सकती है फिर
मैं कैसे प्यार की इस अमिट रेखा को अपन मन
मस्तिष्क से विस्मत कर सकती हू। कितनी पीडादायक है
मेरी नियति, न भूल पाने मे समथ है न याद रखने
म सशक्त।
मैं देखती रह गई।
लाचार।
लाचारी की पीडा से अत्यधिक मर्मान्तक पीडा और कोई नही
सब कुछ मुझ से छीन लिया गया।

छीनने वाला इन्सान होता है।
लेकिन
इस बार
इन्सान नही भगवान था।

□

याद नही क्या हुआ था लेकिन उनका एक पत्र मेरे
सम्मुख है आज बहुत याद कर रही हू फिर भी
याद नही आ रहा कि उन्होने किस सदभ मे यह
पत्र लिखा था क्हा मरी हठधर्मी थी उस समय शायद
मैंने वह अथ नही समझा था जो आज समझ रही हू
वह कभी हिन्दी मे पत्र नही लिखते मेरे समस्त
जीवन म मात्र तीन या चार पत्र ही उनके हिन्दी
म हैं। याद नही आने पर भी आज इतना अवश्य
समझती हू कि मेरे द्वारा उन्हे कही बहुत पीडा पहुची होगी
तभी उन्होंने मुझे यह पत्र लिखा होगा।
"भूलना नही मनचली समय सबसे बलवान है
उसके सामने सबको झुकना पडता है आज तुम्हारा
समय बलवान है। मुझे अपनी बेटी के सामने
झुकने म शम नही आती। उल्टा गौरव लगता है
तुम जो कहोगी मुझे स्वीकार करने म एतराज
नही। तुम शायद ऐसी भिखारी हो जो दानी
को शरमाने म सामथ्य रखती हो और मैं
ऐसा दानी हू जिसको भिखारी से भीख मागनी
पडती है। अस्वाभाविकता हमारे जीवन का साथ बन रहा है"
आज मुझे इस घटना के सम्बन्ध म कुछ भी स्मरण
नही इसस बडी आत्मग्लानि और मर लिए क्या हो
सकती है। काश कि आज का मरा पश्चाताप आप देख
पात।
हा, मैं भिखारी थी दाता के मुक्त हस्त दान को अपना
मान एकाधिकार ही नही स्वामित्व मानने लगी थी

सुख के निजस्व का तो कोई चेहरा नही होता। होती
हैं मानसिक कल्पनाए आपके सहारे मैंने वह कल्पनाएं
सजाईं और उन पर एकछत्र शासन करने लगी। आज क्षमा
भी मागू तो कौन है जिसके सम्मुख विनती करू
या मस्तक झुकाऊ बस यादें, यादो के घनीभूत
कोहरे म लिपटी मैं।
मन के भयावह घेरे मे ऐसा लगता है मानो कोहरे
मे लिपटी यादा की परछाइया एक साथ एकत्रित
होकर हर पल शरीर पर भाले का प्रहार कर रही हैं
मेरा सम्पूण शरीर लहूलुहान हो गया है और
आश्चय यह है कि लहू की एक बूद भी मेरे
शरीर पर दष्टिगोचर नही हो रही।

(9)

आज इतवार है।
मेरे और पापा के बीच यह पाचवी चाय है। साढे
आठ बज रहे होगे।
"आपने आज का पेपर पढा।" मैंने गाडन चेअर
पर बैठते हुए पूछा।
"हा तुमने कोई विशेष बात पढी।
"पीटस एडनबग ने लन्दन मे अपनी ही बहू के
साथ बलात्कार किया। मनुष्य इतना नीचे कैसे
गिर सकता है।"
"मनचली, कारण से काय कठिन होता है। हडडी से वज्र
कठोर होता है पत्थर से लोहा भयानक और कठोर
होता है और इन सबसे अधिक कठोर होता है
अविवेकी असयमी पुरुष का मन और जब भी कभी
ऐसी घटनाए घटती हैं वह सामान्य पुरुषा द्वारा नही।
अविवेक मनुष्य का सबसे बडा शत्रु है और जब वह
मनुष्य पर हावी हो जाता है तो उसकी चाल हवा
से भी अधिक तीव्रगामी होती है उसको रोकना

असम्भव।"

"पापा हमारे धम ग्रन्थ भी तो सब ऐसी घटनाओ से भरे पडे हैं। हमारी मस्कृति क्या है, हमारा साहित्य क्या है ?"

"मनचली भारतीय साहित्य म इतिहास-पुरुप का स्थान महत्त्वपूण नही है। महत्त्वपूण स्थान है भाव पुरुप प्रधान का"

"कोई भी पुरुप प्रधान हो लकिन क्या वह यथाथ आदश दे सके, कृष्ण, राम ?"

"क्यो नही कृष्ण एक बहुत विशाल धमवक्ष थे व्यास ने जब महाभारत की रचना की तो उन्होने उम विशाल धम वक्ष की कल्पना की, जानती हो कृष्ण अगर अजुन के सारथी न होते तो यह महाभारत न होती जिस अजन के कृष्ण सारथी बन उसी अजुन को वह लुटेरो के बीच म छोड कर चले आये थे। जीवन म कब, कहा और किमको कितनी आवश्यकता है यह जानना ही धम का यथाथ रूप है और जो इस सत्य का जान या पहचान लेते हैं वह कभी भी काल के गत म विलीन नही हात। परिवतन के साथ उनकी परिपक्वता बढती जाती है उसम किंचित मात्र भी कही विघ्न नही आता और यही जीवन का चक्र कहलाता है और इन्ही परिवतनो क कारण राम कृष्ण इतिहास पुरुप बने हम लोगो म व्यक्ति केन्द्र है।"

"फिर हमारा हिन्दू धम क्या है ?"

"हिन्दू धम एक धर्म नही नाना धर्मो का समन्वय है आज या तो हिन्दू धम रक्षा कवच बन गया है या समस्त दोषो का उदगम। जो वदान्त पर अंग्रेजी मे प्रवचन सुन-सुनकर ऊचे स्तर की आध्यात्मिक बातें करता है, जिसक आचरण म असत्य राग, द्वेष, निंदा, छल, कपट का वेग रहता है वह न ज्ञानी है न धर्मात्मा, विच्छिन्नता ही हमारे जीवन का साध्य बन गई है सस्कृत और साहित्य के अन्तगत तो तप और तपोवन साधना एव त्याग का अखड जीवन बोध है।'

"पापा धम का, स्वाधीनता का, सस्कृति का भी तो एक नशा होता है।'

"अवश्य, तुम कल, ज्या क्रिस्तोफ पढ रही थी न
तुमने उसम पढा होगा ।"
"क्या ?" उत्सुकता से मेरी आखें उनके चेहर पर
टिक गईं ।
"राम्या रोला न उसम लिखा है फ्रास स्वाधीनता के
नशे म डूबकर सास्कृतिक दष्टि से एकदम विपन्न
हो चुका है न यहा चेतना की कमी है न कौशल
की फिर भी जिन्दगी गीली तिल्ली जैसी सुलग रही है ।"
"लेकिन ऐसा क्यो ?"
कात और स्पास क शब्दो मे ' अक्सर हम यह नही जानते
कि हमारा जिहाद किसके खिलाफ है मित्र शत्रु की पहचान
करना हमारे लिए दिन प्रतिदिन अत्यन्त दुष्कर होती
जा रही है । हम लाग न परिवतना की भट्टी मे
जलते है और न हम उसकी ऊष्मा बर्दाश्त कर
सक्त हैं ।"
'पापा पहले वद्धावस्था म मनुष्य सन्यास ले लेते थे
वह जीवन आज के जीवन से श्रेष्ठ था क्या ?"
"कुछ सीमा तक लौकिक उत्तरदायित्वा को पूरा करके वह
माह माया से दूर हा जात थे । तपोवन मे जाकर
सीधा साधा सात्विक जीवन व्यतीत करते थे ।
वातावरण मे करुणा का समन्वय रहता था । पवित्रता का
श्रष्ठ स्थान रहता था ।
' गृहस्थाश्रम छोडन के उपरान्त करुणा की उत्पत्ति से
मानव मात्र जन कल्याण के बारे म सोचता है—क्योंकि यह
सवविदित है कि ससार दुखो की जड है ।"
"तो क्या परिवार या गहस्थाश्रम मे रहते हुए
मानव के मन मे करुणा की उत्पत्ति नही हाती ।"
"यह बात नही करुणा तो एक रस है जा प्रत्येक
मनुष्य के हृदय मे स्थायी रूप म रहती है लेकिन
तपोवन मे रहने के कारण मनुष्य का वातावरण
विस्तृत हो जाता । मन मात्र परिवार से हटकर
विस्तृतता मे डूब जाता है प्राणी मात्र के लिए
स्नेह उपजाता है और यहा तक कि तपोवन म घूमत
पशु-पक्षी भी अपने हो जाते हैं । उनके
लिए भी हृदय म ममत्व एव करुणा सहज म उपज

जाती है।

जब मनुष्य भगवान म लीन होन का प्रयत्न करता है
या ज्ञानवधक ग्रन्था का पठन-पाठन करता है तो
एक विचित्र प्रकार की प्रतिभा का प्रादुर्भाव होता है तब
वह मात्र अपना नहीं रहता सम्पूर्णता म खो जाता है।
मनचली वैम भी जीवन परिवर्तन मागता है वह घर
परिवार इसलिए नही छोडन थ कि वह बूढे हो गये हैं। बूढा
होना शरीर का धम है मन कभी बूढा नही होता। व
लोग अतीत म नही वतमान म जीते थ और उस
वतमान म जीकर सुखद भविष्य की प्रगति म अपन
चरण मिलाते आज से कल उत्तम हो इसकी खोज म
रहत।'

"फिर आज जीवन इतना शापित क्यो हो गया है?"

"शापित तुम इस शापित कहती हो?"

"और क्या, पारिवारिक विघटनो न समाज का हमारी संस्कृति
को यहा तक हमारे साहित्य का नष्ट नही किया है क्या? भले ही
हम भौतिक दृष्टि से बहुत कुछ मिला है लकिन आस्था तो प्राय
नष्ट हो गई'

"पारिवारिक विघटन एक रोग है जिसे आज नही तो कल
यहा से सदा के लिए चल जाना पडेगा। विघटन का
प्रामाणिक कारण जो मैं समझता हू वह है कि आज भी
हम अतीत म जीते हैं। वतमान का सुख हमारी दृष्टि
मे सदा नगण्य रहता है। जो सामने है उसम दोष
ढूढते रहते हैं जो बीत चुका उसकी याद में पीडित रहते
हैं। वह यादें भूत बनकर जीवन से चिपकी रहती
हैं। भूतकाल मे विचरते विचरते मनुष्य स्वय भूत हो जाता है
और यही भूत हमे पारिवारिक घुटन देता है अत स्वाभाविक
है कि इसका प्रभाव हमारी संस्कृति और हमारे साहित्य पर पडता है
लेकिन यह स्थाई प्रभाव नही है यह तो मानवीय प्रतिक्रियाओ
का एक स्वाभाविक रूप है।'

इन बादलो को एक दिन छटना पडगा इसका तुम मानवीय
नियति भी कह सकती हो। समय की माग भी कह
सकती हो। उत्सुकता या परिवतन भी कह सकती हो।
वास्तव म उत्सुकता ही परिवतन की जननी है।"

"यह परिवतन पापा, ज्ञान की खोज स भी तो आ

सकना है।"

"जब तक हम यह सोचते रहेंगे कि हमने ज्ञान प्राप्त कर लिया है हम परिवतन लाने मे कभी सफल नही हो सकते हमारा ज्ञान जब तक अधूरा ही रहेगा। हमारी आकाक्षाओ और उत्सुकताओं को बढाता ही रहेगा हम जैस-जैसे स्वय ज्ञान के प्रकाश से पल्लवित हाते रहेंगे परिवतन बिना हम बताय अपने आप आगे बढता जायेगा। अच्छा अब चाय पिलाओ। बहुत देर हो गई।" कहते हुए पापा उठकर खडे हो गये।

□

मैं जब अहमदाबाद से लौटी तो मुझे सुपरिटेंडेंट न बताया कि स्टेट होम म एक आधी पागल लडकी आयी है। भोजन करन बैठती है तो कभी-कभी तीन पैंतीस रोटिया खा जाती है। अय अतरवासिनियो को मारना-काटना उनक कपड फाड देना तो उसका नित्य-नियम है। बाहर भाग जाती है तीन तीन घण्टे पता ही नही लगता कहा चली गई है।

मैंने चेयरमैन से कहा, उनको समझाने का प्रयत्न किया यह Mental y Retarted Home नही है। इसकी शिकायतें और इसकी हरकतें सिर दद बन गई हैं। उसको उसके भाई को सौंप देना ही सस्था और डिपाटमट दोना के लिए अच्छा है। पर वह कहा सुनती। सर मोरोपन्त जोशी की लडकी ने साठ वष की वय म भी धरती पर चलना नही सीखा था। एक अत्यन्त सामान्य परिवार की अशिक्षित महिला और उनम कोई अन्तर नही था इतन सम्मानित परिवार की महिला जो स्वय एक डॉक्टर थी उनके सोचन का ढग इतना विचित्र और मैं 23-24 वष की उभरती आफिसर। पहले दिन से ही पता नही क्या हम एक दूसरे को पसन्द नही कर पाये। यह मेरे जीवन की पहली कशमकश थी अभी तक, कोई

अपने को अच्छा नही लगता या किसी को हम
अच्छे नही लगत एसा न कभी अवसर आया था न
कभी अनुभव किया था।
मेरी उनस पहली भेंट।
ज्वाइन होन के उपरान्त कटसीकाल के लिए मैं उनके
यहा पहुची। अभिवादन स पूव ही जब उनके सुसज्जित
ड्राइग रूम म मैंन प्रवश किया तो उन्होन बडी विचित्र
दृष्टि स मुझे ऊपर से नीचे तक दखा। फिर तुरन्त बोली
इतनी छोटी लडकी तुम क्या सस्थाए सभाल पाओगी।
मि० सिह (मरे सचालक) को क्या हो गया है। कहा की हो,
बैठा।
सब कुछ मुझे बडा विचित्र लगा।
चिढ गई मैं।" मुझे मि० सिह ने appoint नही किया
है। I am directly selected by Madhya Pradesh
public service Comission and I belong to
Hindustan

दासी सजी हुइ टे म चाय ले आई थी।
"अच्छा दखा, तुम बहुत छोटी हा सिर ढक कर रहा करो
जिससे '
उनका वाक्य पूरा करने से पूव ही मैं बोली, ' सिर
ढकना पडेगा एसी कोइ शत नही थी इण्टरव्यू म।"
स्वाभाविक था उनको मरा यह उत्तर अच्छा नही लगा,
मैं बिना चाय पिय उठ खडी हुई हमारी दूरिया बढती
गयी।
एक दिन सचालक महोदय पधारे। पता नही उनकी और
चेयरमैन की क्या बातें हुइ। जब मैं पहुची तो बडे
उखडे-उखडे थे सारी चर्चा एक ही बात पर केन्द्रित
थी कि मुझे विनम्र हाना चाहिए लम्ब लम्बे उपदेशो
के साथ।
मैंन पापा का पत्र लिखा।
चौथ दिन उनका उत्तर मिला।
After reading the gist of your talk with your Director
Welfare I am lad to presume that he consider you
to b- much ordinary p-rson, who can b: advised

at any time I do not know what replies you gave
to him The person who takes recourse to such
Philosophy deserves to be treated with contempt One
who feels he has suffered more than others shows
his inabitity to be appreciative of a simple
possibility that others might have suffered more,
justice has a strange way of asserting itself
In your case also justice will assert itself You simply
wait and watch the happening that would follow

पत्र कितनी बार पढा होगा।
पापा आप जैसी अण्डरस्टैंण्ग कहा से लाऊ फिर भी
मन और बुद्धि से प्रयत्नशील हू कि आपके शब्दो को
समझ सकू जीवन म उतार सकू। नही जानती कि
सफलता मिलेगी या नही पर प्रयत्नो मे मैं किंचित
मात्र भी पीछे नही रहूगी। मेरे जीवन की सार्थकता ही
जब होगी जब मैं आपके विचारो को समझने
लगू।"
दिन प्रतिदिन उस लडकी की उदण्डताए बढती जा रही
थी मैं आफिस जाने की तैयारी मे थी कि जीप आकर
बाहर रुकी और हाफते हाफते मुझे सूचना दी गई
कि पागल ने आज पचास से अधिक लडकियो की
धोतिया जो बाहर सूख रही थी कैंची से काट डाली।
मैं जब वहा पहुची तो देखा वह सिरफिरी लडकी
अमरूद के पेड पर चढी गाना गा रही है।
"सैंया ले चल मुझे बाजार,
दिला दे चूडिया लाल लाल।"
मैंने उसे नीचे आने को कहा
वह नही उतरी
कई बार प्रयत्न करने पर भी जब वह पेड से नही
उतरी तो मैंने उससे पूछा, "तुमने आज लडकिया
की धोतिया काट डाली ?"
उसने वही मे चिल्लाकर प्रत्युत्तर दिया, "आज रात को
सब की चोटी काटूगी।" और धम से वह नीचे कूद
पडी।

मुझे इतना गुस्सा आ गया था कि उसके कूदते ही मैंने
जोर से एक चाटा रसीद कर दिया।
आफिस में आकर फाइल पर नोट लिखा कि दो बजे
से पूर्व इसको इसके भाई के सुपुर्द कर दिया जाय
फिर सारा दिन कब आफिस की
झंझटों में निकल गया पता ही नहीं लगा। असेम्बली शुरू
होने में तीन दिन ही शेष थे। पता नहीं इस
बार कैसे कैसे प्रश्न पूछे जायेंगे। घड़ी की ओर नजर गई साढ़े
पांच बज रहे थे।
मैं उठने की सोच ही रही थी कि टेलीफोन की घंटी
बजी।
"हलो"
"मैं सामन्त बोल रहा हूं। आप यहां आएंगी।"
मैं समझ गई—पगली और उसका भाई वहां पहुंच चुके हैं।
मैं जाना नहीं चाहती थी।
सोचा उसे प्रवेश उन्होंने अपने विशेषाधिकार द्वारा दिया
था उसको निकाल देना उनके आत्म-सम्मान को चोट
पहुंचा रहा होगा और अगर अब न गई तो आग में घी
पड़ जायेगा।
बहुत देर तक उनकी बातें सुनती रही, फिर बोली, 'हां मैंने
इसे चाटा मारा है अगर यह मेरी बेटी या बहन होती
तो इसे बहुत कड़ी सजा देती और अब मैं इसे संस्था
में पुनः प्रवेश नहीं दूंगी।"
"मेरा आदेश।"
"क्षमा कीजियेगा संस्था के हित को ध्यान में रखते हुए
मैं उसका पालन नहीं करूंगी।'
मैं उठकर चली आई।
बीस दिन के उपरान्त,
मुझे अपने डिपार्टमेंट की ओर से एक मेमो मिला
जिसमें लिखा था आपने संस्था की लड़की को मारा
है क्या नहीं अवांछनीय काम करने के कारण आपके
विरुद्ध विभागीय जांच की जाय ?"
विभागीय जांच मेरे विरुद्ध ?
स्वाभाविक था मैं घबरा गई।
पापा उन दिनों सीलोन गये हुए थे। मैं उस रात सो नहीं

सकी । खा नही सकी ।

एक लम्बा सा पत्र लिख कर पापा को पोस्ट कर दिया ।
वह तो मेरे स बात नही कर पाय पर किसी के द्वारा उनका
टेलीफोनिक सन्देश मुझ मिला, "म चिन्ता न करू वह
मुझे पत्र लिख रह हैं ।"

छठे या सातवें दिन उनका पत्र आया । पत्र छोटा-सा था
लेकिन

My dear,

Trouble seems to be something which is inevitable,
amongst all the good people that can not be
cured has to be endured there in lies the real way
of living one's
But my dear nothing is worth achieving at
the cost of one s reputation

मैंमा का उत्तर मैंन दे दिया था ।
मैंमो पढकर मेरे कलेक्टर न कहा था,
If seems your director has gone bankrupt

फिर भी मन को अच्छा नही लग रहा था शायद यही
उखडापन पापा न मेरे पत्रो म अनुभव किया हो
पापा सीलोन से एक सप्ताह के लिए चिली गये थे
वहा से उनका पत्र मुझे मिला ।

I can not stop my self from thinking about you always
and every where Only consolation I have got is
that I am living and doing every thing for my
Manchali Had it not been for you I would
have never known that life can be worth
living Perhaps you yourself do not know
what you really are in my life Write to me
if you need any thing from here You have no
business to make yourself unhappy as long as I am alive

आज आप नहीं हैं ।
आपन तो पहले ही लिख दिया था कि जब तक आप हैं
मुझे दु खी होन की आवश्यकता नही । उस समय मैं इस

वाक्य का अथ ही नही समझ पाई थी नही तो उसी दिन
आपके पास दौडती हुई पहुचती और पूछती कि आपके
उपरात क्या होगा मेरी प्रसन्नता का बस यह आपके
सामने ही है। चूक गई थी। इसी का यह फल है जो
मैं आज भोग रही हू। काश एक बार मात्र एक
बार आपसे आपके वाक्य का अथ समझ लेती। आपन
सच ही लिखा था। आज कौन है जो मुझे या मेरे मन
को समझ सके ? आपका वह सहज वाक्य आज मुझे
अगारा की भाति पल पल ढेरो मानसिक यातनाए देता
आपका वाक्य उसका अथ आज मैंने अनुभव किया है।
वडा गव था मुझे कि मैं आपको बहुत अच्छी प्रकार से
समझती हू और एक वाक्य नही समझ सकी। गुरु के
मुह से निकला और शिष्य को सामान्य लगे नही
कभी नही फिर भी सत्य यही है। आज कहा
से आपको ले आऊ और पूछू तत्त्वो की छाया मे
दशन बालन वाले इस शिष्य को बिना शिक्षित किए कैसे
मझधार मे छोड गये ?
आज जो मानसिक यातनाएँ मैं भोग रही हू वह किसी की
भाग्य रेखा मे भी न उभरें।

(10)

रेणु ! मेरी छोटी बहिन !
इससे मुझे सबसे अधिक प्यार था मैं उसे अपने साथ
ले आई थी। वह मण्ट मेरी म सैंवेन्थ स्टेण्डड म
पढती थी।
मुझे पता नही क्या वह बहुत प्यारी लगती थी। छोटी सी
एकदम गुडिया थी वह। वैसे भी अक्सर उसकी मेम कहा
करती थी कि तुम्हारी दीदी तो तुम्हे जापानी डॉल बना कर
रखती है।
कई बार गलतफहमी भी हो जाती थी। जबलपुर मे
हम नैपियर टाउन म रहते थे हमारे बगले के साथ
एक मेजर का बगला था। उनकी लडकी भी रेणु के

साथ ही पढती थी ।
चिली से पापा जब लौटे तो मैं जबलपुर थी पापा
सीधे जबलपुर हम लोगो के पास आए ।
रेणु की सहेली नीता का पापा को देखकर बडा आश्चय
हुआ उसने रेणु स पूछा, "रणु तुम्हारी मम्मी ता बहुत
छोटी-सी है पर तुम्हारे पापा ता बहुत बडे हैं ।
"चल हट, वह मेरी मम्मी थोडे ही है वह तो मेरी दीदी
है ।"
रेणु ने शाम को आकर जब बताया तो मैं और पापा
बहुत देर तक हसते रह ।
मैंन मा का प्यार नही पाया जब प्यार समझन के
याग्य हुई ता उनका अस्तित्व ही समाप्त हो गया था ।
रेणु का मैंने बहुत प्यार किया । सच कहू ता प्यार
करना मेरे जीवन का एक अनिवाय अग है । मैंन
अपने सभी भाई बहनो को मा की ही ममता दी ।
और मा के समान ही सब उत्तरदायित्वो को पूरा किया
है ।
पापा ता अक्सर बाहर रहते थे और हमारी मा
घर की बडी लडकी ।
जिद ।
प्यार ।
और ।
जिम्मेदारिया भी । सभी कुछ एक साथ मिला मुझे ।
इन सब के उपरात रेणु के प्रति विशेष प्यार था मुझे
जैसे पापा को मेरे प्रति ।
मेरा स्वप्न था रेणु का बहुत बडा डाक्टर बनान का मैं
स्वय एक बहुत बडा डाक्टर बनना चाहती थी । लेकिन मेरा
जीवन तो प्रारम्भ से ही विभिन्नताओ स भरा रहा है ।
मैट्रिक तक मैंने स्कूल का मुह नही देखा, सीधे मट्रिक की प्राइवेट
परीक्षा दी और फस्ट ईयर (आट) मे होस्टल म
डाल दी गई । छ माह के उपरात पता लगा कि डाक्टर
बनने के लिए मुझे आट नही साइस की आवश्यकता थी ।
मन की मन में ही दबी रह गई चिगारी । रेणु क
रूप मे वह पुन भडकी थी और मैं उस
चिगारी को ज्वाला के रूप मे देखना चाहती थी ।

उस एक यशस्वी डॉक्टर बनाना मेरा साथक स्वप्न
था। उसे साकार करना चाहती थी।
स्वप्न तो स्वप्न ही होते है।
जीवन की सभी सुविधाए हम भाई बहिना को मिली थी
लेकिन रेण का व्यक्तित्व मैं सबसे अलग गढना चाहती थी
एक चमचमाते नक्षत्र के रूप म उसे प्रतिस्थापित
करना चाहती थी उसको इतना ऊचा देखना चाहती थी
कि उसकी ऊचाइ को देखने के लिए मेरी गदन
म मीठा दद होने लगे पर ऐसा कुछ नही हुआ
पहली बार मुझे लगा कि मेरा आकाश गगा म
निर्मित महल मात्र कल्पना है। मुझ धरती पर जीना
है बस दो गज कफन के टुकडे के साथ इसी धरती
म विलीन हो जाना है मैं कहा चमकते हुए सितारो
को छूने के प्रयत्न म सघषरत हो गई यह क्या
महज मेरा पागलपन नही है?
समीर मन्द गति से बह रहा था ठडी और मीठी
बयार मेरे उद्यान म खिले अगणित गुलाबो के
फूलो को चूम झूम कर गले लगा रही थी। सवेरे ही
पापा स बात हुई थी मेरी ड्यूटी प्रसाइडिग आफिसर
के रूप म कलैक्टरेट आफिस म लगी थी। साढे
चार या पौन पाँच प्रात का समय होगा। एडीशनल
कलेक्टर मि० जैकब ने मुझ से कहा था कि वह जाते
समय मुझे भी साथ लेकर जायेंग। मैं तैयार
होकर खिले हुए लाल लाल गुलाबो की कतारो म
खोई हुई थी, अचानक अपनी पीठ पर किसी के
हाथ का स्पश पाकर चौंक गई पीछे फिर कर
देखा तो मि० जैकब खड थे।
'गुड मार्निग"
'गुड मार्निग स्वीट हार्ट'
मेरे लिए वह हमशा यही शब्द प्रयोग करते थ। मेरे
और उनके बीच पता नही कब आफिसर और मातहत
का रिश्ता समाप्त हो गया। अपनत्व का एक एहसास
था, एक अधिकार जो मैंने बिना उनके दिए प्राप्त
कर लिया था, वह मुझ स हमेशा कहा करते थे जितनी
Religiously पापा अपनी बिटिया को पत्र लिखते हैं

उतनी Religiously तो कोई प्रेमी भी अपनी प्रेमिका
को पत्र नही लिखेगा। वह जाति के यहूदी थे
बहुत साफिस्टिकेटेड अत्यन्त मदु और सुसस्कृत। आज
वह भी नही हैं लेकिन उनकी खनकती हसी अक्सर
मुझे याद आ जाती है।
अक्सर वह गाडी स्वय चलाते थे और हमेशा दरवाजा
खोलकर मुझे बैठाने के उपरान्त ही ड्राईविंग सीट पर
आकर बैठते थे।
मैं हमेशा चुप रहती थी और वे हसकर मुझ से
कहते थे कि ए पैनी फार योर थाट!
आज उन्होंने कुछ नही कहा
"एक बात कहना चाहता हू आपसे।'
उनकी आवाज मानो कुए से निकल रही थी
मैं चौंक गई।
"आज आप कुछ परेशान हैं।'
"कुछ नही बहुत।"
"अपनी परेशानी मुझे बतायेंगे'
'सिर्फ तुम्हे ही बतानी है।"
मैंने उनके मुह से कभी इस प्रकार की भाषा
नही सुनी थी और न ही कभी उन्हे उमडते-घुमडते
मूड मे पाया था, एक अज्ञात भय मन पर अपनी चादर
उढा गया। उत्सुकता बढती गई। मैं एकदम उनका मुह
देखती रह गई।
"तुम जानती हो रेणु एक लडके के साथ घूमती
है।"
"क्या?'
"हा, यह सच है।'
एक क्षण तो लगा कि मुह नोच लू इस इन्सान का
मेरी बहिन के सबध मे यह सब कहने का साहस कैसे जुटाया
पर पता नही कौनसी शक्ति थी जिसने मुझे जड
बना दिया मैं कैसे गाडी से उतरी मैंने कैसे प्रसाईडिंग
आफीसर का काम किया मुझे नही पता लगा। रात को
घर आकर पहला काम किया पापा को पत्र लिखा
आज नहीं याद है मुझे कि मैंने उन्हें उस दिन
क्या लिखा था?

पापा का उत्तर अवश्य मेरे पास सुरक्षित है।
Ranu's behaviour has disturbed you it has also disturb me If we try to supress her forcibly she would revolt and every thing will be lost that is why I have suggested to you till her examination is over You should treat her with consideration and understanding She is your sister and still very young Please tackle this situatian patiently and with generous mind Please read this letter carefully I feel you understand it

पापा के पत्र पाने के उपरान्त भी मेरा खून तो खौल रहा था। मेरी बहन और इस रास्ते पर मैं बार बार अपने मन से पूछती मैंने कही अपने कर्तव्य मे लापरवाही बरती। उदासीनता दिखाई जो इसका मन इन बेकार की बातो म उलझ गया। मैं तो इसे विख्यात डाक्टर बनाना चाहती थी यह उस ऊचाइ से इतनी नीचे कैसे गिर गई। प्यार करने के लिए तो सारा जीवन पडा है लेकिन भविष्य बनाने क लिए यही समय यह हाथ से निकल गया तो फिर कुछ हाथ नही आएगा। मैं उससे नही शायद अपने मे बहुत चिढ गई थी मुझे पल पल यह पीडा सालती रहती थी कि मैं ही परीक्षा मे फेल हो गई।
अपना अनुत्तीण होना कितना पीडादायक होता है। मरुस्थल म पानी कहा? वही स्थिति मेरी थी कोई उत्तर मुझे नहीं मिलता था। पापा को पत्र लिखते लिखते सप दश की पीडा के समान मैं छटपटाती रहती। मन प्रश्न करता पापा क्या सोचते होंगे मेरे सम्बन्ध म मैं पराजित हो गई थी।
पापा ने लिखा था You have a powerful weapon of ability to explain every thing I admire that ability

मेरी ability तो धराशायी हो गई। जीवन के एक

महत्त्वपूर्ण स्थान पर मुझे बुरी तरह से पराजित होना
पड़ा था।
मुझ याद आता।
रेणु का एक-एक फ्राक तीन तीन सौ रुपये का
होता था।
पापा जब भी नया फ्राक देखते कहते, Manchalı you are
wastıng
वास्तव म मेरा सब कुछ वेस्ट हो गया। अगर
पापा के पास होती तो फूट फूट कर रोती और उनसे
पूछती कि मेरा क्या अपराध है जो इस छोटी-सी
लड़की न मुझे इतनी बड़ी मानसिक यातना दी पर
खामोशी और घुटन के अतिरिक्त मेरे पास कुछ नही
था।
पापा के पास जाने मे मेरा मन मुझे मना कर रहा
था एक ऐसा प्रश्न जिसका कोई उत्तर नही था मेरे पास
मुझे मथे जा रहा था।
एक दिन रात को पापा न बताया कि उन्होन मेरे इकलौते
भाई अनिल को भी मेरे पास भेज दिया। मिड टम म
एडमीशन दिलाना कितना दुष्कर लेकिन प्रयत्न करके
मैंन उसे सैण्ट जवियर मे 5 th std मे प्रवश
दिला दिया। अनिल के आने के उपरान्त जो उनका
पहला पत्र मुझे मिला

You wıll please try to find out some tıme to help the
chıldren ın theır studıes Teacher should be ımmedıately
engaged for Anıl otherwise he would not
shıne ın the class Both the chıldren must do well
ın the class and the Exm We have not deny any
thıng to the chıldren and they should respond
by showıng proper progress ın theır studıes
I would not lıke you to become mıser or
stıngy because mıserlyness would be as bed as
extravagance

रेणु तो मेरे लिए एक स्थाई समस्या थी ही, अनिल
का जब सैकेण्ड टरमीनल का रिजल्ट आया तो मैं

पत्र पढकर उस दिन झुझला गई मै । पापा भी यही
समझते हैं कि मैने उसे सीधी राह नही दिखाई नही तो
वह कैसे लिख देते ?
कैसे लिख देते ?
गुस्से के मारे पूरे एक सप्ताह पत्र नही लिखा मैन, वास्तव
मे पत्र तो मै रोज लिखती थी पर पोस्ट नही करती थी ।
फोन जब आता पापा का पत्र के सदभ म मै चुप्पी साध
लेती । पूरे सप्ताह मेरे पत्र की प्रतीक्षा करन के उपरात पापा
न जो पत्र लिखा ,

A day lost is deviation from the principles what was
allowed ones may have to be allowed again and
again is as good as always Residence and office are
the only two places in which my daily life is spent
The pressure of work and strain of remaining away
on tours tires me but I never fail to write you-
I had to fill the gap created by the absence
of your letter Filling of gaps is always painful

पापा के इस पत्र से मुझे बहुत पीडा हुई ।
क्या करू मैं । रेणु और अनिल दोनो को मैं सभाल
नही पा रही थी । अनिल पासिग मार्क्स से आगे
नहीं बढ रहा था और रेणु अपना कदम पीछे नही
ला रही थी और मैं इसे अपनी व्यक्तिगत पराजय समझ
कर दिन प्रति दिन क्षय की शिकार होती जा रही थी
इतनी निबल मैं ?
पराजय ही क्या मेरा प्रारब्ध है ?
कोई उत्तर नही था
बस ढेर सारे प्रश्न थे ।
और प्रश्नो के बीच मैं झैकिग टावर सी झूल रही थी ।
मेरे सब गोल्ड मैडल व्यर्थ ।
मेरी शिक्षा व्यथ ।
अब म किसी को अपने पास नही रखूगी ।
मैं पराजित हो गई ।
इस पराजय का एक और कारण था और वह थी
मरी उद्विग्नता ।
पापा का आज का पत्र—

दग रह गई। मैंने घबरा कर पापा को फोन किया। तीसरे
दिन मुझे उनका पत्र मिला। लेकिन वह तीन दिन तक
रोज मुझे फोन करते रहे।
शायद कुछ समझाते रहे
मैं कितना समझी यह आज भी बताने मे, मैं असमर्थ हू।
उनका पत्र

I am much disturbed to hear about Anil
Only remeady is to let him second tutor
Last night when you spoke to me over phone
I told you the samething Unless he follows
the english medium he will not feel interested
You have also devote some time to ensure
that he feels full attention to his home work
Mathematic is not a difficult subject, after
getting guaidence he would improve
It is very necessary he is kept away from bad
company

पापा का कहना सच था फिर भी मैं पूरा समय ध्यान रखने के
उपरान्त भी अपने भाई बहन को नही समझा पा रही थी
अपनी कल्पना के अनुरूप नही ढाल पा रही थी
आत्मग्लानि से पीडित मैं और मेरा मन।
शायद उन दिनो कोई मेरे हृदय म झाककर देखता।
मैंने रेणु के तथाकथित प्रेमी को देखा।
मन वितृष्णा से भर गया।
ऐसी पसन्द।
प्रेमी। पति तो गर्व करने की वस्तु है क्या इस लडके पर
एक क्षण के लिए भी गर्व किया जा सकेगा, आज नही
कल भी?
लडके का रेखाचित्र खीचते हुए पुन मैंने पापा को एक
पत्र लिखा।
उनका उत्तर

Renu is a good girl but she is,entering a
suseptible age All girls do unless right from now
you put her on correct line, she would not pay
much attention I am no less wrried about her

पत्र पढकर उस दिन झुझला गई मैं। पापा भी यही
समझते हैं कि मैंने उसे सीधी राह नही दिखाई नही तो
वह कैसे लिख देते?
कैसे लिख देते?
गुस्से के मारे पूरे एक सप्ताह पत्र नही लिखा मैंने, वास्तव
मे पत्र तो मैं रोज लिखती थी पर पोस्ट नही करती थी।
फोन जब आता पापा का पत्र के सदर्भ म मैं चुप्पी साध
लती। पूरे सप्ताह मेरे पत्र की प्रतीक्षा करने क उपरान्त पापा
न जो पत्र लिखा

A day lost is deviation from the principles what was
allowed ones may have to be allowed again and
again is as good as always Residence and office are
the only two places in which my daily life is spent
The pressure of work and strain of remaining away
on tours tires me but I never fail to write you-
I had to fill the gap created by the absence
of your letter Filling of gaps is always painful

पापा के इस पत्र से मुझे बहुत पीडा हुई।
क्या करू मैं। रेणु और अनिल दोनो को मैं सभाल
नही पा रही थी। अनिल पासिंग मार्क्स से आगे
नही बढ रहा था और रेणु अपने कदम पीछे नही
ला रही थी और मैं इसे अपनी व्यक्तिगत पराजय समझ
कर दिन प्रति दिन क्षय की शिकार होती जा रही थी
इतनी निर्बल मैं?
पराजय ही क्या मेरा प्रारब्ध है?
कोई उत्तर नही था
बस ढेर सारे प्रश्न थे।
और प्रश्नो के बीच मैं शॅकिंग टावर सी झूल रही थी।
मेरे सब गोल्ड मैडल व्यर्थ।
मेरी शिक्षा व्यर्थ।
अब मैं किसी को अपने पास नही रखूगी।
मैं पराजित हो गई।
इस पराजय का एक और कारण था और वह थी
मेरी उद्विग्नता।
पापा का आज का पत्र—

When I telephone yesterday it has
a five minutes pass nine in the night and Ranu
not returned from her friend Let her not be
so late in future Please give my love to
children I remember you more then you
may be remembering me

(11)

बहुत दिन व्यतीत हो गए। पापा के खत मे दुनिया भर
की बातें होती थी। नही रहता था कुछ तो इतना पूछना
कि मै लिख रही हू या नही और लिखती हू ता
उनको क्यो नही भेज रही
मुझे ऐसा लगने लगा था कि अब पापा का प्यार
भी मेरे प्रति कम हो गया है। क्योंकि मै अपने
उत्तरदायित्व को नही सभाल पाई।
फिर मुझे अधिकार भी क्या है उनसे एकछत्र प्यार
पाने का। बहुत दु खी और क्लान्त मन से मैंने
उन्हे पत्र लिखा। आज स्मरण नही कि मन उन्हे
क्या लिखा पर उनका उत्तर मेरे पास आज भी सुरक्षित
है।

Life which needs an explaination is not the
true life and love cannot survive on what
is not true

मेरा मन भर आया। मैं दौड कर पापा के पास पहुच
जाना चाहती थी लेकिन अब मेरे पैरो मे शृखलाए
थी। सोमवार से दोनों की परीक्षा आरम्भ होने वाली
थी। मै किस झंझट मे फस गई।
मुझे लगा कि पहली बार म पख विहीन पक्षी की
भाति तडप रही हू। जी भर कर रो लेना चाहती थी
या बस उनकी गोद मे सिर रख कर घण्टो

चुपचाप गुमसुम लेटी रहना चाहती थी। जो कुछ भी हो,
पापा के पास शीघ्र पहुँच जाना चाहती थी।
हर इच्छा,
हर चाहना,
हर समय
पूरी नही होती
सत्य यही है।

□

पापा के पास आकर मुझे शान्ति मिली, सुखद अनुभूति,
पापा ने कह दिया कि अब तुम दोनो मे से किसी
को मत ले जाना।
पापा की इच्छा न होने पर भी उसी लडके के साथ
ग्रीष्मावकाश मे रेणु की शादी कर दी गई। नाव का
खिवैया अशक्त है पर नियति बडी बलवान है।
अनिल को पापा ने अहमदाबाद म एडमीशन दिला दिया। वह
अकेला न रह इसलिए अपने एक दोस्त के लडके अरुण
का भी दायित्व उठा लिया।
जीवन मे ठहरी हुई अनभिज्ञ तरगो ने भूचाल का
रूप लिया था।
अब शात था।
"चाय पियेंगे पापा' यह किताब नही।
'आधा कप"
चाय पीते पीते हमने कितनी बातें की।
आज बहुत दिनो के उपरात पुन पापा से प्रश्न पूछने और
बातें करने का अवसर मिला।
"पापा कला विज्ञान नही देता।"
"अरे तुम तो शब्दो से लडती हो दोनो की उत्पत्ति
मानव द्वारा ही की गई है न।"
'जी हा करने की प्रधानता कला मे है और
जानने की प्रधानता ज्ञान मे है।"

"मनचली, शब्दों का भार अधिक सात्वना नही देता
कला स्वान्त सुखाय शब्दो का एक नशा होता
है और यही नशा विज्ञान को जन्म देता है।"
ओ० के० चाय लेकर चला आया।
"पापा, बीसवी सदी का महापुरुष आप किसे मानते
हैं।"
"विवेकानन्द, टैगोर, अरविन्द, गाधी।
पापा आपको एसा नही लगता कि जो सस्कृतिया
मूर्तिपूजक होती हैं वहा तानाशाही पनपती है या पनपन
का डर रहता है और विशेषकर उन स्थानो पर जहा
ईश्वर पर मानव या मानव पर ईश्वर का आरोपण
किया जाता है जसे रोमन लाग ज्युस के पूजक थे
इसीलिए शायद वहा ज्यूलियस सीजर हुआ।"
कप नीचे रखते हुए उन्होंने कहा, "नही मनचली
व्यक्ति पूजक होने पर तानाशाही को शायद कभी
बल मिल जाए क्योकि व्यक्ति पूजक प्रधान समाज है
इसीलिए वहा तानाशाही को स्थान मिलेगा
ही यह सत्य नही कन्फ्यूशस धम म न कही
अवतारवाद की बात थी न सगुण मूर्ति पूजा की फिर
भी वहा माओ पैदा हुआ। आर्य समाज मूर्ति पूजा का
विरोधी है पर वही स्वामी दयानन्द की मूर्ति स्थापित
की जाती है।"
"क्या वास्तव म मनुष्य विराट का सामना करता है।"
"सामना" पापा ने आश्चय से पूछा।
'हा, जैसा अर्जुन न
किया था, उस समय उसे क्या अनुभूति हुई हागी ?
उस समय वह अपने को बहुत छोटा समझने लगता है उसमे लघुता
का एहसास जागृत होता है। उसे मनुष्य और देवता
का अन्तर समझ म आता है।"
"पापा हमारा जीवन दूसरे देशो की अपक्षा इतना मोया सोया
या सस्कारो के कोहरे मे क्यो लिपटा हुआ है। पश्चिमी
राष्ट्रा न जहा जम्बो जेट की भाति प्रगति की है
वहा हम आपको ऐसा नही लगता कि अभी
भी बैलो को रगकर उनके गले मे घटिया बाधे
चल रहे हैं। वहा का जीवन इतना सुखी और यहा

का जीवन ।"
मेरा वाक्य पूरा नही हुआ था कि पापा बीच मे ही
बोले, "यह तुम्हारा भ्रम है मनुष्य कही भी
पूणत' सुखी नही है। मानव और पूणत दो ध्रुवों
के शब्द हैं। मानव अपूण प्राणी है और रहेगा।"
"वहा की सुख सुविधा।"
"हमने भी भौतिक रूप मे बहुत प्रगति की है
लेकिन क्या जीवन मात्र सुख सुविधाओ का ही नाम
है। तुम्हे भी तो मैंने समस्त सुख सुविधाओ के
साथ रशिया मे रक्खा था फिर तुम
वहा से क्यो भाग आइ, माई डियर सुख-सुविधा
मानसिक विलासिता के शब्द हैं। हर देश म गरीबी
है। बेकारी है लेकिन अ तर इतना है कि
उन देशो ने युद्ध की विभीषिकाए देखी हैं उस
विभीषिका ने उ हें परिश्रमी बना दिया काल जैसे
कठोर हो गए वह। हमारे देश न कभी विस्तृत पैमान
पर युद्ध नही देखे प्रारम्भ से ही हमने आसानी से
जीना सीखा स्वाभाविक है कि हम म न काम के
प्रति उत्साह है न ईमानदारी।"
मैं पापा से कितने प्रश्न पूछती थी। पापा मेरे सभी
प्रश्नो का उत्तर देते थे मेरी प्रत्येक जिज्ञासा यहा
आकर शान्त हो जाती थी।
पिछले चार पाच महीने से पापा की जमनी जाने
की चर्चा जोरो पर थी पापा ने मुझे साथ ले
चलने का वायदा किया था।
उसी समय मैंने परीक्षा देने के लिए अवकाश लिया था
मैं एम० ए० (दशन शास्त्र) मे कर रही थी। पर
अनुभव कर रही थी कि मैं पढती कम हू पापा के साथ गप्पें
अधिक मारती हू।
कुछ भी करती हू
पर गोल्ड मैडिल खोने का इरादा इस बष भी नही था
मुझे विश्वास था मिलेगा ही।
यह मेरा चौथा गोल्ड मडल होगा।
पापा ने आकर एक दिन बताया कि वह सत्रह तारीख को
जमनी क लिए रवाना हो रह हैं।
मेरी प्रसन्नता का पारावार नही रहा मेरी परीक्षा नौ तारीख

को समाप्त हो रही है।
सात दिन की यात्रा थी।
मैं सात दिनों का बेस्ट उपयोग करना चाहती थी। एक
प्रसन्नता इस बात की भी थी कि जमन भाषा मुझे
बहुत अच्छी आती थी। मैं जमन साहित्य और वहा
की सस्कृति के सम्बन्ध म ज्यादा स ज्यादा
जानना चाहती थी।
मेरे जमन प्रोफेसर न मुझे प्रो० स्मिथ का पता
उनके नाम एक बहुत प्यारा सा पत्र दिया था। प्रो०
स्मिथ जमन साहित्य के बहुत बडे विद्वान थ इसी के
साथ वह जिन्दा दिल और हसमुख व्यक्तित्व के
मालिक भी थ। उन्होंने मुझे बताया कि दो सौ
वष पूव जमन साहित्य का एक शानदार अध्याय
प्रारम्भ हुआ था। जमनी मे सस्कृत और भारतीय
साहित्य क अध्ययन की भव्य परम्परा भी रही है।
प्रो० स्मिथ से बातें करना एक शाश्वत जीवन
जीने क बराबर था।
उन्होंने ही मुझे बताया कि यूरोपीय विद्वानो के लिए एक
नये प्रदेश का माग खुला और इस माग म
अवतरित हुई कालीदास की शकुन्तला। यूरोप के
रोमाटिक युग की शायद ही कोई घटना इतनी
प्रभावशाली रही होगी जितनी कि 'अभिज्ञान शाकुन्तलम
उन्होंने कहा कि इसक द्वारा मात्र जमन साहित्य की
ही वृद्धि नही हुई अपितु यूरोप क समस्त सस्कृत
क्षेत्र पर इसन अपनी एक अमिट छाप डाल दी।
अनुवादक का नाम था फोस्टर वह बहुत घुमक्कड
प्रवत्ति का था। शरद क उपन्यासो का भी एक प्रसिद्ध जमन
लेखक न अनुवाद किया है जो वहा प्रशसनीय मान
गय उस अनुवादक का नाम बहुत जोर डालन पर
भी आज स्मरण नही आ रहा।
प्रो० स्मिथ न बताया कि जमन के लेखको की प्रकृति
और मानवता स बडा प्रेम है। उन्होंने यह भी बताया
कि शाकुन्तल का फास्टर न पूव जमन अनुवाद एक एस
व्यक्ति द्वारा किया गया था जिसका हृदय विशाल एव
मृदुल था। उसन अनक कठिनाइयां झेलकर सस्कृत
भाषा सीखी थी। जमन क श्रेष्ठ कवि शिरोमणि ग्याय

ने शकुतला के विषय मे लिखा है—
विलस्ट डू डी ब्लयूटे प्रयूएन
डी प्रयुश्ट डेस श्पटेन यारेम
विलस्ट डू वास राइत्स्ट उट एटास्यूक्ट
विलस्ट डू वास सेटिग्ट उट नअट
विलस्ट डू डैन हिम्मल डी एअर्डे मिट आइनेम
नामेन वेग्राइफ्न
नन इश सक्रो तला डिश् उट सो डस्ट
आल्लेस गेसाग्ट।
यदि तुम यौवन के फूल और प्रौढावस्था क फल तथा
वह सब कुछ जो आत्मा को आनद की तप्ति और पोषण
देता है अर्थात स्वग और मृत्यु लोक दोनो को एक साथ पाना
चाहते हो तो मेरे मुह से सहसा एक शब्द निकल पडता है
शकु तला।
प्रो० स्मिथ न मुस्कराते हुए मुझ से कहा "जानती हो मनचली
आज भी शकुन्तला जमन और भारत इन दोनो देशो की
सास्कृतिक सम्बन्धो की श्रृखला की एक अत्यन्त
आकषक एव सुदढ कडी है।"
प्रो० स्मिथ की प्रेरणा से ही मैंन विख्यात जमन कवि
एमानुल गाइबल को पढा—उनकी प्रसिद्ध कविता
"बसत की आशा" पर मैंने प्रो० स्मिथ स दर तक
चर्चा की।
हम लोग पाच दिन जमनी म रहे। पाच दिन तक मैं
प्रो० स्मिथ के आगे-पीछे घूमती रही।
मन बार बार एक प्रश्न करता।
हम हमारे देश के विद्वानो के पास इतनी सहजता से
क्यो नही पहुच पाते। ज्ञान के बाहुल्य से छलकता
इनका व्यक्तित्व इतनी सहजता लिये होता है लेकिन हमारे
देश मे ज्ञान के साथ इतना अहम्?
चलते समय मैंने पापा से कहा—
"पापा मैं जितनी बार आपके साथ बाहर आती हू उतना
ही अपन को निर्बुद्ध और अज्ञानी समझन लगती हू।"
प्रो० स्मिथ के पत्र आज भी मेरे पास आते हैं
उनके पिछत्तरवें जन्म दिवस पर मैंने उन्हें बडा प्यारा-सा
जमन भाषा म ही पत्र लिखा था।
आज भी इच्छा करती हू कि एक बार वहा जाऊ उनके

हॉल म शकुन्तला का अभिनय देखू। आज भी
समस्त यूरोप उसे साहित्य की श्रेष्ठ सीढ़ी मानता है उसे
उसके ही देश म घूम घूमकर देखन की भी
मेरी बड़ी साध है।
हमारे देश मे क्या शकुन्तला अभिनीत होती है ? हो
सकता है यह मरा दुर्भाग्य हो मैंने कालिदास की नगरी
उज्जयिनी म भी शकुन्तला नहीं देखी।
वापिस लौटकर कई दिन तक जमन साहित्य पढन का
भूत सिर पर सवार रहा।
धीरे धीरे ममर गति मे वह लोप होता गया
शायद वह भी एक नशा था जो तेजी से चढा
था और तेजी से उतर भी गया।
अब तो यह भाषा पढने के लिए मुझे कितने समय
का अपव्यय करना पडता है। और आपके जाने के
उपरान्त तो मेरी सभी अच्छाइया दम तोड रही हैं
मात्र खोखले खडहर के रूप म मेर शरीर के अवशेष
शेष हैं, जिस चलती-फिरती लाश भी कह सकते हैं।

(12)

आज रात मुझे वापस चले जाना था। "पापा
एक वीक की छुट्टी और बढा लू ?"
'बढा लो।"
मैंने self sick का टलीग्राम आफिस म भेज दिया। पिछल
सात दिन से हिन्दुस्तानी खाना नहीं खाया था। ओ० के०
से कहा, "ओ० के० आज बहुत बढिया खाना बनाना।'
' आज मैं बहुत खाना खाऊगी।
और वास्तव म उस दिन डटकर खाना खाया पापा बाहर
बठे सिगरेट ही पीते रहे पता नही कब मैं अन्दर आकर
सो गई।
प्रो० स्मिथ की चर्चा मे कब सवेरा और कब रात हो
जाती पता ही नही लगता था। पापा भी प्रो० स्मिथ से

बहुत प्रभावित थे।
इन्ही सब बातो मे एक सप्ताह व्यतीत हो गया। पापा ने
जब मुझ बस मे बैठाया मुझे एकदम अच्छा नही लगा।
लेकिन मुने जाना ही था बस मुझे लेकर आगे बढ़ गई
और मैं दृष्टि से दूर होते हुए पापा का देखती रही।
वही पुराना श्रम।
पुन प्रारम्भ हो गया डाकिये की प्रतीक्षा पापा का
पत्र पढना फिर आफिस का काम देखना। अगले महीने
मेरा जन्मदिन पडता था 13 अक्तूबर फिर अगले
महीने जाने की इच्छा, आशा और तैयारी।
आने की देर नही,
कि,
मन जाने के ताने-बाने बुनने म व्यस्त हो जाता था।
पापा का पत्र मिला।
Next month your birthday comes and that is a very
important day for me You will please let me
know how and where you would like to celebrate
it I would feel happy to arrange what ever
would please you Please write to me in details
in this connection

मेरी इस बार कन्याकुमारी जाने की इच्छा थी पर पिछले
माह ही हम जमनी से लौटे थे। अत घुमा फिरा कर
पापा को पत्र लिखा जिसम अपने जाने की इच्छा
तो जाहिर की लेकिन साथ म यह भी लिख दिया
कि अगर आपको किसी भी प्रकार की परेशानी हो
तो हम आगामी वर्ष जायेंगे।
उत्तर आया "I have many time admitted that
you have a gift of writing you can
therefore express in words what you feel in
your mind"

और उस वर्ष हम सपरिवार विवेकानन्द राक देखने गये
क्या शान्ति थी अद्भुत रम्यता थी। एक सुखद
अनुभूति साथ लेकर लौटी थी। बहुत दिनो तक
मस्तिष्क म स्वामी विवेकानन्द का चित्र घूमता रहा।
उनका जीवन उनके आदश, हम क्यो नहीं उन्हें
जन जीवन मे घुला लेते, उनके करीब क्यो नही

पहुच पाते। कमी है तो कहा है ?
मानव मन तर्कों का शास्त्र ही नही खजाना
भी है। जब तक जीवन रथ का चक्र घूमता
रहगा तब तक मानसिक उडाना का अत
नही आयगा।
'पापा साधारण मनुष्य क्या नियति, स्थिति और व्यक्ति
इन तीना क परस्पर सघप म सकल्प के सहारे
विजयी होकर दूसरे को दिशा दे सकता है ?"
आपन अपन हाथ का कप नीचे रखा और मुस्करा
दिय, फिर दूसरे क्षण गम्भीर होकर बोले, "मनचली
साधारण मानव एसा नही कर सकता। जो दूसरा को
दिशा देता है, जिसन युग का दिशा दी है उसको
जानती हो ?"
पापा की गम्भीरता देखकर मैंन नकारात्मक रूप म
सिर हिला दिया।
'उसका नाम है जनादन कृष्ण।"
'आपको कृष्ण " कुछ रुक कर मैंन पूछा, 'सवश्रेष्ठ
लगत हैं।"
'मेरा व्यक्तिगत मत ही नहा, वह श्रेष्ठ है, श्रेष्ठतम है।
वही कह सका—

नन छि दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक
न यौन कलेदय त्यापो न शोपयति मारुत ।

इस आत्मा को शस्त्र काट नही सकते। इसको आग
जला नही सकती। इसको जल गला नही सकता और
वायु सुखा नही सकती।
' पापा यह तो ठीक है पर आपको यह नही लगता कि
कृष्ण ने जबरदस्ती युद्ध कराया उनकी दष्टि मे क्या
और कोई माग नही था। सौहाद और प्रेम का रास्ता
अगर वह चाहते ता क्या नही निकाल सकते थे।'

'स्वधमयदि चावद्वय न विकम्पितुमहसि।
धम्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्ष प्रियस्य न विद्यत ।।

यह उस काल, उम युग की आवश्यकता थी जब कृष्ण
कमयोगी बनकर पृथ्वी पर आय थे उन्हान अपना

काय पूरा किया। उन्होंने अजुन से ऐसा नही कहा कि तू युद्ध मे विजित होगा उन्होंने यही कहा कम करना तुम्हारा अधिकार है तुम कम करो फल की आशा मत रखो। कम न करने के प्रति कभी आसक्त मत होओ और तभी वह कह सके—

"कमण्येवाधिकारस्ते या फलेषु कदाचन।
या कमफल हेतु भूर्मा ते सगो अस्त्व कमणि॥"

मनुष्य के जन्म लेने के उपरान्त, उस कर्मों को किए बिना निष्कमता प्राप्त नही होती और न ही कर्मों के त्याग मात्र से कोई सिद्धि प्राप्त होती है।

"न कमणामनारम्भा नैष्कम्य पुरुषा अश्नुव
न च स यसनादेव सिद्धि समधिग्रेच्छति।"

"पापा, आपको पूरी गीता कठस्थ है मुझे क्या नही होती।"
'तुमने सस्कृत म कभी रुचि ही नही ली। सस्कृत और सगीत पता नही क्यो तुम पढना जानना नही चाहती।" या तुम्हारी प्रकृति को रास नही आता।
"प्रकृति शब्द का क्या अथ है?'
पापा मुस्करा दिये— 'जन्म जन्मान्तर म किये हुए कर्मों के सस्कार जो स्वभाव रूप म प्रकट होते हैं उसका नाम प्रकृति है, अर्थात उस स्वभाव का प्रकृति कहते हैं।"
"क्या ज्ञानी पुरुषो का स्वभाव या प्रकृति भिन्न होती है।"
"जरूर सबके स्वभाव भिन्न भिन्न होत हैं, पूव साधन और प्रारब्ध के भेद से स्वभाव म भिन्नता होना अनिवाय है।"
"पापा आप हमेशा कहते हैं कि 'स्वधर्मे निधनश्रेय परधर्मो भयावह।' आपको नही लगता कि यह जातिवाद धमवाद की सकीणता बोल रही है।"
"नही तुम इसका गलत अथ लगा रही हो यह तो इसलिए कहा गया है कि मानवीय मन दृढता और सयम सीखे किसी भी प्रकार की आपत्ति आन पर वह अपन धम से न डिगे अपनी मानवता मे न डिगे। एक बार किसी के लिए भी उसमे यह दृढता आ गई तो वह सच्चा इन्सान बन जायगा और जब

वह इन्सान नहीं अर्थों म था जायेगा तो वह
समय हो सकेगा अपन परिवार, समाज और देश की रक्षा
करने के लिए। इन्सान दृढ़ नहीं है तभी तो अवतारों का
अवतरण होता है। स्वय कृष्ण न कहा है,

"यदा यदा हि धमस्य ग्लानिभवति भारत।
अभ्युत्थानम धमस्य तदात्मान सृजाम्यहम्॥"

अर्थात जब-जब धम की हानि और अधम एव
अविवेक का प्रभुत्व चारो ओर फैलन लगता है तब मैं
साकार रूप म अर्थात मानवीय रूप मे जन्म लेता हू।
मनचली, विवेकहीन, श्रद्धारहित एव सशयमुक्त मनुष्य
परमाथ से भ्रष्ट हो जाता है तब ऐसे मनुष्य के
लिए जीवन दुख का सागर बन जाता है वह न अपना
लोक सुधार सकता है न परलोक।"

"अनश्चाद्धानश्च सशयात्मा विनश्यति,
नाय लोकोअस्ति न परो न सुख सशयात्मन॥"

मुझे अचानक पापा का एक वाक्य याद आ गया जो
उन्होने मुझे रेणु के प्रेम-प्रसग का लेकर लिखा
था। पूरा सदभ तो याद नही पर वह वाक्य बहुत
अच्छा लगा था, इसलिए रट गया था,

'My dear love does not admit even a shadow of
doubts The faintest doubt turn the head of lover if
he is really a lover not merely
opportunist"

सशयात्मक जीवन का भार लेकर परलोक की क्या
बात है पथ्वी पर जीना दुष्कर हो जाता है।
सच है।
ओ० के० न आकर बताया कि साढे ग्यारह बज
चुके हैं।
'चलिये आप स्नान करन जाइये।"
पापा का स्वभाव था वह बारह महीने दोना समय स्नान करत
थे। सवेरे आफिस जान से पूव और रात का भोजन से पूव।
हमारा रात का भोजन प्राय बारह साढे बारह के
मध्य हुआ करता था।

(13)

हमारे आफिस मे नय डायरक्टर न काय भार सभाला था।
नौकरी म अब कोई रुचि नही रही थी। एक अहम
था जिसकी तुष्टि पूर्ण हो चुकी थी सच तो यह था
कि अब नौकरी से चिढ़ होने लगी थी।
हालांकि मुझे ममो मिले दो वष समाप्त हो चल
थे अभी तक उनका कोई प्रत्युत्तर नही मिला था
लेकिन मेरे हृदय म एक रेखा खिच गई थी। मैं
मन से प्रतीक्षा करती थी कि एक बार पापा अपन मुह
स कह दें कि मनचली बहुत हो गया अब तू नौकरी
छोड दे।
लेकिन मैं भूल जाती थी,
कि,
मैं ही उनकी पुत्री नही हू यह भी मेरे पिता हैं
नये सचालक न आते ही विभाग मे drastical
परिवर्तन किय। उसमे एक परिवतन यह भी था
कि मैं डिवीजनल आफिस इन्दौर से बुलाकर हैड
आफिस म रख दी गइ भोपाल म, भोपाल आकर
और पाच घण्टे की दूरी बढ़ गई। मेरे पास और
कोई विकल्प ही नही था।
मैं भोपाल चली आई।
नये सचालक महोदय बहुत अच्छे थे। काम और
कुछ नया करन की उमग, घिसी पिटी लीक स
हटकर कुछ करन का उत्साह और विश्वास
हम दो उपसचालक उनके बहुत करीब आ गय। पहली बार मैंन
पिछले पाच वष म आफिस मे दिल लगाकर काम किया
उसी समय समाज कल्याण की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदशनी
का आयोजन किया गया और मेरे स्टाल ने अन्तर्राष्ट्रीय
मच पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया मैं प्रसन्नता का हार
शीघ्रातिशीघ्र घर पहुच कर पापा के गले म डाल देना चाहती
थी, इसी वष मेरी एक पुस्तक को नेहरू लेनिन एवाड
मिला।
यह वष मेरी विजय का वष था
मैं दिन मे चांद से परिचय बढाने लगी।

हर तीसर महीने एक लेख भेजती रहू ।
सचालक ने उठकर मेरी पीठ थपथपाई ।
मैंने घर आते ही पापा को पत्र लिखा,
उनका प्रत्युत्तर

"I am very anxious to read your article in such a reputed magazine During last one year I had not a pleasure of reading any thing published by you It saddness me to know that you do nt feel writing I am not writer or poet and I can hardly claim that what I may say is correct, your idea of writing an article in foreign magazine is correct and welcome Please be careful in every thing concerning yourself"

इस वष भी प्रत्यक वष की भाति आफिसस काफ्रेंस पचमढी म हुई ।
इतन वर्षों म मैंने पहली बार Conference मे भाग लिया मैं अब कितनी
भी घर भागन के लिए अधीर रहू फिर भी अपने को
एक जिम्मेदार आफिसर समझने लगी थी । काम करने मे
उत्साह रहता था । किसी न सच कहा है कि काम
कराने वाला चाहिए ।
जीवन म पहली बार पाच दिन पचमढी मे पापा को
पत्र लिखन का अवकाश नही मिला । सात दिन के
उपरा त जब मैं भोपाल आई पापा के सात पत्र
मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे । उसमे एक पत्र हिन्दी का
था ।
पापा और हिन्दी म,
"तुम्हारा खत नही मिलने से मेरा मन उदास हो
जाता है मैंने तुम्ह लिखा था कि तुम मुझे खूब
खत लिखा करो पर तुमन मेरी नहीं सुनी । तुम्हारे
ज्यादा खत आन मे मैं तुम्हारे खतो को पढकर
बार बार मन का दिलासा देता हू, एक छाटे बच्चे
की भाति । तुम क्या जानो तुम्हारे खत मुझे कितन
अच्छे लगते हैं । मेरी जगह पर मेरे बदले अगर तुम
होती ता पता लगता तुमको कैसे समझाना चाहिए
मेरे ख्याल मे नही आ रहा ।
दूसरा पत्र,
"I booked a call today I talk to your servant, because you were not there Immediately I will go to port to see the working of ship and after immediately I returned to Ahd I

में परिचय बढान मे निमग्न थी कि महाराष्ट्र व० राज्य शिखा
से मेरी एक आर पुस्तक पर पाच हजार का
पारितोषक प्राप्त हुआ।
भारत, विदेश अधिकतर पत्र पत्रिकाओ
मे मेरे लेख होते।
ढेर सारी होती मेरी फैन मेल
मैं हर पत्र पापा को पढाना चाहती थी।
लेकिन,
कुछ ढेर सारी सुविधाओ के साथ सचालक ने मरा
अवकाश स्वीकृत करने की कसम खा ली थी। जब-जब भी
मैं घर जाने की बात करती तो वह पापा का नम्बर
बुक करा देते और मेरे हाथ मे एक नया प्रोजेक्ट
थमा देते महीन मे दो बार घर जाने वाली को दो-
दो महीने हो जाते। इस बार तो तीन माह से ऊपर
हो गये थे। मैंन बहुत गुस्म म पापा को पत्र लिखा
एक वही तो थे जिन पर मैं अपना प्यार ही
नही सारा गुस्सा भी उतार सकती थी।
वास्तव म मैं बहुत घबरा गई थी।
कुछ समझ म नही आता था, मेरे सभी प्राथना
पत्र फाडकर डस्टबिन मे पहुच जाते थे।
मैंने अपनी किस्मत को कोसते हुए पत्र लिखा। यही ब्रह्मास्त्र
था मेरे पास।
पापा का पत्र आया
"I can't complain against my fate Amongst very many
miseries it has given me the best award in your shape
I am very much thankful to my fate which has given
you to me In you I have got the best, as long
as this feeling lives alive in my mind There is
no reason for me to worry This feeling will
become permanent and if will end will me'

आफिस म एक अमेरिकन डैलीगेशन आया हुआ था।
उसी दिन मेरी एक टाक Women liberation पर
टी० वी० से प्रसारित की गई थी। मिसेज गोलवथ को
मेरी टाक बहुत पसन्द आई। वह अमेरिका की सम्माननीय
पत्रकार थी। उन्होंने मुझमे इसी विषय पर अपनी पत्रिका
Women के लिए एक लेख मागा। और मुझसे कहा कि मैं

हर तीसर महीने एक लेख भेजती रहू ।
सचालक न उठकर मरी पीठ थपथपाई ।
मैंन घर आते ही पापा को पत्र लिखा,
उनका प्रत्युत्तर

"I am very anxious to read your article in such a reputed magazine During last one year I had not a pleasure of reading any thing published by you It saddness me to know that you do'nt feel writing I am not writer or poet and I can hardly claim that what I may say is correct, your idea of writing an article in foreign magazine is correct and welcome Please be careful in every thing concerning yourself"

इस वप भी प्रत्येक वप की भाँति आफिसस काफ्रेंस पचमढी म हुई।
इतन वर्षों म मैंने पहली बार Conference मे भाग लिया मैं अब कितनी
भी घर भागन क लिए अधीर रहू फिर भी अपने को
एक जिम्मदार आफिसर समझन लगी थी । काम करने म
उत्साह रहता था । किसी न सच कहा है कि काम
कराने वाला चाहिए ।
जीवन म पहली बार पाच दिन पचमढी म पापा को
पत्र लिखन का अवकाश नही मिला । सात दिन के
उपरान्त जब मैं भोपाल आई पापा के सात पत्र
मेरी प्रतीक्षा कर रहे थे । उसमे एक पत्र हिन्दी का
था ।
पापा और हिन्दी म
"तुम्हारा खत नही मिलने से मेरा मन उदास हो
जाता है मैंन तुम्हे लिखा था कि तुम मुझे खूब
खत लिखा करा पर तुमन मेरी नही सुनी । तुम्हारे
ज्यादा खत आने म मैं तुम्हारे खतो को पढकर
बार बार मन का दिलासा देता हू, एक छोटे बच्चे
की भाति । तुम क्या जानो तुम्हारे खत मुझे कितन
अच्छे लगते हैं । मेरी जगह पर मेरे बदले अगर तुम
होती तो पता लगता तुमको कैसे समझाना चाहिए
मेरे ख्याल म नही आ रहा ।
दूसरा पत्र,
"I booked a call today I talk to your servant, because you were not there Immediately I will go to port to see the working of ship and after immediately I returned to Ahd I

will again telephone you on Monday evening I have no doubt that you would be doing everything nicely and effeciently"

तीसरा पत्र

"Today is Monday and I have already booked a call to you when it materialises I will speak with you as I do on every Sunday"

चौथा पत्र

'I always remain worried about you"

रेणु और रेखा की शादी के उपरान्त पापा मे कही कोई अन्तर नही दिखाई देता था
लेकिन, मैं जानती थी कि रेणु को लेकर उनके हृदय मे अत्यधिक पीडा है वह अन्दर ही अन्दर बहुत अधिक व्यथित थे। वह प्रेम विवाह क विरोधी नही थे लेकिन रेणु ने जो जीवन साथी चुना था वह उससे कभी भी आश्वस्त नही हो सके। कोई ऐसी पीडा थी जो उन्हे अन्दर ही अन्दर खाये जा रही थी।
पचमढी से आकर मैंने उन्हें बडा प्यारा सा पत्र लिखा। उन्होने एक पक्ति म उसका उत्तर दिया।

My faith in you is unshakable

मेरे जीवन की सबसे मूल्यवान पूजी है उनका यह पत्र उनके यह शब्द।
मेरा अवकाश स्वीकृति नही हो रहा था और अब मेरे लिए यहा रहना असभव हो गया था। घर की, पापा की बहुत याद आ रही थी मैंने कई बार अपने डायरेक्टर से अनुनय की लेकिन उन्होने भी शायद न सुनने की कसम खा ली थी।
मेरे सयम का बाध टूट गया।
एक दिन कैज्युल लीव लेकर मैं घर मे ही लेटी रही।
मेरा सिर घूम रहा था।
अब मैं शीघ्रातिशीघ्र पापा के पास पहुच जाना चाहती थी।
इस कैद म मेरा दम घुट रहा था। पहली बार अहम्, स्वाभिमान सब कुछ छोडकर मैंने पापा को

पत्र लिखा कि मैं नौकरी छोडकर आ रही हू
क्योकि मुझे विश्वास हो गया था कि अगर मैंने
नौकरी छोडने की बात नही लिखी तो पापा कभी
नही कहेगे कभी नही लिखेंगे। नौकरी करने की
जिद मेरी अपनी थी।
पापा का उत्तर मिला

"I have already advised you that you
can take long leave and come here You can
always come here any moment you feel like coming
You have been given every thing that a girl of your
caliber and st_tus should have and that you should
feel happy"

पापा ने resign कर दो ऐसा नही लिखा।
ठीक है, मै नही जाऊगी।
अक्तूबर का अतिम सप्ताह था, पापा का पत्र आया—

"My offic work has again increased owing to openig so many
Porls in Gujrat I may go to Porbunder Magdula, Rozi,
Veraval for a day or so In anycase I must avail leave to be
with you on 13th October i e why I am trying to finish my
urgent tours I am anxious to meet you You are the only
soul which I posses and I do not want to suffer"

इसी बीच एक रसिक प्रवत्ति के ज्वाइन्ट डायरेक्टर साहब
हमारे विभाग म आये। उनकी ओर से मेरी प्रत्येक
फाइल पर नोटिंग होता प्लीज स्पीक
एक दिन मैं अपने को सयत नही कर पाई और फाइल
खीचकर उनके मुह पर दे मारी फिर क्या था सारे
आफिस मे तूफान आ गया। एक ममा से तो जान
छूटी थी दूसरा मिल गया। मन खिन्न हो गया। रात को
बैठकर पापा को बहुत बडा पत्र लिखा।
पापा का उत्तर मिला—

"You have also your strength and you do not belong to the
breed of cowards You have been provoked to a fight and
you must fight without worrying about the out come The
fight has not as yet started only you receive a challange
You have to accept it courageously You should not stop
on the way only because there is a daugerous bridge a

head When you reach that bridge you will certainly be able to cross it Do your present job without worrying these memos You know that you are not alone you had never been alone You must have respect to your honesty and sincerity and they are not small virtues My dear child my greatest revange would be forgiveness please remember do write regularly Your letter is the only happy event in my daily life"

(14)

कल के पापा के पत्र से पता चला कि वह 9 दिसम्बर मे
बेल्जियम जान वाले हैं। उन्ह 11 तारीख को ब्रुसेल्स
पहुचना है।
मैं तो वैसे ही झल्लाई बैठी थी। सीधी डाक्टर के
पास गई डाक्टरी सर्टिफिकेट देकर छुटटी ली। हैडक्वाटर
छोडन की स्वीकृति
भोपाल से भाग कर जब घर पहुची तो पहले तो पापा
से लिपट कर खूब रो ली। यह रोना सभवतय पापा
के सामन प्रथम और अतिम था। पापा से भी अधिक
मुझे आश्चय हो रहा था कि म रो भी सकती हू
यहा आकर मैंने एक महीने की छटटी apply कर दी
उसक साथ ही मेडीक्ल सर्टिफिक्ट भी भेज दिया।
नौकरी करते करते मुझे सात वप हो गये थे।
हम ग्यारह तारीख का तीन बजे ब्रुसेल्स हवाई अडडे पर
उतरे। मौसम बहुत खुशबदार था।
यहा फ्रेंच और डच भाषा बाली जाती है फ्रेंच मे
टूटी फूटी बोल सकती थी लेकिन डच स एकदम
अपरिचित।
नया शहर नये लोग।
पहली बार कोइ दुभाषिया नही था मेरे साथ।
किसी परिचित का पता नही।
सब कुछ अजनबी।
हम भी वह भी।
पापा न बाहर जाते समय मुझे यहा के सबसे पुराने और

शानदार चौक ग्रैण्ड प्लेस म उतार दिया । मैंने पापा
क मुह से ही सुना था कि यहा एक ऐसा विश्व-
विद्यालय है जहा आज भी मुफ्त पढाई होती है
मैं उसे देखना चाहती थी ।
पूछन पर पता चला कि वह आज ब द है । मैं सारा
दिन शहर का चक्कर लगाती रही वही एक सज्जन से
भेंट हो गई पूछने पर पता चला कि वह स्टेटिक्स
का अध्ययन कर रहे हैं उनका नाम था मि० क्लोरो
बहुत शीघ्र ही हम दोना दोस्त बन गये । उ होन बताया
कि उनके पिता डच थे और मा इग्लिश इसीलिए
वह फ्रेंच और डच के अतिरिक्त इग्लिश भी अच्छी
बोल लेते थे ।
उन्होंने बताया कि ब्रुसेल्स विश्व का सबसे
जिंदा दिल शहर है । जहा हम घम रह थ वहा
ढेरो मल्टी स्टोरी बिल्डिगें थी और चौक म
अनगिनत रग बिरगे फूलो की दुकानें ऐसा प्रतीत
होता था कि हम किमी बहुत खूबसूरत फूलो के
उद्यान मे घूम रहे है ।
एक न हे बच्चे की बनी ताबे की प्रतिमा देखी मि०
क्लोरा ने मुझे बताया कि यह सत्रहवी शताब्दी मे
निर्मित की गई है और यहा के लोगो की मा यता
है कि यह ब्रुसेल्स का सबसे पुराना निवासी है ।
दूसरे दिन मैं और पापा वह ऐतिहासिक स्थान
देखने गये जिसे वाटर लू कहा जाता है ।
सदा अपनी विजय के झडे गाडने वाला नेपोलियन
इसी स्थान पर गेवाड ब्लूम्यर और ब्रिटिश आर्मी
से पराजित हो गया था । नेपोलियन की पराजय की
गाथा कहती हुई क्लात और उदास धरती मानो
स्तब्ध हम निहार रही थी ।
ड्यूक आफ वेलिंगटन का महल, ली, कालियू का
अजायबघर तथा युद्ध म काम आये हुए छोटे मोटे
सेनानियों के मकबरो ने इस युद्ध की ऐतिहासिक
स्मतियो को आज भी गले लगा रखा है ।
मेरे ऊपर नेपोलियन का बडा प्रभाव है इग्लिश म
जब पढना प्रारम्भ किया तो सबसे पहले पापा ने

मुझे नेपोलियन के दस वाल्यूम उपहार म लाकर दिये
थे उन पर हमने महीनो चर्चा की थी। महीनो के
स्थान पर अगर वर्षों कहू तो भी अतिशयोक्ति
नही होगी।
आज यह स्थान देखकर उसके सम्बन्ध म ढेर सी
बातें मस्तिष्क क ओन कोन मे आकर खडी हो
गइ।
वहा से विदा लेते समय मन भारी था। एक बार
पुन उस ऐतिहासिक धरती को प्रणाम करन की
इच्छा थी। जिसन अपनी आखो से अपन वक्ष
पर पराजय होती देखी थी।
महान लोगो की विजय ही नही पराजय भी मन
को झकझोरने के लिए अत्यधिक सशक्त होती
है।
मेरे पास छुट्टी नही थी पापा ने बम्बई से सीधे
मुझे इन्दौर भेज दिया। इदौर एरोड्रम पर दस
बजे उतर कर मैं वहा से सीधी बस से
भोपाल के लिए रवाना हो गई।

(15)

विधान सभा प्रारभ हो चुकी थी मुझे रोज विधान
सभा की हाजिरी बजानी पडती थी।
मैं पिछले दो वर्ष से निरतर समाज कल्याण
मत्री से कह रही थी एस० आई० टी० एक्ट 1956
मे परिवतन होना चाहिए। उसके अन्तगत जो
रेड डाली जाती है वह कभी सफल नही होती।
कोट मे जाते ही मुजरिम साफ बच निकलता है
उसकी धारा 18 / (1) के अनुसार आप कभी भी
एक भी केस मे सफल नही हो सकेंग विभाग
के लिए यह शम की बात है।
इस कानूनी मुद्दे पर दो वष से विधान सभा

मे बहस होती मात्र बहस, ruled out
बस।
प्रकरण आगे बढता नही
यह कौन सी शासन प्रणाली है बडी खीझ होती
इतने परिश्रम और परसूएशन के उपरान्त जा हम
पुलिस डिपाटमेंट के सीनियर आफिसस को
राजी कर पाते हैं और जब प्रकरण कोट मे
जाता है तो पराजय के अतिरिक्त विभाग को
कुछ नही मिलता।
कभी कभी जीवन मे इतनी विचित्र और निरीह घटनाए
घट जाती हैं कि हम शून्यता म विस्मृत हो जात हैं
विधान सभा म उस दिन हमारे विभाग की
ही प्रश्नावली थी मैं करीब आठ बजे घर पहुची
मन्त्री महोदय से मुक्ति मिली। एक ठडी सास ली
गरम गरम चाय पीना चाहती थी कि टेलीफोन की घटी
ने शोर मचा दिया।
फोन था डी० आई० जी० का उन्होने एक रैड अरेंज
करवाई है। मतलब कि आज सारी रात खराब। मना
करन का प्रश्न नहीं था। रेड करने की जिद मैं ही
करती थी एक्ट के अनुसार तो मात्र सुपरिन्टेंडेंट का ही
काम है यह पर मेरे साथ डी० आई० जी० और ए० डी० एम०
सदा साथ रहते थे अत मना करने का प्रश्न ही नही था।
पौने बारह बजे डी० आई० जी० की जीप मेरे बगले के
सामने थी। मैं तो तैयार ही थी, जहा हमे पहुचना था
वह स्थान बीस बाईस किलोमीटर दूर था। रास्ते मे बहुत-
सी बातें व आज की विधान सभा की प्रश्नोत्तरी पर बातें
करते रहे S I T Act के amendment के सम्बन्ध मे
भी चर्चा आई। अचानक वह पूछ बैठे, आपने ब्ल्यू
फिल्मे देखी हैं?
शब्द ही अथ और अनथ करने की सशक्त एव पैनी
तलवार होते है। मैंने बडी जोर से कहा, "बहुत सारी"।
डी० आइ० जी० ने बडी विचित्र दष्टि से मेरी ओर देखा
उस दृष्टि से मुझे लगा कि कही मैंने बहुत बडी
गलती कर दी है। वह तो खैरियत थी कि उसके
कुछ पल के उपरान्त ही हम गन्तव्य स्थान पर पहुच

गए। नही तो पता नही जीवन का कौन सा अर्थ मुझे
उस रात समझना पड़ता।
तीन दिन बाद शनिवार था अपने मन्त्री महोदय को कहकर
कि सोमवार को मैं हर अवस्था मे वापिस आ जाऊगी
अहमदाबाद के लिए रवाना हो गई। बृहस्पतिवार और
शुक्रवार मैंने कितनी बेचैनी से काटे, आज भी
याद करती हू तो या तो अपनी अज्ञानता पर
शर्म आती है या अपनी बेवकूफी पर ग्लानि और
डी० आई० जी० नाम के पुरुष पर तरस।
ट्रेन से उतरते ही मेरा पहला प्रश्न था "पापा इनर
फिल्मस किसे कहते हैं ?"
पापा ने मुझे गौर से देखा फिर पूछा "आपको
इसकी क्या आवश्यकता पड गई ?"
उनका प्रश्न और उनकी दृष्टि देख कर मुझे
विश्वास हो गया कि मेरा प्रश्न सामान्य नही है
मेरे सम्मुख डी० आई० जी० का चेहरा घूम गया।
मैंने गाडी मे बैठते ही पापा को उस रात की
घटना ज्यो की त्यो सुना दी।
"घर चलो" मेरे पुन पूछने पर उन्होंने उत्तर
दिया।
जब उन्होने मुझे अर्थ बताए तो मैं शर्म से गड गई।
अच्छा हुआ, पापा आफिस चले गये नही तो उस दिन
क्या मैं पापा की ओर देख सकती थी ?
वापिस आने के उपरान्त मैंने डी० आई० जी० की
मीटिंग मे जाना छोड दिया मेरे पास उनसे दृष्टि
मिलाने की शक्ति नही थी। वह तो मेरा
भाग्य था कि पाच छ महीने के भीतर ही उनका
ट्रासफर हो गया सुना कि उनकी पोस्टिंग
कश्मीर मे हुई है।
आज भी जब उस घटना की याद आती है तो रोए
खडे हो जाते हैं। अनजान मे कभी कभी कितने बडे
अनर्थ हो जाते हैं।
हालाकि किसी भी प्रकार की शक्ति-प्रदर्शन का
जीवन मे मेरे लिए यह पहला ही अवसर था।
फिर भी मन मे ग्लानि तो थी। डी० आई० जी०

के प्रति रोष भी था उन्होंने साहस कैसे किया
इस प्रकार के प्रश्न पूछने का ?
पापा को फिर मैंने अपने आफिस की कुछ परशानियो के बारे म
लिखा होगा । उनका उत्तर आया—
"I have already spend lakhs and lakhs to preserve your
future prospects but nothing has come out in the way
it should have It is better now you should resign
and come back"
पढकर पहले तो बहुत गुस्सा आया । फिर सोचा ठीक ही तो लिखा
है पापा ने । उनका दु खी होना स्वाभाविक था वह
चाहते थे कि मैं लखनऊ म ही रहू वही रहकर
डाक्टरेट करू । मैंने नही माना । एल० एल० बी० पास
किया तो कितना समझाया, एल० एल० एम० करके प्रैक्टिस
करू पर नही की मैंने । कितनी कठिनाई से पीट्सबग
विश्व विद्यालय मे प्रवेश दिलाया वहा से भाग आई
समाज कल्याण विभाग मे नौकरी करी कितना दुखी हुए
वह लेकिन उन्होने ही समझौता किया मेरी जिद से
पिता होकर भी उन्होंने ही सदा मेरी बात मानी ।
बेटी होकर मात्र जिद करन के अधिकार का ही मैंने
प्रयोग किया । क्या कभी किसी इच्छा की पूर्ति
की मैंने ?
नही ।
नौकरी भी नही कर पाती ।
आज वह नही हैं । कुछ भी सोचू सब निरथक लगता
है, उनके सम्मुख क्या कभी मैंने अपने को पहचानने
का प्रयत्न किया है ?
कितना प्रमुत्व दिया था उन्होंने मुझे परिवार मे ।
उदास बैठी पुराने पत्रो का पढ रही थी एक
और पत्र हाथ मे आया । जब रेणु और अनिल
पढते थे ।
उन्हे भी मै उनकी कल्पना के अनुरूप नही बना पाई ।

'I am very happy to read in your letter of 25th that
children are sincerely studying under your affectionate
guardianship They will grow well in every respect I have
no doubt about it We are giving them almost

everything that is required I am sure that your affectionate treatment to them has created a feeling and a desire in them to achieve what we want them to achieve for their own bright future"

जब ऐसे पत्र पढती हू तो आत्मग्लानि के
भार से स्वय को कुछ क्षण के लिए मुक्त पाती हू। निश्चय ही मैंन अपन
परिवार के लिए अथक परिश्रम किया। बस एक
ही मेरी व्यक्तिगत कमजोरी थी कि उनसे दूर
रहना मुझे अच्छा नही लगता था।

☐

"पापा, देखिए आज मैं अपने हाथ से आपके लिए
चाय बना कर लाई हू।"
"Thank you" पापा मुस्करा दिए।
उस समय पापा कण पढ रहे थे।
चाय का प्याला उनके हाथ मे देते हुए मैंने
पूछा, "एक बात बताइये कौरव इतने शक्तिशाली
थे समस्त देशो के राजा व उनकी सेनाए उनके साथ
थी फिर वह लोग कैसे पराजित हो गये ? कृष्ण क्या
कोइ जादुई पुरप थे ?"
"नही यह बात नही कृष्ण शक्तिशाली भले ही न हो
पर सयमी और दढ विचार वाले योद्धा थे।"
"फिर"
कौरव पक्ष का प्रत्येक व्यक्ति व्यक्तिवादी था। वह
समूह का या समाज का विचार करने को तत्पर नही
था।' एक क्षण रुक कर पुन बोल ' भीष्म पितामह
इतने बडे थे कौरवो की सेना के वयोवृद्ध सेनानी
परन्तु वह अपने व्यक्तिगत मैं' को लेकर अत तक
स्थिर रहे 'मैं शिखण्डी से युद्ध नही करूगा।"
यह उनकी प्रतिज्ञा थी। सेनापति के जीवन म व्यक्तिगत
प्रतिज्ञाओ का कोई महत्त्व नहीं रहता उसके लिए

कर्त्तव्य महत्त्वपूर्ण होता है। इसी प्रकार द्रोणाचार्य को अपने पुत्र से अगाध स्नेह था पुत्र की मृत्यु की सूचना मिलते ही वह युद्ध भूमि से हट गये। सेनापति अगर पुत्र के मोह मे डूब जाएगा तो युद्ध क्या करेगा ? सेनापति के लिए युद्ध भूमि म भाई, बहन, पत्नी, पुत्र, मा इन सब का कोई स्थान नही है। इसी प्रकार कर्ण अपने कुण्डल और कवच द्वारा अजय था उन्ह कुन्ती को देकर वह व्यक्तिगत जीवन म दानवीर कर्ण तो बन गया लेकिन जिस पक्ष के साथ वह था उनका भला नही कर पाया। कौरव पक्ष म एक से एक बढकर महारथी थे लेकिन प्रत्येक को अपने नाम की चिन्ता थी समूह की नही समाज की नही। पाण्डवो को कभी अपने व्यक्तिगत नाम का प्रलोभन नही हुआ। श्रीकृष्ण उनके नेता थे और उनके नेता ने जो आज्ञा दी, उसका उन्होने अक्षरश पालन किया। युधिष्ठिर जैसे धर्मात्मा से जब कहा गया बोलो "कुजरो वा नरोवा तब उन्होने वही कहा। अर्जुन से कहा गया भीष्म पितामह पर शिखण्डी को सामने रख बाणो का प्रहार करो। कहने का तात्पर्य यह कि पाण्डवो ने जिसको नेता माना उसकी आज्ञा पूर्णत पालन करी और नेता न व्यक्ति को नही समाज को, अपने कर्तव्य को ध्यान मे रखा।"

'कृष्ण वास्तव मे भगवान थे पापा ?"

'अगर हम उन्ह भगवान मान भी लें तो उसमे हमारा नुकसान क्या है ? वह निश्चित रूप से असाधारण व्यक्ति तो थे ही। उनके जन्म से लेकर, बाल्यकाल की विविध घटनाए पूतना वध, शकर वध, यज्ञ मुक्ति चीर हरण, गोवधन लीला, कस का वध अग्रसेन की मुक्ति, मथुरा मे जनतन्त्र की स्थापना यह सब सामान्य काम नही थे। फिर

नैन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैन दहति पावक

सस्कारो प्रेरणाओ और यथार्थता का मार्ग उन्होंने ही प्रशस्त किया। उन्होंने एक सशक्त युग की रचना की, ऐसे मानव को अगर भगवान ही मान लिया जाए

तो अत्युक्ति कहां है ? इन सबके उपरान्त नख म शिख
तक उनका स्वय का "पवित्रत्व व"दनीय ही रहा है"
"रामायण के उपरान्त महाभारत की रचना हुई "
पापा बीच म ही बोले, "रामायण मात्र आदर्शों की
पुस्तक बन गई थी । धरती पर जीन वाले पात्रा की
उसम कमी थी । भावनात्मक और श्रद्धात्मक दृष्टि
मे वह आकाश को छू सकती है पर मानवीय जीवन
की सहजता व मानवीय मन की दुरूहता को नही ।
उस सहजता और दुरूहता को महाभारत के पात्रा न
पहचाना, दम्भ, क्रोध साम, दाम, दण्ड, भेद, राग
लिप्सा, द्वेष महाभारत मे सभी का प्रवाह समान
है । महाभारत का एक भी पात्र कोरे आदर्शवाद
म नही जीता चाह वह पितामह भीष्म हो, द्रोणाचाय हो,
कृपाचाय हो, धतराष्ट्र हो, कुन्ती हा, द्रौपदी हो, अर्जुन
या कृष्ण हो उन्होने मानवीय जीवन जिया है धरती पर
उत्पन्न होने के सुख दुख सहे हैं ।
ओ० के० ने आकर बताया कि पापा से मिलन कोई
आया है । स्वाभाविक है हमारी चर्चा उस दिन वहीं
रुक गई ।

□

' आज क्या पढ रहे हैं आप ?"
"खलील जिब्रान !"
"आप इसको इतना क्यो पढते हैं ?'
"बठो, सुनो"
मैं पास ही कुर्सी खीच कर बैठ गई ।
"Of the first look के बारे मे यह लेखक क्या
कहता है, "It opens eternity's secrets of the future"
good सच लिखा है ।
और सुनो wisdom के बारे म जिब्रान क्या लिखता
है, ' Kuwwledge is your true patent of nobility, no

matter who your father or what your race may be"

मैं खडी हो गई।
"कहा जा रही हो बैठो।"
"मैं डायरी और कलम ले आऊ।" पापा जब भी
कुछ एसी महत्त्वपूर्ण बात करते मैं अपनी डायरी म
नोट कर लेती थी।
आज मात्र उन डायरिया का देखती रहती हू।
"सुना सगीत के बारे म जिब्रान क्या कहता है
"Music is the languag. of spirits, with the eyes of my hearing I saw my beloved s heart"

सगीत कितना आनन्द का विषय है, मेरी इच्छा
है कि तुम अपनी थोडी सी रुचि सगीत म उत्पन्न करो
तुम स्वय का ही कितना प्रफुल्ल पाओगी। सुनो अब ज्ञान
के सम्बन्ध मे वह क्या कहना चाहता है—
Learning is the only whealthd tyrants can't despoil only death can dim The lamp of knowledg that is with in you The true whealth of nation lies not in its gold and silver but in its learning wisdom and in the uprightness of its soul"

और अब वह कहता है शादी के बारे मे।"
अचानक पापा ने किताब बन्द कर दी। धीरे से बोले
"मनचली अब तुम शादी कर लो।"
"क्या?'
"देखो मनचली, आज तक तुमने जीवन म जो कुछ भी
करना चाहा मैंने तुम्हे कभी नही रोका, मैं चाहता हू
कि अब तुम यह निणय ले लो।"
"मैं आपको बुरी लगने लगी हू।'
"Don't be silly"
"बोझ बन गई हू।"
"तुम यही समझ पायी?"
"मैं आपसे कह चुकी हू कि आप इस विषय को मत
निकाला कीजिए। I don't want to marry"
"एक बात जानती हो मनचली।"
"कहिए" मैं चिढकर बोली।

"प्रेम के बिना जीवन व्यथ है। वैराग्य क बिना ब्रह्म-
विचार व्यथ है। भक्ति के बिना योग व्यथ है।
श्रद्धा के बिना जप व्यथ है और प्यार के
बिना सुदर देह व्यथ है।"
"पूरा हो गया आपका उपदेश।"
"उपदेश नही, जीवन की सच्चाई है।"
'मैं आपको छोडकर कही जाने वाली नही। मेरा प्रेम, मेरा
वैराग्य, मेरी भक्ति, मरी श्रद्धा, मेरा जप, मेरा प्यार सभी
कुछ यही है।"
"मनचली, ऐसा न हो कि कभी आगे जाकर तुम्हे अपनी
भूल का एहसास हो। जानती हो इस जीवन का बहुत महत्वपूर्ण
स्थान है स्त्री के जीवन म। पति का प्यार स्त्री की
नितात अपनी एक व्यक्तिगत सुखद अनुभूति होती है उसके बिना जीवन
अधूरा होता है। स्त्री के लिए यह प्रेम एक वरदान
है। सत्य है और सत्य ही अजय वाग्मिता है, मित और
सत्य।

"मित च सत्य च वचो हि वाग्मित यौवा मे"

साधारणतया अहकार और अविनय का प्राबल्य देता है।"
'आपको मुझ मे अहकार और अविनय का प्राबल्य लगता
है?" मैं चिहुक उठी।
"नही बेटा' जानती हो दुख उत्पन्न होता है अज्ञान से
और अज्ञान आदतो का दूसरा नाम है। जो आदत या हठ
आज तुम छोडने को तैयार नही वही कल तुम्हारे लिए
पीडादायक बन जाएगी फिर एक बात और समझ लो
प्रेम किसी व्यक्ति विशेष तक सीमित नही रहता वह तो
एक वृत्ति है, चरित्र की एक दिशा है पिता के प्रति
प्रेम और पति के प्रति उदासीनता वास्तविक प्रेम न होकर
एक सहजीवी सम्बध है। प्रेम म सबकी चिता रहती है
और जो ऐसा नही करता वह प्रेम का अथ समझता
ही नही। कामाग्नि को दबाकर मनुष्य पागल हो जाता
है जिस प्रकार बढाकर दयनीय, लेकिन प्रेम इन दोनो
स्थितियो से परे है। प्रेम के प्रभाव मे ज्ञान का
बाध टट जाता है प्रेमी ही परम योगी तत्व को
प्राप्त करता है। प्रेम मे न कोई रेखा होती है न

कोई ब-धन इसके उपरात भी अगर बुद्धि पहरा
लगाने की चेष्टा करे तो या तो मनुष्य पागल हो जाता
है या आत्महत्या के लिए विवश । यह सत्य है और
सत्य स बडा कोई धम नही । My dear not only culturaly and
traditionally marriage is essential "
"

बीच मे ही मैं जोर से चिल्लाई, "बस बस । न मैं
पागल होऊगी न मुझे पश्चाताप होगा और न ही मैं
आत्महत्या कर लूगी । न ही culturally और traditionally
marriage मेरे लिए essential है । अब कृपा करके आप
कभी इस सम्ब-ध मे चर्चा न करें ।
I hate this topic
"देखो ।"
"मेरा मरे का मुह देखें अगर आप कभी भी इस विषय पर
पुन कभी चर्चा करें I hate this topic
मेरा "
"Please stop it"
मैं बाहर से उठकर अ-दर चली आई थोडी देर बाद पापा
पुन अ-दर आए ।
मैं उस रात एक भी शब्द नही बोली उनसे जल्दी खाना
खाकर ऊपर सोने चली गई ।
इतवार को मुझ वापिस आना था । चलते समय मैंने कहा,
"पापा अगर आज के बाद आपने कभी भी यह चर्चा निकाली तो मैं
आपके पास कभी नही आऊगी । मुझे अपने पैरो पर खडे
होकर भी जि-दा रहना आता है । आप कभी मत भूलिएगा कि
मैं आपके बिना भी जी सकती हू ।"
पापा एक पल मेरा चेहरा देखते रहे फिर मुस्करा कर बोले,
"Don't be so excited my dear "
वापस लौटने के उपरात मैंने एक सप्ताह तक उ-हे पत्र नही
लिखा । उनके पत्र बिना नागा आते रहे ।
"It is not possible not necessary for me to press you but
with in my mind I have thousand of time acknowledged
to myself that in you I have got everything that I wanted
in a daughter/women/friend/disciple of my choice and liking.
My dear because I know your heart and mind so well I

love you"

पापा का दूसरा पत्र

'My work has started in full swing this year We will have very heavy imports I have to remain very watchful and tactful various developments are involved in handling foodgrains and such tactfulness is very essential The progress which I made in Gujrat has been appreciated all over India But I do not feel intersted in the work There are certain aliments which bothers me and make me sad It is a pity that many of us here an eye on personal gain unless thi aliments are drastically dealt with things would not improve'

तीसरा पत्र

"You have no body , truely I have nobody whom I would like to call mine Myself is yourself the moment that myself does not remain for yourself life will not continue Please do not try to bring things to such stage that without fully understanding what you wish may have to pack finally My longing to keep you superior was a real one"

चौथा पत्र

"I do not know whether any saint who also poet have written hindi devotional song Poem in which they have condemned criticise, curse and abused God and also please and praise him in the hope of his favour for altimate salvation In marathi there are many such saintly poets I seems to be doing similar thing in your respect I talk to you in many harsh and [illegible] way and then try to appease you with loy[illegible] History does not offer positive proof [illegible]ly poets had received favours f[illegible] wise I am unable to guess wha[illegible] my songs of her praise are only

by me I self defence, even than I will still be calling you as my Goddess"

पाचवा पत्र—

'It is bed luck for Rekha Now we must arrange for her marriage Educational progress in our family would come to stand still Last year every one failed and 50% could be salvaged in the supplementary atlempts This is not creditable to any modern enlightened family Rekha is a difficult and typical problem for us unfortunately she also makes things difficult for us That is why we must pay special attention on her"

रेखा यह मेरी तीसरी बहन का नाम बहुत जिद्दी
और कमजार व्यक्तित्व वाली लडकी।
समय इन्सान को कितना बदल देता है।
आश्चयकारी
आज की रखा और उस समय की रेखा मे आकाश
पाताल का अ तर।
पापा के पाच पत्र मुझे मिल चुके थे। मैंने पापा को एक पत्र
लिखा। तीन चार वाक्य ही लिखे थे अत उसके पीछे ही पापा
का उत्तर आया।
इसीलिए आज मेरा लिखा भी एक पत्र सुरक्षित है। काश कि मेरे सब
पत्र आज होते तो मुझे कितनी ग्लानि होती क्योकि जीवन भर
मैं उनसे झगडती रही। पान की कामना करती रही। मात्र कामना ही
नही एकाधिकार रहा मेरा उनके ऊपर। मैं पुत्री हू यह
दीनता तो मैंने कभी अपने पिता के सम्मुख की ही नही।
आज सोचती हू।
कि
काश एक बार मैं भारतीय पुत्री बनती मध्यकाल की।
प्रीत करना एक सक्रिय भावुकता है, कष्ट की सीमा
सम्भवत कोई आक नही सकता। काच फूटने की आवाज
बरतन गिरने की आवाज सब सुनते हैं मन प्रीति
विश्वास श्रद्धा के समन्वय की आवाज सुनते तो कोई कभी
भी किसी पर शब्दा का अत्याचार नही करता अन्याय

love you"

पापा का दूसरा पत्र

"My work has started in full swing this year We will have very heavy imports I have to remain very watchful and tactful various developments are involved in handling foodgrains and such tactfulness is very essential The progress which I made in Gujrat has been appreciated all over India But I do not feel intersted in the work There are certain aliments which bothers me and make me sad It is a pity that many of us here an eye on personal gain unless this aliments are drastically dealt with things would not improve"

तीसरा पत्र

"You have no body , truely I have nobody whom I would like to call mine Myself is yourself the moment that myself does not remain for yourself life will not continue Please do not try to bring things to such stage that without fully understanding what you wish may have to pack finally My longing to keep you superior was a real one"

चौथा पत्र

"I do not know whether any saint who also poet have written hindi devotional song Poem in which they have condemned criticise, curse and abused God and also please and praise him in the hope of his favour for altimate salvation In marathi there are many such saintly poets I seems to be doing similar thing in your respect I talk to you in many harsh and critising way and then try to appease you with loving letters History does not offer positive proof that these saintly poets had received favours from their God like wise I am unable to guess what my Goddessthinks my songs of her praise are only hallow words uttered

by me I self defence, even than I will still be calling you as my Goddess"

पाचवा पत्र—

"It is bed luck for Rekha Now we must arrange for her marriage Educational progress in our family would come to stard still Last year every one failed and 50% could be salvaged in the supplementary atlempts This is not creditable to any modern enlightened family Rekha is a difficult and typical problem for us unfortunately she also makes things difficult for us That is why we must pay special attention on her"

रेखा यह मेरी तीसरी वहन का नाम बहुत जिद्दी
और कमजोर व्यक्तित्व वाली लडकी।
समय इन्सान को कितना वदल देता है।
आश्चयकारी
आज की रेखा और उस समय की रेखा मे आकाश
पाताल का अन्तर।
पापा के पाच पत्र मुझे मिल चुके थे। मैंने पापा को एक पत्र
लिखा। तीन चार वाक्य ही लिखे थे अत उसके पीछे ही पापा
का उत्तर आया।
इसीलिए आज मेरा लिखा भी एक पत्र सुरक्षित है। काश कि मेरे सब
पत्र आज हाते तो मुझे कितनी ग्लानि होती क्याकि जीवन भर
मैं उनसे झगडती रही। पाने की कामना करती रही। मात्र कामना ही
नही एकाधिकार रहा मेरा उनके ऊपर। मै पुत्री हू यह
दीनता ता मैंने कभी अपने पिता के सम्मुख की ही नही।
आज सोचती हू।
कि
काश, एक वार मैं भारतीय पुत्री बनती मध्यकाल की।
"प्रीत करना एक सक्रिय भावुकता है, कष्ट की सीमा
सम्भवत कोई आक नही सकता। काच फूटने की आवाज
बरतन गिरने की आवाज सब सुनते हैं मन, प्रीति
विश्वास श्रद्धा के समन्वय की आवाज सुनते तो कोई कभी
भी किसी पर शब्दो का अत्याचार नही करता अन्याय

या अत्याचार शब्दों को जन्म ही नहीं मिलता। लगता है
पापा आप अन्याय का लौहदण्ड थामने में आजकल
अधिक रुचि लेने लगे हैं।"
पापा का पत्र,
'My dear I am living for you I have no one else
to care excepting you I had seen so many things
in my life but my life had not seen so many
things in one person as I see them in you to me
you are the best person in every respect There is
no doubt That you have already done too much
for family I admire you and I feel proud
about you What about me there is no body on this earth
who can dare to do unjustice towards you"

आते समय मैं बीना को अपने साथ ले आई थी। पापा रेखा
की शादी मई में कर देना चाहते थे उसके लिए
पापा ने लडका इन्दौर में ही पसन्द किया था। शादी में
तीन चार महीने ही शेष थे।
लडका बडा सौम्य एवं गम्भीर प्रवृत्ति का था। मैं और पापा ही
देखने गये थे।
"कैसा लगा।"
"मनचली, लडका बहुत अच्छा है अपनी रेखा के लिए ऐसे
ही लडके की आवश्यकता थी।"
मेरा मन अत्यधिक प्रफुल्लित हो गया क्योंकि यह
लडका मेरी खोज थी।

(16)

रेणु और रेखा की शादी तो हो ही चुकी थी मैंने
सोचा बीना का क्यों नहीं यहीं एडमीशन दिला दूं। हालांकि
मध्य सत्र भी समाप्त हो चुका था लेकिन अपने प्रयत्नों से
उसे भी मैंने इन्दौर बाल विद्यालय में प्रवेश दिला
दिया।

पापा का पत्र बीना के एडमीशन के उपरान्त

Bina and Anil this means you have taken educational responsibility of three children This is a very big responsibility and it shows your sincerity affection and anxiety which you feels towards brother and sisters many times your generousity remains un-understood by me Anyway I feel proud of you'

मैंने सबको एकत्र तो कर लिया था पर मेरा मन अब सर्विस से उचट गया था। शायद यही छटपटाहट मेरे पत्रो द्वारा पापा तक मेरे न चाहते हुए भी पहुच गई थी।
उन्होने मुझे पत्र लिखा—

"My dear manchali I do not want that you should continue to serve remaining away from me I know the sacrifice which you have been doing for me Advise I have given you plenty patience you have exercised as much as possible, now we have to reach a decision I know you well It is my request and firm decision please leave the job and come back Always and affectionately yours"

पापा के मन मे शायद अभी भी कही आशा थी कि रेणु डाक्टर बन जायेगी और अनिल लेकिन मैं अनुभव कर रही थी सब कुछ करने के उपरान्त भी इन लोगो का मन पढने मे नही लगता। पढाई की जो क्षुधा होती है वह इन लोगो के पास नही थी इसलिए मैंने पापा को पत्र लिख दिया कि अप्रैल म परीक्षा समाप्त होते ही मैं चली आऊगी। फिर वापस नही आऊगी। अब मैंने अपना त्यागपत्र देने का इरादा पक्का कर लिया है। आज याद नही लेकिन कुछ ऐसा कारण हुआ कि इन बच्चो की परीक्षा आगे बढा दी गई।
मैंने गुस्से से पापा को पत्र लिखा, मानो उन्होने ही परीक्षा आगे बढा दी हो। पापा ने उत्तर दिया—
"You have already decided not to serve beyond march/

april' 79 That you have to leave service three months earlier is good thing"

मैंन शाम को पापा को टलीफोन किया । पापा आपको गुस्सा नही आता, मैं तो आपके ऊपर इतना गुस्सा करती हू । कभी कभी ।
'कभी कभी नहो तुम हमेशा ही गुस्सा करती हो ।" टेलीफोन म मैं पापा की शक्ल नहीं दख सकती थी पर इतना जानती ही नहो विश्वास से कह सकती हू कि उस समय पापा मुस्करा रहे होग ।
' पापा'
' हू '
"मुय तीन दिन हो गय हैं आय हुए ।"
"जानता हू ।'
'और आपको दो घण्ट का समय नही ।"
"ऐसा ही हो रहा है कुछ ।'
"वाह सरकार गेहू खरीदेगी ।"
"हा ।"
"आपसे भी बडे-बडे आफिसर हैं ।"
"हाग ।"
"चीफ मिनिस्टर और चीफ सेक्रेटरी भी इतने ही व्यस्त होंगे ?'
मैंन चल्ला कर पूछा ।
हा कुछ कम कुछ ज्यादा"
' फिर अभी तक निणयात्मक स्थिति पर आप लोग क्या नही पहुच रहे"
'कुछ personal interest रखन वाले आफिसरो के कारण ।"
"आपको गुस्सा नही आता उन पर ?'
पापा मुस्करा दिय, 'I hate to become angry with a person whom I do not like or love '
पापा ने धीरे धीरे अपनी चाय समाप्त कर दी, सिगरेट निकाली मैंन माचिस जलाकर उनकी सिगरेट जला दी । पापा की दृष्टि मेरे मुह स फिसल कर अनिल के मुह पर जाकर स्थिर हो गई । कुछ पलो का सन्नाटा छा गया । मैंने ही उस सन्नाटे को भग किया ।
' पापा ' गुस्सा आ रहा है ?

Manchalı I will quarrel with you to renew my love and love you to renew my quarrel"
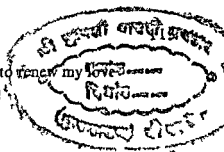
वाह"
सच है।"
"पापा"
"जानती हो सर विंस्टन चर्चिल ने क्या कहा था ? मानव जीवन मे दो और दो चार का नियम सदा लागू नही होता उसमे कभी दो और दो पाच भी हो जाते हैं कभी तीन भी और कई बार तो प्रश्न पूरा होने से पूर्व ही स्लेट गिर कर टूट जाती है।
टेलीफोन की घंटी बराबर बज रही थी।

□□

मैं जैसे ही इन्दौर पहुची पहली सूचना मुझे यह मिली कि 18 मार्च से रेणु की और 29 मार्च से बीना और अनिल की परीक्षा प्रारम्भ हो रही है 17 अप्रैल को सब फ्री हो जायेंगे। मैंने आफिस पहुच कर पहला काम यह किया कि 19 अप्रैल से अर्न लीव का फार्म भरकर डिविजनल आफिस भेज दिया।
18 की रात को मैं निकलने की तैयारी मे व्यस्त थी तभी एक और हिन्दी का पुराना पत्र पापा का मेरी सेफ मे से निकला बहुत पुराना हो चुका था।
"तुम्हे पता है अतिरेक मेरा स्वभाव धर्म है। समान शीले व्यसनेषु सख्य तुम और मैं समान शील कहे जा सकते हैं। समान शील होते हुए भी हमारे अलग-अलग व्यक्तित्व हैं और उनका सघर्ष आज भी उतनी ही तेजी से चल रहा है जितना वह शुरू मे था। इसमे सदेह नही कि ऐसे सघर्ष ही एक दूसरे के प्रति गहरी श्रद्धा आस्था एव अपनत्व की ज्योति उत्पन्न करते हैं। सघर्ष जीवन का प्रात्यक्षिक रूप है।" मुझे याद नही

आ रहा कि यह पत्र उन्होंने कब और किस संदर्भ
मे लिखा था।
लेकिन हजारो पत्रो मे से तीन चार पत्र उनके जो
हिन्दी के हैं उनमे से एक यह भी
पत्र सभाल कर फाइल कर दिया।
पुरातत्व विभाग के लिए प्राचीन शिलालेख जितने मूल्यवान
हैं उससे अधिक मूल्यवान हैं पापा के ये पत्र जो
मेरे लिए ही नही, सभी लडकियो के लिए। काश
प्रत्येक पिता अपनी पुत्री का स्नेह के साथ साथ
जीवन देने की, जीवन जीने की सशक्त रूपरेखा भी
दे। अचल अडिग।
मैं सामान बाधने मे अवश्य व्यस्त थी। क्योकि यह दृढ
निश्चय था कि अब वापस नही आऊगी। पहनने के कपडे तो
सब बाधने ही थे पर इसके अतिरिक्त घर का सभी सामान
पैक करके व्यवस्थित रूप से रखना भी आवश्यक था।
मुझे अपने घर पर मात्र गर्व नही था यहा तक कि एम० एस० सी०
होम साइस के एक पेपर (इन्टीरिअर डेकारेशन) के लिए मेरे
घर का चुनाव किया गया था। I am very much
proud about my house कहा-कहा से
छोटी से छोटी वस्तुयें लाकर मैंने एकत्रित की थी।
इसी उधेडबुन म सारा दिन व्यतीत हो गया।
शाम को पाच बजे की ट्रेन थी।
निकलते समय एक क्षण को ठिठक गई। अब क्या वास्तव
म नही आऊगी। नौकरी छोड दूगी। नही, मेरे
एक बहुत बडे हितैषी ने मुझे बताया था कि इस वर्ष
मेरा प्रमोशन होने वाला है प्रमोशन I may
be joint director in a very short time क्या
सोचने लगी मैं।
दूसरे ही क्षण मैंने अपने सिर को एक जोरदार झटका
दिया।
यह सब बेकार की बातें हैं।
मुझे घर जाना है।
पापा के पास।
और मैं मुडकर टक्सी मे बैठ गई।
हमारा घर हसी के गुब्बारो से फूला रहने लगा। सारा

दिन कहा चला जाता पता ही नही लगता। शाम को देर रात
तक पापा से बातें करती रहती।
"पापा"
"हू"
"आज का पपर पढ़ा ?"
"क्या कोई विशेष बात ?"
"आज ज्वाइ ट डायरेक्टर की पोस्ट एडवरटाइज हुई है
अगर मैं एप्लाइ करती तो शत प्रतिशत मेरा सलेक्शन
हा जाता।"
"तुम्हे अब क्या चिन्ता।"
उनका 'तुम्हे अब क्या चिन्ता कहना मेरे हृदय को वेध गया। मैंन
अनमन मन स पूछा।
"मैंन नौकरी छोडी आपको अच्छा नही लगा। अगर अच्छा नही
लगा तो मैं अभी भी ज्वाइन कर सकती हू।"
पापा चाय पी रहे थे। हाथ से प्याला नीचे रख कर एकदम
खडे हो गए। "मनचली वास्तविकता का अपमान जीवन का
अपमान है। तुम जीवन मे निरथक अर्थों को खोजना बन्द कर दो।"
"फिर "
बीच म ही वह बोले, ' सत्य का स्वीकार किया जाता है।
उत्तर नही दिया जाता।"
मेरा मुह वास्तव म छोटा हा गया।
पापा पुन बोले, "निकटतम सत्य को दूर जाकर पूजने की
आवश्यकता नही होती। मैंन तुम्हें स्वतन्त्रता दु खी होने के लिए
नही दी है तुम जिस दिन इस सच्चाई को जानोगी
मेरा दावा है तुम से अधिक सुखी दुनिया मे कोई नही होगा।"
मैं जोर से हस दी "मैं तो अभी भी अपन को बहुत
सुखी समझती हू, आसमान पर ही रहती हू। धरती तो
मैंन देखी ही नही।"
'कलाकार विशेषकर मूर्तिकार कितनी जीवन्त प्रतिमाए गडते हैं, उनकी
छैनिया पत्थरो को सजीव मूरत दे देती हैं। काश कि यह कला मुझे
भी आती।'
पापा इन्दिरा गाधी की एक बहुत सुन्दर प्रतिमा लाय थे एसा लगता
था मानो अभी बोल पडगी। बनाने वाला मूर्तिकार यशस्वी मूर्तिकार
नही था। नाम था वाल्दा पर गजब का जादू था उसके हाथो म
"कसी लगी मनचली ?" पापा ने मेरी ओर उन्मुख होत हुए पूछा।

"क्यो"

'मरी एक बात समय म नही आती मनचली।"

मैंने उत्सुकता से उनकी ओर देखा।

"तुम्हारा ध्यान सभी विषयो मे एकाग्रता का छू जाता है फिर तुम्हारी सगीत म रुचि क्यो नही आई?"

"सगीत और वह भी शास्त्रीय।"

"सगीत से मन की शरीर की एक एक ग्रन्थि खुल जाती है और उसका सुख मात्र आनन्द ही नही परमानन्द की अनुभूति देता है।"

"मुझे नही लेना "

"एक बार अगर तुमने इसे ध्यान से सुना तो इस रस से तुम अभिभूत हो जाओगी।"

"ना बाबा"

"ओंकार नाथ ठाकुर "

"जी नही" मैं बीच मे ही बोली न मुझे "मैया मेरी मैं नही माखन खाओ" सुनना और न ही गगूबाई हगल का रोना।"

"इस शास्त्र को तुम रोना कहती हो यह तो जीवन मे माधुय और बसत ला देता है।"

"चाय लाऊ" मैं खडी हो गई।

अन्दर आई तो श्रीमती एम० एस० सुब्बालक्ष्मी स्वर साथ रही थी, मैं दौडकर बाहर आई और बोली, "पापा आपका आ आ टी वी पर चालू है।"

पापा जब तक उठकर अन्दर आये तो सगीत समाप्त हो चुका था। सच तो यह है कि इस शास्त्रीय गायन कब प्रारम्भ होता है और कब समाप्त मुझे तो इसका आज तक पता ही नही चला।

"पापा कर्नाटक सगीत जब भी कोई गाता है उसके हाथ मे वीणा जरूर होती है।"

पापा मुस्करा दिए, "अच्छा लगा सुनकर कि तुम सगीत मे किसी क्षण तो जिज्ञासा रखती हो इस सम्बन्ध में भी प्रश्न पूछती हो। महर्षि भरत के काल से ही भारतीय गायन पर वीणा का गहरा प्रभाव है और यह प्रभाव कर्नाटक सगीत मे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कर्नाटक सगीत के सगीतज्ञो का विश्वास है कि परिष्कृत राग ज्ञान और शुद्ध स्वर साधना के लिए

"बहुत अच्छी है पापा।"
पापा न पूछा, "अच्छा बताओ कि हमन प्राचीन और अर्वाचीन शैली की अत्यधिक खूबसूरत प्रतिमाए कहा दखी हैं?"
"बडौदा मे?"
"नही।"
"हिदुस्तान म या बाहर?"
"यह तुम सोचा।"
'कुछ हिण्टस दीजिये फिर मैं बता सकूगी आपको मीनाक्षी मन्दिर इटली फास के महला और गिरजाघरो म?"
पापा न नकारात्मक रूप मे सिर हिला दिया।
नही याद आ रहा।"
"नार्वे की राजधानी ओस्लो का गुस्ताव वीगेलान प्रतिमा उद्यान।"
मैं छाटे बच्चे की भाति चिहुक उठी। "एकदम ठीक वहा ही अर्वाचीन और प्राचीन का आतम द्वद्व शात होता है, पापा आपका याद है पाच सात औरतो से घिरे एक पुरुप के परम्परागत शैली म निर्मित प्रतिमा के सम्मुख एक त्रिकाणाकार काले पत्थर का टुकडा दो कला ममज्ञ प्रतिमाओं के अतर को कितनी प्रबलता मे स्पष्ट करता था।"
"योरोप मे ऐसा कौनसा मध्ययुगीन महाशिल्पी हुआ है जिसकी प्रतिभा रोम के गिरिजो और मिलान के श्मशान मे आज भी कैद है। यह भी तुमने देखा है।"
"जी हा योरोप के मध्ययुगीन महाशिल्पी माइक नें जालो पापा वहा की तो सभी मूर्तिया अत्यत श्रेष्ठ हैं। मा की गाद मे वह नन्हा सा बालक, प्रौढ पुरुप और तरुणी स्त्री बच्चे को पीटता हुआ पुरुप दादा और पोता विमुख पति पत्नी स्त्री, पुरुप भाई, बहिन इन मूर्तिया को बिना शृगार और सज्जा के वीगेलान ने गढा है। हमारे यहा मध्यकालीन कलाकारो न सौन्दय को देवत्व का जामा पहनाकर मन मे वासना के उन्य को रोकने की चेष्टा की।
परतु वीगेलान को किचित मात्र भी इस प्रकार से किसी का सहारा लेना नही पडा उसन तो निवसनता को भी वासना मुक्त बनाने मे बहुत सफलता प्राप्त की है। उसने अगणित पलस्तरा की प्रतिमाओ का निर्माण किया, जिन्हें कुशल कारीगरा न पत्थरो मे तराशा है।'
'गुड'

"क्यों"

'मेरी एक बात समझ में नहीं आती मनचली।"

मैंने उत्सुकता से उनकी ओर देखा।

"तुम्हारा ध्यान सभी विषयों में एकाग्रता को छू जाता है फिर तुम्हारी संगीत में रुचि क्यों नहीं आई?"

"संगीत और वह भी शास्त्रीय।"

"संगीत में मन की शरीर की एक-एक ग्रन्थि खुल जाती है और उसका सुख मात्र आनन्द ही नहीं परमानन्द की अनुभूति देता है।"

"मुझे नहीं सेना "

"एक बार अगर तुमने इसे ध्यान से सुना तो इस रस से तुम अभिभूत हो जाओगी।"

"ना बाबा"

"ओंकार नाथ ठाकुर "

"जी नहीं" मैं बीच में ही बोली न मुझे "मैया मेरी मैं नहीं माखन खाओ' सुनना और न ही गंगूबाई हंगल का रोना।"

"इस शास्त्र को तुम रोना कहती हो यह तो जीवन में माधुर्य और बसंत ला देता है।"

'चाय लाऊं" मैं खड़ी हो गई।

अन्दर आई तो श्रीमती एम० एस० सुब्बालक्ष्मी स्वर साध रही थी, मैं दौड़कर बाहर आई और बोली, "पापा आपका आ आ टी वी पर चालू है।"

पापा जब तक उठकर अन्दर आये तो संगीत समाप्त हो चुका था। सच तो यह है कि इस शास्त्रीय गायन कब प्रारम्भ होता है और कब समाप्त मुझे तो इसका आज तक पता ही नहीं चला।

"पापा कर्नाटक संगीत जब भी कोई गाता है उसके हाथ में वीणा जरूर होती है।"

पापा मुस्करा दिए, "अच्छा लगा सुनकर कि तुम संगीत में किसी क्षण तो जिज्ञासा रखती हो इस सम्बन्ध में भी प्रश्न पूछती हो। महर्षि भरत के काल से ही भारतीय गायन पर वीणा का गहरा प्रभाव है और यह प्रभाव कर्नाटक संगीत में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कर्नाटक संगीत के संगीतज्ञों का विश्वास है कि परिष्कृत राग ज्ञान और शुद्ध स्वर साधना के लिए

वीणा वादन का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है।"
"बहुत लम्बा ज्ञान है। शायद ही मेरी बुद्धि मे कभी आय।" यह कर
मैं उठते हुए बोली, "चाय पीनी पडगी। मैं चाय बनाकर
लाती हू।"
जब चाय की ट्रे लेकर बाहर आई पापा टहल रहे थे, "लीजिए
चाय।"
"नही अब इच्छा नही।"
"अरे वाह मैं बनाकर लाई। अब तो आपको पीनी पड़ेगी।"
"फिर से एक सिगरेट पीनी पडगी।"
' माचिस लाऊ ?"

(17)

मैं एल० एल० एम० की परीक्षा देने आगरा चली आई। मुझे
दो महीने आगरा रहना था। आगरा विश्वविद्यालय के होस्टल
मे मुझे रहने की अनुमति मिल गई थी। बस पढना
और पापा का खत लिखना।
एक दिन मेरी रूममेट तरला ने बहुत जिद की और
मैं उसके बाय फ्रेंड के साथ मूवी देखन चली गई। चली तो
गई पर हाल मे बैठते ही मुझे लगा कि तरला के साथ
आकर मैंने बहुत बडी गलती करी। मुझे नही आना चाहिए
था। तरला को भी सम्भवतय यह एहसास हो गया उसने
मुझ कन्धे से हिलाते हुए कहा—
"मनचली आदर्शों मे एक दिन मर जायेगी। जीवन जीना सीख।"
मैं खामोश रही।
घर आकर मैंने पापा को पत्र लिखा।
उनका उत्तर
life can become very miserable if you seek
guaidence from imagination instead of your personal
experience

अगणित बार मैंने यह तीन पक्तिया पढी। इन तीन पक्तियो म
कितना कुछ कह गये थ। फिर भी, नारी हृदय है न पुन: पत्र

लिखा जिसमे उनके, पूछे बिना फिर से लिखा कि मैं क्यो
मूवी देखन गई थी हालाकि मेरी इच्छा एकदम नही थी। वह मुझे
जबरदस्ती ले गई थी।

Cleverness is an assest so long it is not used against
oneself Explaination can be given for everything but that
the things needs an explaination is a bed thing Good
never needs explaination and bed can not survice without
it

मुझ बहुत दु ख हुआ लेकिन अब कर भी क्या सकती
थी। मूवी ता उन दानो क साथ देख ही आई थी
लकिन अब मन ही मन प्रतिना कर ली, अब कभी किसी के साथ
नही जाऊगी। यह विश्वास मैं बार बार अपन को क्यो दिला
रही थी शायद अपनी ग्लानि का कम करन के लिए। किताब
खुली टेबिल पर रखी थी पर मन पढन म एकदम नही
लग रहा था।
बार बार पापा के पत्र और मूवी।
अचानक ख्याल आया, पापा अक्सर कहते हैं कि जा समय चिता
म गया समझा कूडेदान मे गया जो समय चिन्तन म गया
समझा तिजोरी म गया। वास्तव म यह पक्ति चिग चाओ की थी
पर पापा को यह वाक्य बहुत पसन्द था।
मैंन भी अपने मन को सयत कर लिया और पुन अपने को
किताबो मे खो दिया।
पता नही कब तक पढती रही।
दूसर दिन पापा का पत्र मिला।
माटेन कहा करता था कि तीन समागमो को वह अत्यधिक
आवश्यक समझता है—
(1) प्रेम समागम,
(2) मित्र समागम, और
(3) ग्रथ समागम।
तीना मे बडी समानता है। लेकिन इन तीनो मे से ग्रथ सबस
अधिक वफादार है और मनचली आनती हो आद्र मोखा
कहते हैं कि ग्रथ प्राय अपने लेखको स अधिक सयाने
और वाक्पटु होते हैं दूसरा पैरा था—
You are again forgetting about

पापा ने एक दिन मुझ से कहा था कि प्यार और
पाप का एक साथ आना असम्भव है। दोना म से
एक का ही आसरा इन्सान ले सकता है। मैं परीक्षा
के दिना मे अपनी पढाई को छोडकर जिसके लिए मैं
पापा को छोडकर यहा आई हू, मूवी देखन चली गई
क्या वह मेरा मेरी रूम मेंट के प्रति प्रेम था ?
मुझे राबट बेसन की पक्तिया याद आ गइ। प्रेम
पुरुष के लिए तक, स्त्री के लिए आनन्ददायक स्वप्न
और कवि के लिए एक विषय है। मैं भी स्त्री हू
न शायद इसीलिए मैं मूवी देखने चली गई वह मेरे लिए क्या एक
आनन्ददायक स्वप्न था ? सत्य की पूर्ति के लिए
बहुत दिनो तक मूवी प्रकरण मेर मस्तिष्क मे
घूमता रहा।
अन्त मे परीक्षा समाप्त हुई।

□□

आज इतवार था। पापा अवकाश के मूड
म थ। मैं, पापा और अनिल बहुत देर से बाहर
बैठे अन्ताक्षरी कर रहे थे। पता ही नही लगा
कि अन्त्याक्षरी कब समाप्त हो गई और चर्चा का
विषय हो गया महाभारत।
"पापा, आपको आज याद है महाभारत का युद्ध कब
हुआ था। विदेशियो ने भी तो महाभारत पर बहुत
ग्रन्थ लिखे हैं।"
"हा जब काशी विश्व विद्यालय म मैं पढता था और ब्राह्मण
का बेटा हू इसलिए मालवीय जी, महाभारत, वेद, रामायण, उपनिषद
जो भी उनके हाथ मे आ जाती थी पढन
के लिए दे देते थे। और दे ही नही देत थे
फिर पूछते थे कि मैंने क्या पढा वह
गुरु और शिष्य की परम्परा ही कुछ और थी
मालवीय जी स्वय बैठकर वेदो और उपनिषदो

your health Your know that I have develop a cronic di:
of remaining worried about it I always remember you

होस्टल मे पता नही किसन मेरे सभी पैस चारी कर
लिए। बिना पसे रहन का मरे लिए यह पहला अवसर
था। रूम मेट से पाच रुपये लेकर मैंन पापा को
तार किया कि मुझे तार स पैस भेज दीजिये।
मेरी धारणा क अनुसार मुझ तीसर दिन पैस मिल जान
चाहिए थ पर चौथ दिन भी जब मुझ टी० एम० आ० नही
मिला तो मेरा दु ख क्रोध म बदल गया। बहुत गुस्स मे
भरा मैंन पापा को पत्र लिखा। टिकट तक क पसे भी
मेरे पास नही थे अत हास्टल से चावल लाकर लिफाफा
चिपकाया और बैरग लेटर भेज दिया। लेटर पोस्ट करन
के एक घण्टे बाद ही मुझे पापा का टी० एम० ओ० मिला
मेरे पत्र के उत्तर म उनका एक पक्ति म उत्तर आया
'Manchali your needs and hopes are also my needs an
hopes"

वास्तव म यह सच था, मुझे दु ख हुआ कि बेकार
मे मैंने पापा को खत लिखा, अक्सर मेरी जल्दबाजी मे
ऐसी गलतिया हो जाती थी।
मैंने क्षमा मागते हुए पापा का एक पत्र लिखा, उसका उत्तर,
' My dear life is not always a smooth sailing One
has to take rough along with smooth but one should
not permit breaking of her spirit"

आगरा मे ही मुझे पापा का एक और पत्र मिला। आज
यह भी याद नही आ रहा कि मैंन उन्हें क्या लिखा होगा।
बस मात्र उनका उत्तर सुरक्षित है। शायद हा सकता है मैंन
अपने पैसे चोरी करने वालो मे अपनी रूम मेट का
नाम लिखा हो जो कुछ भी हो आज प्रकरण
याद नही लेकिन ऐसा ही कुछ होगा जिसका उत्तर
मेरे पास है।

"One who has no capacity of his own
to manage, one's affair without the help of other is no
better than slave"

पापा ने एक दिन मुझ से कहा था कि प्यार और
पाप का एक साथ आना असम्भव है। दोनो में से
एक का ही आसरा इन्सान ले सकता है। मैं परीक्षा
के दिनो म अपनी पढाइ को छोडकर जिसके लिए मैं
पापा को छोडकर यहा आई हू मूवी देखन चली गई
क्या वह मेरा मेरी रूम मेंट के प्रति प्रेम था ?
मुझे राबट बेसन की पक्तिया याद आ गईं। प्रेम
पुरुष के लिए तक स्त्री के लिए आनन्ददायक स्वप्न
और कवि के लिए एक विषय है। मैं भी स्त्री हू
न शायद इसीलिए मैं मूवी देखने चली गई वह मेर लिए क्या एक
आनन्ददायक स्वप्न था ? सत्य की पूर्ति के लिए
बहुत दिनो तक मूवी प्रकरण मेर मस्तिष्क म
घूमता रहा।
अन्त मे परीक्षा समाप्त हुई।

□□

आज इतवार था। पापा अवकाश के मूड
म थे। मैं, पापा और अनिल बहुत देर से बाहर
बठे अन्ताक्षरी कर रहे थे। पता ही नही लगा
कि अन्त्याक्षरी कब समाप्त हो गई और चर्चा का
विषय हो गया महाभारत।
"पापा, आपको आज याद है महाभारत का युद्ध कब
हुआ था। विदेशिया न भी ता महाभारत पर बहुत
ग्रन्थ लिखे हैं।"
"हा जब काशी विश्व विद्यालय म मैं पढता था और ब्राह्मण
का बेटा हू इसलिए मालवीय जी, महाभारत, वेद, रामायण, उपनिषद
जो भी उनके हाथ मे आ जाती थी पढन
के लिए दे देते थे। और दे ही नही देते थे
फिर पूछते थे कि मैंने क्या पढा वह
गुरु और शिष्य की परम्परा ही कुछ और थी
मालवीय जी स्वय बैठकर वेदो और उपनिषदो

your health Your know that I have develop a cronic disease of remaining worried about it I always remember you

होस्टल मे पता नही किसन मेर सभी पैस चोरी कर लिए। बिना पैसे रहन का मरे लिए यह पहला अवसर था। रूम मेट मे पाच रुपय लकर मैंन पापा को तार किया कि मुझे तार से पैसे भेज दीजिये। मेरी धारणा क अनुसार मुझ तीसरे दिन पैस मिल जाने चाहिए थे पर चौथे दिन भी जब मुझ टी० एम० आ० नही मिला तो मेरा दु ख क्रोध म बदल गया। बहुत गुस्स म भरा मैंन पापा का पत्र लिखा। टिकट तक क पसे भो मेर पास नही थे अत होस्टल से चावल लाकर लिफाफा चिपकाया और बैरग लेटर भेज दिया। लटर पोस्ट करने के एक घण्टे बाद ही मुझे पापा का टी० एम० ओ० मिला मेरे पत्र के उत्तर म उनका एक पक्ति म उत्तर आया
'Manchali your needs and hopes are also my needs and hopes"

वास्तव म यह सच था, मुझे दु ख हुआ कि बेकार म मैंने पापा को खत लिखा, अक्सर मेरी जल्दबाजी मे ऐसी गलतिया हो जाती थीं।
मैंने क्षमा मागते हुए पापा को एक पत्र लिखा, उसका उत्तर,
' My dear life is not always a smooth sailing One has to take rough along with smooth but one should not permit *breaking of her spirit* "

आगरा मे ही मुझे पापा का एक और पत्र मिला। आज यह भी याद नही आ रहा कि मैंन उन्हे क्या लिखा होगा। बस मात्र उनका उत्तर सुरक्षित है। शायद हो सकता है मैंने अपने पैसे चोरी करने वालो म अपनी रूम मेट का नाम लिखा हो जो कुछ भी हो आज प्रकरण याद नही लेकिन ऐसा ही कुछ होगा जिसका उत्तर मेरे पास है।

"One who has no capacity of his own to manage, one's affair without the help of other is no better than slave"

पापा न एक दिन मुझ से कहा था कि प्यार और
पाप का एक साथ आना असम्भव है। दोनो म से
एक का ही आसरा इ सान ले सकता है। मैं परीक्षा
के दिनो म अपनी पढाई को छोडकर जिसक लिए मैं
पापा को छोडकर यहा आई हू मूवी देखन चली गइ।
क्या वह मेरा मेरी रूम मेंट क प्रति प्रेम था ?
मुझे राबट बेसन की पक्तिया याद आ गईं। प्रेम
पुरुष के लिए तक, स्त्री के लिए आन ददायक स्वप्न
और कवि के लिए एक विषय है। मैं भी स्त्री हू
न शायद इसीलिए मैं मूवी देखने चली गई वह मेरे लिए क्या एक
आन ददायक स्वप्न था ? सत्य की पूर्ति के लिए
बहुत दिनो तक मूवी प्रकरण मेरे मस्तिष्क म
घूमता रहा।
अ त मे परीक्षा समाप्त हुई।

□□

आज इतवार था। पापा अवकाश के मूड
म थे। मैं, पापा और अनिल बहुत देर स बाहर
बैठे अ ताक्षरी कर रहे थे। पता ही नही लगा
कि अन्त्याक्षरी कब समाप्त हो गई और चर्चा का
विषय हो गया महाभारत।
"पापा, आपको आज याद है महाभारत का युद्ध कब
हुआ था। विदेशियो ने भी ता महाभारत पर बहुत
ग्र थ लिखे हैं।'
"हा जब काशी विश्व विद्यालय म मैं पढता था और ब्राह्मण
का बेटा हू इसलिए मालवीय जी, महाभारत, वेद, रामायण, उपनिषद
जो भी उनक हाथ मे आ जाती थी पढने
के लिए दे देते थे। और दे ही नही देते थे
फिर पूछते थे कि मैंन क्या पढा वह
गुरु और शिष्य की परम्परा ही कुछ और थी
मालवीय जी स्वय बैठकर वेदा और उपनिषदा

your health Your know that I have develop a cronic disease of remaining worried about it I always remember you

हास्टल म पता नही किसन मेरे सभी पैस चोरी कर लिए। बिना पैस रहन का मरे लिए यह पहला अवसर था। रूम मट स पाच रुपये लेकर मैंन पापा को तार किया कि मुझे तार स पैस भेज दीजिय। मेरी धारणा क अनुसार मुझ तीसर दिन पैस मिल जान चाहिए थ पर चौथे दिन भी जब मुझ टी० एम० आ० नही मिला तो मेरा दु ख क्रोध म बदल गया। बहुत गुस्स म भरा मैंने पापा का पत्र लिखा। टिकट तक के पैस भी मेरे पास नही थे अत होस्टल से चावल लाकर लिफाफा चिपकाया और बैरग लेटर भेज दिया। लेटर पोस्ट करन के एक घण्टे बाद ही मुझे पापा का टी० एम० ओ० मिला मेरे पत्र के उत्तर म उनका एक पक्ति म उत्तर आया "Manchali your needs and hopes are also my needs and hopes'

वास्तव मे यह सच था, मुझे दु ख हुआ कि बेकार मे मैंने पापा को खत लिखा, अक्सर मरी जल्दबाजी मे ऐसी गलतियां हो जाती थीं।
मैंने क्षमा मागते हुए पापा को एक पत्र लिखा, उसका उत्तर, 'My dear life is not always a smooth sailing One has to take rough along with smooth but one should not permit breaking of her spirit"

आगरा मे ही मुझे पापा का एक और पत्र मिला। आज यह भी याद नही आ रहा कि मैंने उन्हे क्या लिखा होगा। बस मात्र उनका उत्तर सुरक्षित है। शायद हो सकता है मैंने अपने पैसे चोरी करने वालो म अपनी रूम मेट का नाम लिखा हो   जो कुछ भी हो आज प्रकरण याद नही लेकिन ऐसा ही कुछ होगा जिसका उत्तर मेरे पास है।

' One who has no capacity of his own to manage, one's affair without the help of other is no better than slave"

पापा ने एक दिन मुझ से कहा था कि प्यार और
पाप का एक साथ आना असम्भव है। दोना में से
एक का ही आसरा इ सान ले सकता है। मैं परीक्षा
के दिनो मे अपनी पढाई को छोडकर जिसके लिए मैं
पापा को छोडकर यहा आई हू मूवी देखन चली गई।
क्या वह मेरा मेरी रूम मैंट के प्रति प्रेम था ?
मुझे राबट बेसन की पक्तिया याद आ गइ। प्रेम
पुरुष के लिए तक स्त्री के लिए आनन्ददायक स्वप्न
और कवि के लिए एक विषय है। मैं भी स्त्री हू
न शायद इसीलिए मैं मूवी देखने चली गई वह मेरे लिए क्या एक
आन ददायक स्वप्न था ? सत्य की पूर्ति के लिए
बहुत दिनो तक मूवी प्रकरण मेरे मस्तिष्क मे
घूमता रहा।
अ त मे परीक्षा समाप्त हुई।

□□

आज इतवार था। पापा अवकाश के मूड
मे थ। मैं, पापा और अनिल बहुत देर से बाहर
बैठे अ ताक्षरी कर रहे थे। पता ही नही लगा
कि अन्त्याक्षरी कब समाप्त हो गई और चर्चा का
विषय हो गया महाभारत।
"पापा आपको आज याद है महाभारत का युद्ध कब
हुआ था। विदेशियो न भी तो महाभारत पर बहुत
ग्र थ लिखे हैं।"
"हा जब काशी विश्व विद्यालय मे मैं पढता था और ब्राह्मण
का बेटा हू इसलिए मालवीय जी महाभारत, वेद, रामायण, उपनिषद
जो भी उनके हाथ मे आ जाती थी पढने
के लिए न देते थे। और दे ही नही देत थे
फिर पूछते थे कि मैंने क्या पढा वह
गुरु और शिष्य की परम्परा ही कुछ और थी
मालवीय जी स्वय बैठकर वेदो और उपनिषदो

की टीकाए समझाते थे अथाह स्नेह था उन्हें
अपन विद्यार्थियो स और मरे ऊपर तो
अथाह प्रेम था। हा तुम महाभारत का काल पूछ रही थी
न पिछले महीन मैं एक पुस्तक पढ रहा था उसके अन्तगत कोल बुक
न इसवी सन पहले चौदहवी शताब्दी म महाभारत
का युद्ध हाना बताया गया है और विलसन भी उनकी राय
से सहमत हैं लेकिन विलफोड यह कहते हैं कि 1370
ईसवी सन क पहले यह युद्ध हुआ।"
मै उठकर खडी हो गइ।
'कहा जा रही हो?"
"अभी आई।"
पापा को एक किताब दिखात हुए मैंन कहा, 'देखिय पापा,
लासेन जमन विद्वान का कहना है कि महाभारत
चाहे जब हुआ हो लेकिन इसम ऐतिहासिकता है।"
"यह सत्य है।"
'पापा हमारे ।'
'जानती हा मनचली पापा बीच म ही बोले, 'पाणिनिकाल
मे भी पाचो पाण्डवा के नाम कुन्ती द्राण, अश्वत्थामा
आदि सूत्र पाये जाते हैं पर कृष्ण का नाम वहा
नही है
नही है लेकिन कृष्ण शब्द पाणिनी स पहले प्रचलित था
इसमे सदेह नही। ऋग्वेद सहिता मे कृष्ण का नाम
बार बार आया है।"
'पापा कृष्ण अपनी पटरानी रुक्मिणी का भी कही से
भगा लाये थे?"
पापा मुस्करा दिए, 'कृष्ण किसी की लडकी नही
भगाते थे यह तुम्हारा भ्रम है वह उस काम के
सदा सहयोगी बन जाते थ जिसकी उस समय माग
और आवश्यकता होती थी। रुक्मिणी विदभ के राजा
भीष्म की कन्या थी। कृष्ण की यह फिलासफी
थी कि कतव्यवश मानव अच्छा काय करता
है परन्तु प्रेम वश वही काय सुन्दर करता है।'
तो पापा कृष्ण के पीछे इतनी सारी प्रेम कथाओ
की सुदढ श्रृखला क्यो?'
पापा कुछ क्षण चुप रहे फिर बोले "भोग और योग दोनो

ही जिसके लिए समान हो ऐसे पुरुष को ही स्त्री
प्रेम करती है। क्योकि ऐसा पुरुष उसके लिए गव की
उपलब्धि होता है और कृष्ण वास्तव मे गव की वस्तु
थे। गव की उपलब्धि थे।"

"पापा एक कप चाय और।"

पापा न स्वीकारोक्ति मे सिर हिला दिया, "तुम बैठो मैं
किसी का कहता हू "

"एक कप चाय लाना ओ० के०।" मैंन ओ० के० को आवाज
दकर कहा।

"मनचली कृष्ण के चरित्र की मीमासा अगर किसी ने
वास्तविक और सही ढग से की है तो जमनी क प्रसिद्ध दाशनिक
कालयास्पस न। समपण, तष्णा, आनाकारिता
विश्वास, कामिता मानव मन की उतनी ही स्थायी मानसिक
आवश्यकता या वासना है जितना विद्रोह, ललकार, युद्ध, सशय आदि
और कृष्ण ने इन सभी मानवीय चेतनाओ की अनुभूतियो
को पूण रूप से प्रस्फुटित होने दिया"

"इसीलिए वह अमर हो गये उन्हें भगवान मान लिया गया।"

"भगवान मानने पर भी उन्होंने कभी कोई चमत्कार
आदश म ढालकर नही दिखाये उनकी मृत्यु भी
एक अत्यन्त सामान्य मानव की भाति हुई।"

फिर भी हमारे समाज मे या हमारे देश मे उन्ह सर्वोच्च
स्थान दिया गया। धम म स्थान पाकर वह महान ही नही
अपितु महानतम हो गये।'

"मनचली प्रेम के सामथ्य मे श्रद्धा का स्थान सर्वोच्च है
कृष्ण के प्रेम ने दूसरो की चिन्ता की। समाज को
पर्याप्त महत्त्व दिया इसीलिए वह अमर हो गये।"

"अच्छा एक बात बताइय रामायण के अन्तगत जहा
आदर्शों स पष्ठ भरे पडे है वहा महाभारत मे आ
बैल मुझे मार वाली उक्तिया स्थान स्थान पर चरिताथ होती हैं
दुर्योधन न राजसूय यज्ञ किया। दुशासन ने दुर्योधन की
आना से पाण्डवो को निमन्त्रण भेजा और यज्ञ की
समाप्ति के उपरान्त बिना किसी कारण कण ने दुर्योधन
के सम्मुख प्रतिज्ञा कर ली जब तक अर्जुन मेरे हाथ
से मारा नही जायेगा तब तक मैं दूसरो के हाथ से पैर नही
धुलवाऊगा। जल से उत्पन्न पदाथ नही खाऊगा।

आसुरव्रत नही धारण करूगा कोई कुछ भी माग कभी अस्वीकार नही करूगा।"

"यही तो सामान्य मानव का चरित्र है, उसका अहम, अगर जीवित न हो तो मनुष्य मनुष्य नही कहलायेगा। धरती पर जन्म लेने के उपरान्त एकमात्र यही शाश्वत अनुभूति है।"

'कल रात आप बता रहे थे न पृथ्वी से भारी क्या है, आकाश से ऊचा क्या है, मुझे रात को बहुत जोर की नीद आ रही थी अब बताइये।"

'माता गुरुतरा भूमेः खात पितोच्च तरस्तथा
मन शीघ्रतर वाताच्चिन्ता बहुतरी तृणात् ।।

माता का गौरव पृथ्वी से भी अधिक है। पिता आकाश से भी ऊचा है। मन वायु से भी तीव्र चलने वाला है और चिन्ता तिनके से भी अधिक असख्य एव अनन्त हैं।"

"पापा, ऐसी कोई शक्ति है जो अकेली घूमती रहती है ?"

"हा, सूर्य अकेला रहता है।"

"चन्द्रमा ?"

"नही, चन्द्रमा वह एक बार जन्म लेता है फिर पुन जन्म लेता है।'

'पृथ्वी।"

'पृथ्वी बहुत भारी आपवान है।"

'अच्छा पापा धर्म का मुख्य स्थान क्या है ?"

"धर्म का मुख्य स्थान दक्षता है।"

"स्वर्ग का मुख्य स्थान ?"

स्वर्ग का मुख्य स्थान दान है।'

"यश का मुख्य स्थान ?"

"यश का मुख्य स्थान कीर्ति है।"

"सुख का मुख्य स्थान।'

'सुख का मुख्य स्थान शील और सस्कारिता है।"

"मनुष्य की आत्माए क्या हैं ?"

"मानवीय सवेदनाए।"

"मनुष्य का देवकृत सखा कौन है ?"

जो उसको यथार्थ रूप में समझ सके।"

"मनुष्य का आश्रय क्या है ?'

"त्याग।'

"किस वस्तु का त्याग कर मानव प्रिय हो जाता है ?"
"मान को त्याग कर क्रोध का त्याग कर वह शोक नही करता।
काम को त्याग कर वह अथवान हो जाता है और लोभ को
त्याग कर वह सुखी हो जाता है।"
"पापा, जि दा लाश शब्द कहा से आया ?"
' मानसिक रूप से दरिद्र और अपाहिज व्यक्ति जि दा लाश ही तो हैं।"
"दिशा जल और अन्न क्या हैं ?"
' अच्छे लोग दिशा हैं जल आकाश है और पृथ्वी अन्न है।"
"क्षमा और लज्जा क्या है ?"
"मानसिक द्व द्वो का सहन करना क्षमा है तथा न करने योग्य
काम स दूर रहना लज्जा है।"
"पडित वह है जो अपने कर्तव्य का पालन करता है।"
"पापा, फिर कण जसा व्यक्तित्व कैसे पागल हो गया। सम्पूण
महाभारत म जब भी वह बाला है, उसकी वाक्य रचना
अत्यन्त द्वेष भरी एव घृणित रही।"
स्वाभाविक है जिम राजा न उसे मान-सम्मान दिया अर्थात
दुर्योधन उसका वह ऋण चुकाना चाहता था जब सब उसे
उपहास और उपक्षित दृष्टि से देखत थे। उस समय दुर्योधन ने
ही उस अग देश का राजा बनाकर सम्मानित किया। एक वीर होन के
कारण उसके हृदय मे यह सत्य सदा कचोटता रहता था इस पीडा स
वह मुक्ति तभी पा सकता था जब कि वह दुर्योधन का सम्राट
बना द एकछत्र शासक,
और इस छटपटाहट स मुक्ति पाने के लिए उसके पास एक ही
उपाय था और वह थी अर्जुन की मृत्यु। अर्जुन इस भूतल पर
नहीं रहे तभी दुर्योधन की जयजयकार आकाशभेदी हो सकती थी
'अर्जुन का मात्र विनाश ही क्या, पाण्डव और भी तो भाई थे।"
' कण जसा योद्धा मात्र अजुन था पाण्डवो मे अगर किसी के
शौय का डका बजता था तो वह अर्जुन का। कौरव अर्जुन
को विजित करना चाहते थे।"
' पापा, वीर वीरा की यह अधोगति ?"
'इसीलिए कृष्ण न कहा था कि अब दुर्योधन, कण, दुशासन,
शकुनि इन सबका रक्त पान करेगी यह पृथ्वी।"
"यह तो सत्य ही है।"
तभी ओ० के० न आकर शोर मचा दिया कि साढे ग्यारह
बज गये।

"जाइए पापा, नहान जाइए आप।"
"क्या बनाया है ओ० के०"
"दाल भात रोटी, मटर पनीर बैंगन, हरे धनिए की चटनी और सलाद।"
"पापड मगाये हैं ओ० के० ।"
'जी हा।"
'उडद की दाल के या मूग की दाल के।"
'उडद की दाल के।"
गुड मेरा पापड सेकना नही तल कर लाना।"
जी।"

□□

अथशास्त्र म मैं एम० ए० कर रही थी। परीक्षा देने के लिए मुझे देहली जाना था। अत अनिल के माथ मैं देहली चली आई। अनिल मुझे छोड कर दादा जी के पास,चला गया। इस बार मेरे रहन का प्रब घ वाय० एम० सी० के होस्टल म हुआ था। देहली मे आते ही मुझे बुखार ने घेर लिया। मैं पापा को लिखकर उन्हें परेशान नही करना चाहती थी। पर टेलीफोन पर पापा ने मेरी आवाज पहचान ली

मनचली, तुम्हारी तबियत ठीक नही है क्या ?"
"नही पापा मैं एकदम ठीक हू।"
"मुझे ता नही लगता।"
'बस जरा सी हरारत है।"
'तुम्हारे पपस कब स प्रारम्भ हो रहे हैं ?"
'मण्डे से अर्थात परसो से।'
पापा का खत आया

If you do not wish to keep good health even for my sake There is nothing that can be said to you in this respect. If you love me you should keep you well for myself I will need a healthy care taker to take my care because everyday I am becoming older"

"पापा, मैं एकदम अच्छी हू" मैंने पापा को टेलीफोन किया।
"आप मेरी एकदम चिंता मत करिये।"
"देखो तुम बीमार होगी तो मैं तुमसे बहुत नाराज होऊगा।"
"नही मैं एकदम अच्छी हू।"
"तुम्हारे पेपस कैसे जा रहे हैं ?"
"गोल्ड मडल लूज नही करूगी।"
"मुझे विश्वास है।"
"अनिल पहुच गया दादी मा के पास ?"
"हा।"
यहा आकर मुझे पता लगा कि मेरी आगरा की रूम मैट
ने अपन प्रेमी को छोडकर किसी दूसरे लडके के साथ शादी
कर ली है, क्योकि उसके प्रेमी की तनख्वाह बहुत थोडी थी
मेरी आखा के सामन मूवी के कुछ दृश्य घूम गये, जो मैंने
उनके साथ आगरा म देखे थ। उनके प्रेम के लबे लबे वायदे
भी सुने थे तो क्या मात्र पैसा ही जीवन मे सबसे बडी
वस्तु है। पैसा, पैसा, पैसा इसके अतिरिक्त कुछ नही।
मैंने पापा को पत्र लिखा।
कुछ दिनो के उपरान्त उनका पत्र मुझे मिला—

"I do not agree with you
that money can purchase every thing that you want. Money is a means and every means has its limitation, The real pleasure of receiving happiness lies in its coming to us naturally Our bringing it towards artificially by the power of money is not possible That is why you will see that very very rich people are not happy"

मेरे पेपस बहुत अच्छे जा रह थ, दो पेपस बाकी थे।
शनिवार और रविवार का ऑफ था फिर सोमवार को पेपर
था और अन्तिम पेपर सात दिन के उपरान्त था। अर्थात
Statics के पेपर मे सात दिन का गैप था। अत पेपर पढना मेरा दैनिक
कार्यक्रम बन गया भारत की प्रधानमत्री इन्दिरा गाधी गद्दी से उतर चुकी
थी और मोरारजी भाई प्रधान मत्री थे। एक दिन भी ऐसा
नही जाता था कि इदिरा जी को लेकर दैनिक पत्रो की हैड लाइन
रगीन न हो।
छुट्टी तो थी, पापा को एक लम्बा पत्र लिखा, जिसम देश

की परिस्थिति इंदिरा जी और मोरार जी को लेकर ढेर
सारी जिज्ञासाये थी और भी बहुत सी बातें थी हमारे देश का
समझ, भिन्नता, विचारो की भिन्नता जबकि
दूसरे देशा म ऐसा नही।

पापा का उत्तर आया। मैं पपर देन जा रही थी जब डाकिय
न मुझे पत्र दिया—

(1) Diversity and unique differences which are found in this country on account of language and dress etc is not seen in other countries

(2) Only that man is the leader of the whole country man who makes the country strong through his efforts and imports stability to the political circumstances

(3) It is believed that under Indira Gandhi s able leader ship India's freedom, democracy and our ancient tradition and culture can be safe It is essential for the country's future

(4) What will be the Morarjee fate I do not know but apponents are incapable of criticising any thing because they could not eastablish even oneness for the country s sake

मरे सभी पेपस बहुत अच्छे गये थे।
मैंने पापा को खत लिखा कि मैं रेखा की ससुराल वालो से
मिलकर घर पहुचूगी।
ससुराल मे पहुच कर ऐसा अनुभव किया कि वह परेशान है
मैंने पापा को वही से पत्र लिखा। पापा न वहीं मुझे प्रत्युत्तर भेजा—

' To live without worries is not a pleasing job They make everything in life tasteless and boreing if not unavoidable "

मैंने वास्तव म बेकार चिंता की।
पापा हमेशा ठीक ही लिखते हैं, मैंने पापा का यह
पत्र दानो को दे दिया।
ताकि वह भी पढ लें।

(18)

आज का जीवन आतंक और घुटन का रह गया है नए शब्द
की उत्पत्ति हुई है "आतंकवादी"। जिधर देखो उधर आतंकवादी
चोर डाकुओं या बलात्कार के समाचारों के अतिरिक्त
कुछ मिलता ही नहीं। जीवन क्षण भंगुर है यह जानकर
भी मानव अच्छे कार्यों की ओर प्रवृत्त नहीं होता, उसके
बढ़ते हुए चरण आस्था की डगर नहीं पकड़ते।'
बड़बड़ाते हुए मैंने टेबिल पर पेपर पटक दिया।
"उपदेश देना बहुत आसान है।
मैंने दृष्टि उठायी और पूछा, "यह किसका उपदेश दिया?'
'अभी उपदेश ही तो दे रही थी यह बात अलग है कि
उपदेश सुनने वाला कोई नहीं था।" पापा मुस्करा रहे थे।
"जो कुछ भी देश में हो रहा है उसे आप ठीक समझते
हैं?'
'कर कौन रहा है।"
"लोग।'
"लोग किसे कहती हो?"
"जो इस भूतल पर विराजते हैं?'
"इस भूतल पर तुम नहीं रहती?"
"जी हाँ।'
'तुम सभी की चिंता मत करो। तुम्हें स्वयं को नहीं लगता
कि आज कोई भी सजगता, कर्तव्य परायणता की ओर दृष्टिपात ही
नहीं करना चाहता, अगर प्रत्येक व्यक्ति यह सोच ले कि उसे
कोई भी ऐसा काम नहीं करना है जिसके द्वारा दूसरों को
किंचित् मात्र भी पीड़ा हो।'
"लेकिन पापा, आज जो जीवन का ट्रेण्ड चल रहा है उसमें
इंसान चाहे तो भी अच्छा नहीं बन सकता। उसे बुरे
मार्ग पर जाने के लिए विवश कर दिया जाता है।"
"यह तुम्हारा भ्रम है। अगर तुम्हारी बात मान भी ली जाये तो
अगर बुरा बनने पर उसे कोई व्यक्ति विवश करता है तो उसकी
आत्मा उसे अच्छे बनने के लिए भी तो विवश करती है। तुम्हें
एक बात बताता हूँ एक बार रामकृष्ण परमहंस की पत्नी शारदा
देवी अपने पति से मिलने दक्षिणेश्वर जा रही थी उस समय उनके
पति दक्षिणेश्वर के मंदिर में ही निवास करते थे। रास्ता निर्जन एवं

भयानक था। पैदल पूरा रास्ता पार करना पडता था, क्योकि आवागमन
के साधन उस समय उपलब्ध नही थे। अपने कुछ साथियो के साथ
वह इस यात्रा पर निकली। आधा मील का रास्ता पार करने क उपरात
तैलो मैलो का दस मील का बीहड जगल पडना था जिसके अन्दर
डाकू वाग्दा न अपना निशक एकछत्र राज्य फैला रखा था।
शारदा देवी के सभी साथी इसी प्रयत्न म थे कि दिन डूबने
से पूव सब जने जगल पार कर लें। शारदा देवी बहुत तेज
चलन का प्रयत्न कर रही थी फिर भी अपने साथियो से
पीछे रह जाती थी। वह इतना थक चुकी थी कि आगे
पैर रखना उनके लिए सम्भव नही हो रहा था। आखिर
उनकी सगनियो न उन्हें उलाहना देत हुए कहा, ऐसा लगता
है कि आज तुम्हारे मारे हम सब की जान जाएगी। डाकू
किसी को नही छोडेंगे। मा शारदा ने धीर कहा
मेरे लिए अब चलना सभव नही हो रहा है आप लोग
जाइये और अगर सभव हो तो धमशाला मे मेरी
प्रतीक्षा करना। उस निजन डरावन जगल मे अकेली खडी
वह कुछ देर तक तो अपने जात हुए साथियो को एकटक
दखती रही फिर धीरे धीरे वह भी चलन लगी। वह कुछ
ही दूर आगे बढी होगी कि उन्ह वाग्दी डाकू की
भयकर गजना सुनाई पडी, "कौन है?' उन्होने नि सकोच
कहा तुम्हारी बिटिया। वाग्दी ने उन्हें ध्यान से दखा। इतनी
देर मे वाग्दी की पत्नी भी निकल आई। दानो ने
उस मासूम और भोली भाली लडकी का ऊपर से नीचे
तक देखा फिर पूछा, "कहा जा रही हो?"
"तुम्हारे जमाई के पास दक्षिणेश्वर मे रानी रासमणि क
काली मदिर मे रहते हैं। दोनो मा शारदा का अपन घर
ले आए दूसरे दिन वह शारदा को खिला-पिलाकर स्वेर
तारकेश्वर की ओर रवाना हुए डाकू दम्पति न धमशाला
म अपनी बिटिया को उनके साथियो तक पहुचा दिया। उनके
सभी साथी विस्मयविमूढ होकर उनको निहारते रहे एक ने
अत्यन्त साहस करके पूछा 'यह कौन है और तू अभी तक
जीवित कैसे रही?'
"यह मेरी मा है यह मेरे पिता हैं तलो मैलो के मैदान
मे मिल गये नही तो पता नही मेरी क्या अवस्था होती।
वागदी और उसकी पत्नी ने सब को आशीर्वाद दिया।
बिटिया को छोडते समय उनकी आखें नम थीं।

वाह !
अगर प्रत्येक व्यक्ति वाल्दी डाकू की भाति अपने को
सभाले, अपनी आत्मा की आवाज सुने तो बुर न—
करने योग्य कार्यों का स्थान नगण्य हो जायेगा।
"फिर मनुष्य अपनी आत्मा की आवाज क्यो नही
सुनता ?"
' व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाए बहुत बढ गई हैं।"
' महत्वाकाक्षाए तो सर्वदा ही रही हैं पापा जीवन
चचल, अस्थिर तो आदि काल से चला आ रहा है
"मनुष्य जन्म लेते ही चचल और अस्थिर हो जाता है
यही उसका जीवन है लेकिन इस अस्थिरता और
चचलता को अगर वह विवेक के द्वारा नियत्रण कर
लेता है तो जीवन की यातनाए कम हो जाती हैं।"
"क्या नही रख पाता, अपने पर नियत्रण दिन प्रतिदिन
उसकी श्रद्धा बढती जा रही है, मन्दिरो मे भीड
बढती जा रही है।"
"जो प्राणी मगल रूप को छोडकर परोक्ष भक्ति की
पूजा करता है वह चाहे मदिर जाये तप करें तीर्थ
करें वह अपनी मानसिक दीनता भरे स्वार्थ को
पूरा नही कर सकता।'
"महत्वाकाक्षाओं की प्राप्ति के लिए सघर्ष भी तो
करता है मानव।"
"वह तो मानव की नियति है, सघर्ष रत रहना
ही मानव के महत्वाकाक्षाओं की सफलता है।
लेकिन सघर्षों के चयन मे भी तो नियन्त्रण
होना चाहिए।"
"नियत्रण"
"हा विवेक।"
'जब विवेक जाग्रत होता है तो सघर्ष की राह मे
आई बहुत सी परेशानियो का समाधान
अपने आप हो जाता है।
"आज हमारा विवेक कम क्यो हो रहा, स्कूल, कालेज
विश्वविद्यालयो की भरमार तो दिन प्रतिदिन बढती

भयानक था। पैदल पूरा रास्ता पार करना पडता था, क्योकि आवागमन के साधन उस समय उपलब्ध नही थे। अपने कुछ साथियो के साथ वह इस यात्रा पर निकली। आधा मील का रास्ता पार करने के उपरात तैला मैलो का दस मील का बीहड जगल पडता था जिसके अन्दर डाकू बाग्दा ने अपना निशक एकछत्र राज्य फैला रखा था। शारदा देवी के सभी साथी इसी प्रयत्न मे थे कि दिन डूबने से पूर्व सब जने जगल पार कर लें। शारदा देवी बहुत तेज चलने का प्रयत्न कर रही थी फिर भी अपने साथियो से पीछे रह जाती थी। वह इतना थक चुकी थी कि आगे पैर रखना उनके लिए सम्भव नही हो रहा था। आखिर उनकी सगनियो ने उन्हे उलाहना देते हुए कहा, ऐसा लगता है कि आज तुम्हारे मारे हम सब की जान जाएगी। डाकू किसी को नही छोडेंगे। मा शारदा ने धीरे कहा मेरे लिए अब चलना सभव नही हो रहा है आप लोग जाइये और अगर सभव हो तो धमशाला मे मेरी प्रतीक्षा करना। उस निजन डरावने जगल मे अकेली खडी वह कुछ देर तक तो अपने जाते हुए साथियो का एकटक दखती रही फिर धीरे धीरे वह भी चलने लगी। वह कुछ ही दूर आगे बढी होगी कि उन्हे बाग्दी डाकू की भयकर गजना सुनाई पडी "कौन है ?' उन्होने नि सकोच कहा तुम्हारी बिटिया। बाग्दी ने उन्हे ध्यान से देखा। इतनी देर मे बाग्दी की पत्नी भी निकल आई। दोनो ने उस मासूम और भोली भाली लडकी का ऊपर से नीचे तक दखा फिर पूछा, 'कहा जा रही हो ?"

"तुम्हारे जमाई के पास दक्षिणेश्वर मे रानी रासमणि के काली मदिर मे रहते हैं। दोनो मा शारदा को अपने घर ले आए दूसरे दिन वह शारदा को खिला पिलाकर सवेरे तारकेश्वर की ओर रवाना हुए डाकू दम्पति ने धमशाला मे अपनी बिटिया को उनके साथियो तक पहुचा दिया। उनके सभी साथी विस्मयविमूढ होकर उनको निहारते रहे एक ने अत्यन्त साहस करके पूछा, "यह कौन है और तू अभी तक जीवित कैसे रही ?"

"यह मेरी मा है यह मेरे पिता हैं तेलो मैला के मैदान मे मिल गये नही तो पता नही मेरी क्या अवस्था होती। बाग्दी और उसकी पत्नी ने सब को आशीर्वाद दिया। बिटिया को छोडते समय उनकी आंखें नम थीं।

वाह !

अगर प्रत्येक व्यक्ति वाग्दी डाकू की भांति अपने को सभाले, अपनी आत्मा की आवाज सुने तो बुरे न—करन योग्य कार्यों का स्थान नगण्य हो जायेगा ।

"फिर मनुष्य अपनी आत्मा की आवाज क्यो नही सुनता ?"

"व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाए बहुत बढ गई हैं ।"

'महत्वाकाक्षाए तो सवदा ही रही हैं पापा, जीवन चचल, अस्थिर तो आदि काल से चला आ रहा है

"मनुष्य जम लेते ही चचल और अस्थिर हो जाता है यही उसका जीवन है लेकिन इस अस्थिरता और चचलता का अगर वह विवेक के द्वारा नियत्रण कर लेता है तो जीवन की यातनाए कम हो जाती हैं ।"

"क्या नही रख पाता, अपने पर नियत्रण दिन प्रतिदिन उसकी श्रद्धा बढती जा रही है, म दिरा म भीड बढती जा रही है ।"

'जो प्राणी मगल रूप को छोडकर परोक्ष भक्ति की पूजा करता है वह चाहे मदिर जाय तप करें तीथ करें वह अपनी मानसिक दीनता भरे स्वार्थ को पूरा नही कर सकता ।'

"महत्वाकाक्षाओ को प्राप्ति के लिए सघष भी तो करता है मानव ।"

वह तो मानव की नियति है, सघप रत रहना ही मानव के महत्वाकाक्षाओ की सफलता है । लकिन सघर्षों के चयन म भी तो निय त्रण होना चाहिए ।"

"नियत्रण"

"हा विवेक ।"

'जब विवक जाग्रत होता है तो सघष की राह मे आई बहुत सी परेशानियो का समाधान अपने आप हो जाता है ।

"आज हमारा विवेक कम क्यो हो रहा, स्कूल, कालेज विश्वविद्यालयो की भरमार तो दिन प्रतिदिन बढती जा रही है शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत तो समझ आनी ही चाहिए ।"

भयानक था। पैदल पूरा रास्ता पार करना पड़ता था, क्योंकि आवागमन के साधन उस समय उपलब्ध नही थे। अपनी कुछ साथियो के साथ वह इस यात्रा पर निकली। आधा मील का रास्ता पार करने के उपरांत तैलो मैला का दस मील का बीहड़ जगल पडना था जिसके अन्दर डाकू वाग्दा ने अपना निशक एकछत्र राज्य फैला रखा था। शारदा देवी के सभी साथी इसी प्रयत्न मे थे कि दिन डूबने से पूर्व सब जने जगल पार कर लें। शारदा देवी बहुत तेज चलने का प्रयत्न कर रही थी फिर भी अपनी साथियो से पीछे रह जाती थी। वह इतना थक चुकी थी कि आगे पैर रखना उनके लिए सम्भव नही हो रहा था। आखिर उनकी सगनियो ने उन्हें उलाहना देते हुए कहा, ऐसा लगता है कि आज तुम्हारे मारे हम सब की जान जाएगी। डाकू किसी को नही छोड़ेंगे। मा शारदा ने धीरे कहा मेरे लिए अब चलना सभव नही हो रहा है आप लोग जाइये और अगर सभव हो तो धर्मशाला में मेरी प्रतीक्षा करना। उस निर्जन डरावने जगल मे अकेली खडी वह कुछ देर तक तो अपने जाते हुए साथियो को एकटक देखती रही फिर धीरे धीरे वह भी चलने लगी। वह कुछ ही दूर आगे बढी होगी कि उन्हे वाग्दी डाकू की भयकर गर्जना सुनाई पडी, "कौन है ?" उन्होने नि सकोच कहा तुम्हारी बिटिया। वाग्दी ने उन्हे ध्यान से देखा। इतनी देर मे वाग्दी की पत्नी भी निकल आई। दोनो ने उस मासूम और भोली भाली लडकी को ऊपर से नीचे तक देखा फिर पूछा, 'कहा जा रही हो ?"

"तुम्हारे जमाई के पास दक्षिणेश्वर मे रानी रासमणि के काली मदिर मे रहते हैं। दोनो मा शारदा को अपने घर ले आए दूसरे दिन वह शारदा को खिला पिलाकर सवेरे तारकेश्वर की ओर रवाना हुए डाकू दम्पति ने धर्मशाला मे अपनी बिटिया को उनके साथियो तक पहुचा दिया। उनके सभी साथी विस्मयविमूढ होकर उनको निहारते रहे एक ने अत्यन्त साहस करके पूछा, 'यह कौन है और तू अभी तक जीवित कैसे रही ?"

'यह मेरी मा है यह मेरे पिता हैं तैला मैला के मैदान मे मिल गये नहीं तो पता नहीं मेरी क्या अवस्था होती। वाग्दी और उसकी पत्नी ने सब को आशीर्वाद दिया। बिटिया को छोडते समय उनकी आखें नम थीं।

वाह !
अगर प्रत्येक व्यक्ति बाग्दी डाकू की भाति अपने को
सभाले, अपनी आत्मा की आवाज सुने तो बुरे न—
करने योग्य कार्यों का स्थान नगण्य हो जायगा।
"फिर मनुष्य अपनी आत्मा की आवाज क्या नही
सुनता ?"
' व्यक्तिगत महत्वाकाक्षाए बहुत बढ गई हैं।"
महत्वाकाक्षाए तो सवदा ही रही हैं पापा, जीवन
चचल, अस्थिर तो आदि काल से चला आ रहा है
"मनुष्य जन्म लेते ही चचल और अस्थिर हो जाता है
यही उसका जीवन है लेकिन इस अस्थिरता और
चचलता का अगर वह विवेक के द्वारा नियत्रण कर
लेता है तो जीवन की यातनाए कम हो जाती हैं।"
'क्यो नही रख पाता, अपने पर नियत्रण दिन प्रतिदिन
उसकी श्रद्धा बढती जा रही है, मदिरो मे भीड
बढती जा रही है।"
"जो प्राणी मगल रूप को छोडकर परोक्ष भक्ति की
पूजा करता है वह चाहे मदिर जाये तप करें तीथ
करें वह अपनी मानसिक दीनता भरे स्वाथ को
पूरा नही कर सकता।'
"महत्वाकाक्षाओ को प्राप्ति के लिए सघर्ष भी तो
करता है मानव।"
'वह तो मानव की नियति है, सघष रत रहना
ही मानव के महत्वाकाक्षाओ की सफलता है।
लेकिन सघर्षों के चयन मे भी तो नियन्त्रण
होना चाहिए।"
"नियत्रण"
"हा विवेक।"
जब विवेक जाग्रत होता है तो सघष की राह मे
आई बहुत सी परेशानियो का समाधान
अपने आप हो जाता है।
"आज हमारा विवेक कम क्यो हो रहा, स्कूल, कालेज
विश्वविद्यालयो की भरमार तो दिन प्रतिदिन बढती
जा रही है, शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत तो समझ आनी
ही चाहिए।"

"यही तो सारे दु ख की जड है, मात्र पुस्तकें हम
विवेकी नही बनाती, विवेकशील बनाने के लिए हम जितनी
पुस्तको की आवश्यकता है उतनी ही हम सस्कारो और
वातावरण की आवश्यकता है। पुस्तका मे नान मिल सकता है
पर विवेक नही, विवेक जाग्रत ज्ञान पर मानव नम्र सहनशील
और बन्धुत्व म विश्वास रखा लगता है। ज्ञानी होने पर
अहम का न हा पौधा अकुरित होता है। मनचली हम लोग
आज तक पुस्तका क बल पर नही सस्कृति और सस्कारो
के बल पर जीवित हैं। पुस्तकें हमारी सस्कृति का
आधार स्तम्भ हैं जो दीये की भाति हमारी सस्कृति का
प्रज्वलित करती रहती हैं, हमार सस्कार चारो ओर स
इसकी रक्षा करते हैं। सतत प्रहरी समय आने पर
उत्तजना करते हैं।"
इसी बीच पापा स मिलन आफिस का कोई व्यक्ति
आ गया और हमारी बात वही बीच मे रुक गयी।

□□

आज सारा दिन मैंने पापा को अपनी नयी पाण्डुलिपि
के अन्तिम चार अध्याय सुनाये।
सुनने के उपरान्त वह काफी देर तक चुप बैठे रह
फिर मेरी ओर दृष्टिपात करते हुए बोले, "तुम्हारा
अत प्रभावशाली नही है।"
बस फिर क्या था बहस चल पडी।
"तुम अपना अत नही बदलना चाहती तो तुम्हारी
मर्जी लेकिन मुझे यह बहुत कमजोर लगता है
ऐसा लगता है कि तुम लिखते लिखते घबरा
गइ हो और इस घबराहट मे जब तुम्ह कुछ नही
सूझा तो तुमने नायिका को मार डाला। किसी को
समाप्त कर देने से समस्याए समाप्त नही हो
जाती मुझे बहुत बचकाना सा लगा
तुम्हारा यह प्रयास।
कितने महीनो के परिश्रम से तो मैंने अपने
उपन्यास की इतिश्री की थी। स्वाभाविक था

उनका इतना स्पष्ट रिमार्क मुझे अच्छा नही
लगा। सभी ने मेरी पाण्डुलिपी की प्रशसा की
थी और पापा को इसका अन्त बचकाना प्रतीत
हुआ।
आपका तो मैं कितना भी परिश्रम करके लिखू
अच्छा लगता ही नही। मैं बडबडाइ। एसा पहली
बार ही नही हुआ था बहुत बार होता था।
"तुम्हार उपन्याम को प्रभावशाली बनाना मेरा कर्तव्य,
तुम्हारी ऊचाई मेरा गौरव है।" कितनी सहजता से
वह कहा करते थे।
आज जब वह नही हैं,
तो हर पल अभाव ही अभाव द जाता है। मेरे
प्रत्येक शब्द शून्य के अण्डकार म मुझे अर्थहीन स लगते
हैं कौन है मेरा ऐसा समीक्षक मन उद्विग्न हो जाता
है पृष्ठ पर लिखा प्रत्यक शब्द काला दष्टिगोचर
होता है लकीरें धाकी पड जाती हैं। कौन है जो
उन शब्दो और लकीरो के यथार्थ को आकेगा।
आज कोई नही कहता कि शब्दो का
बाहुल्य अर्थहीन है झूठे आदर्श हैं, बचकाना है गरिमा नही है
पात्रो का व्यक्तित्व नही आक सकी आदि आज
का जीवन ता मात्र अहो रूपम अहो ध्वनिम् पर चलता
है जब वह कहते थे तो मैं सुनकर हस देती
थी लेकिन आज जब इस तथ्य की वास्तविकता समझी
तो वह नही है आज नई प्रकाशित पुस्तक "अयन-
हिता" मेरे हाथ मे हैं।
मैं तो निस्तब्ध निशब्द ठगी सी खडी हू
अगर आत्मा अमर है। प्रेम अमर है। ममत्व चिरकाल की
सुरक्षित भावना है तो आप अवश्य प्रसन्न हो रहे होगे
लेकिन मैं क्या जानू मेरे तो स्वप्न मे भी आकर
कभी आप नही मुस्कराते। कभी कभी ऐसा अनुभव
करती हू कि कही आप मेरे से नाराज तो नही
हो ?
मन नही स्वीकारता।
काश, मैं एक बार आपसे बात कर सकती।
पुरानी यादो मे खो जाना एक सुख है, इसे कुछ

क्षण की क्षणिक तृप्ति का नाम भी दे सकते हैं।
अतीत की लहरो मे बह जाना अपने निजस्व को
भूल जाना है।

□□

आज पडोस मे मृत्यु हो गयी मन बडा उदास
था जो नही रहे उनसे हमारे परिवार की गहरी
आत्मीयता थी, विशेषकर मेरी। उनके पैर के
अगूठे म थोडी सी चोट लगी थी उस दिन
कल्पना भी नही की थी कि यह चोट उनको इस
ससार से मुक्ति दिलाने का कारण बन जायेगी।
मैं गुमसुम लॉन मे बैठी थी पता नही कब
पापा मेरे पीछे आकर खडे हो गये जब देर
तक मेरी तन्द्रा नही टूटी तो धीरे से बोले, "ए
पैनी फार योर थोट।'
मैंने अपनी भीगी नजर उन पर डाली और मुस्करा
दी।
"चाय पीओगी ?"
मैंने सिर हिला दिया।
"आज कुछ अधिक हो विचारमग्न हो ?"
"पापा, बार बार जन्म लेना बार बार मरना क्या
यह एक भयानक यन्त्रणा नही है ?"
'यन्त्रणा नही मानवीय नियति है, यही सत्य है
और सत्य को स्वीकारने म इतनी पीडा नही होनी
चाहिए।"
"फिर हम अर्चना उपासना, तप, जप, क्यो करते हैं
जब यन्त्रणा पाना सत्य है फिर सत्य को स्वीकारने मे
पीडा कैसी ? "यह तो हमारा प्रारब्ध है न !"
' परमेश्वर सबका आश्रय रूप है यह मानकर उपासना
करने वाला आश्रय युक्त हो जाता है। वह सबसे महान्
है। ऐसा मानकर उपासना करें तो उपासक महान् बन
जाता है।"

"महान्, आनन्द, सत्य, विवेक, ब्रह्म यह सब व्यर्थ हैं ।"
"नहीं आनन्द ही ब्रह्म है । आनन्द से ही सबका जन्म
होता है आनन्द से ही सब सृष्टि का सचालन होता है
एव आनन्द की पराकाष्ठा ही तिरोधान है । आनन्द प्रारम्भ है ।
आनन्द मध्य है आनन्द अंत है ।'
"सत्य विवेक "
'जब तक सत्य म चित्त न हो अनुभव हो ही नही
पाएगा जब सत्य मे प्रीत हो जाती है विवेक
स्वय आ जाता है पीडा कम हो जाती है ।"
"अच्छा एक बात बताइये आप सदा कहते हैं परम पुरुष,
विराट पुरुष, काल पुरुष और इतिहास पुरुष क्या इन
चारो पुरुषो म कोई अन्तर है, या इनका कोई
विशेष अर्थ है ?"
"परम पुरुष विज्ञान धन है । विश्व के महासत्य का
विकास, विराट पुरुष विश्व की समग्र जड
चेतनात्मक महासत्ता का नाम है । काल-पुरुष
अनन्त तारो से भूषित नक्षत्र खचित आकाश विस्तार
है । इतिहास पुरुष अखिल विश्व के प्रमाण
प्रमेयात्मक स्वरूप की प्रमाता है । मनचली, विश्व
धनात्मक और ऋणात्मक इन दो विरुद्ध गतियो
का एक सगठित महाक्षेत्र है ।"
आ० के० चाय लेकर आया उसे कही बाहर जाना था ।
अत वह पापा से बातें करने लगा । मेरी बात का क्रम
वही टूट गया । मुझे उस पर बहुत गुस्सा आया
इतनी अच्छी चर्चा चल रही थी कि बीच म आ
टपका पापा मेरी मुखमुद्रा पहचान गये ।
"जानती हो मनचली ज्ञान विज्ञान से देदीप्यमान
आज का युग 19वी शताब्दी के प्रारम्भ स
मध्य तक यही मानता आया कि सृष्टि का
प्रारम्भ ईसामसीह के जन्म से मात्र चार हजार वर्ष
पूर्व हुआ था । हजारो वर्षों पूर्व का भारतीय भी
इस मान्यता पर ठहाका मार कर हस पडता
किन्तु मान्यता ऐसी थी उस योरुप की जो कल तक
भारत का अधविश्वासी सकुल का एक असभ्य देश
मानता आया था । आज वही के वैज्ञानिक इस निष्कर्ष

पर पहुचे हैं कि सष्टि का प्रारम्भ वस्तुत
प्राय दस अरबो वष पूव हुआ था जो भारत
की प्राय आदिकालीन मान्यता रही हैं।"
' हमारे सत्य उन्हे मानने ही पडेंगे मैंने वहीं पढा था
कि सूय की उत्पत्ति काल के सम्बन्ध म भी वह
भारतीय मत के अत्यन्त निकट आ चुके हैं पापा।"
' हा 21वी शताब्दी तक भारतीय अको को भी वह
सम्पूणता से स्वीकार करने म समथ हो जायेंगे।"
' आत्म परीक्षण करके अगर हम एक दूसरे की बात
मान लें तो जीवन म कोई बडा व्यवधान हम
सकुचित नही करेगा ? '
आत्म परीक्षण तुम किसे कहती हो ? '
अपने मन का परीक्षण करना ही आत्म परीक्षण
कहलाता है। हम अपने मन की कमियो और दोषो
को समझना चाहिए अगर यह काय मनुष्य मन
से करने लगे तो उसको उसके जीवन की
न्यूनताएँ दीख पडेंगी। उनका निवारण करना उसकी
अपनी साधना का प्रथम चरण होगा।"
बाहर काल बेल बज उठी
पापा से मिलने कोई आया।
ओ० के० से छुट्टी मिली तो काइ मिलने आ गया।
मेरी ढेरो बातें मेरे
मेरे ढेर सारे प्रश्न उनसे पूछने के लिए
प्रश्न का वृहद् शब्द कोष।

(19)

'जीवन दाशनिक की भाति नही जिया जाता। लेकिन
जीवन भयानक स्थितियो को भी स्वीकार नही करता
यह हमेशा याद रखना मनचली।'
"जीवन सहज भी तो नही है।'
"जैसा तुम मानोगी जीवन वैसा ही है।"

"ऐसा कैसा हो सकता है पापा हम परशानियो स
घिरे हैं और अगर हम यह मान भी लें कि हम
बहुत प्रसन्न हैं, क्या यह यथाथ है या सम्भव
हो सकगा। वास्तव म जीवन म सामान्य प्राणियो
को परेशानियो के अतिरिक्त मिलता ही क्या है
वह सिसक सिसक कर जीता है और एक
दिन उसी मे दम तोड देता है।
"My dear to live with worries is not
a pleasing job They make everything
in life tasteless and borring if not
unavoidable' याद है न मेरा वाक्य ?

"पापा, कोई चाहता है कि वह दुखी रह लेकिन
जब पास म साधन नही होत। उसके पास
पैसा नही होता तो वह बेचारा सुखी कहा म
होगा। आज के युग मे पैसा जीवन का सार
है। पैस द्वारा ही मनुष्य सब कुछ पा सकता
है।"

"No I don't agree with you that
money can purchase everything That
we want money is a means and every means
has its limitatoin The real pleasure of
receiving the happiness lies in its coming to
us naturally Our bringing it to us artificially
by the power of money is not possible
that is why you will see that very rich
people are not happy"

"आपका कहना थोडा बहुत ठीक हो सकता है लेकिन
एकदम न्यायसगत नही।"
"अभी भी तुम्हारे विचार परिपक्व नही।"
"आप जैसा समझें!"
"नही "
"मैं बीच मे ही बात काट कर बोली कल मैं एक
किताब पढ रही थी पेट को रोटी नही थी और उसके

पात्र बात कर रहे थे संस्कृति की, संस्कृति को जीवित रखने के लिए शांति सौहाद एव निश्चिन्तता की आवश्यकता है क्या यह सब बातें भरे पेट की देन नही हैं ? नही तो भूख इतनी बुरी वस्तु है कि मा अपने बच्चे को मारकर खा जाती है ? '

"बहुत उत्तेजित हो मनचली, उत्तेजना मे कभी किसी विचार के साथ निष्पक्ष न्याय नही कर पाओगी।"

"आप इसे उत्तेजना कहते हैं।"

"मैं इसे समझदारी भी नही कहता।"

"आप ,"

"किस पर इतना नाराज हो ?"

"नाराज नही आपको मेरी बातें यथाथ नही लगती।"

"नहीं।"

"यथाथ से लोग अक्सर ,,"

बीच मे ही पापा बोले, "जाओ बहुत रात हो गयी मो जाओ, तुम्हारे यथाथ सत्य की चर्चा कल करेंगे।"

□□

'क्या लिख रही हो ?"

"द्रोपदी को पत्र" मैं मुस्करा दी।

"आजकल तुमने लिखना एकदम बन्द कर दिया है ? '

"नही तो।"

"क्या ,,"

"अरे, आप को बता तो रही हू कि द्रोपदी को पत्र लिख रही हू।"

पापा न भी मेरी ही भाषा म पूछा, "द्रोपदी का पत्र आया है क्या ? '

मैं खिलखिलाकर हस पडी, "आपने कहा था न कि महाभारत को सरल भाषा मे उपन्यास का रूप दू

बस उसी के पीछे हू पर व्यास ने इतन
द्रष्टात डाले हैं कि चाहकर भी यह पता नही
लगता कि क्या छोड़ू क्या याद रखू। छोटी से
छोटी सी घटना को लेकर एक वृहद उपन्यास
तैयार हो सकता है इतन प्रसग हैं कि उनका
वर्णन एक साथ एक उपन्यास मे करना असम्भव
सभी अपने मे पूण इकाई।"
"तभी ता तुम्हें उस समुद्र म गोता खाकर मोती वाली
सीप लेकर बाहर आना है।"
"आऊगी पापा जरूर आऊगी, समुद्र मे से मोती वाली सीप
ही निकाल कर लाऊगी कितना भी गहरा जाना पडे
जाऊगी और मुझे विश्वास है कि विजय श्री मेरे
ही हाथ लगेगी।"
"मुझे खुशी होगी।"
"आपकी खुशी "
पापा बीच मे ही बोले, "तुम्हारे मुह से निकली
बातें मैं कभी सहज रूप मे नही लेता मैं अपने
मन की तराजू मे उन्हें सदा तोलता रहता हू उसकी
गम्भीरता को पहचानन का प्रयत्न करता हू।' पापा ने
स्नेह युक्त गम्भीर वाणी म कहा।
मेरी आखो मे बिजली की आभा दौड गई। एक क्षण रुककर
मैंने पूछा, "पापा, मुझे ऐसा लगता है कि सम्पूण महाभारत
को एक उपन्यास का रूप दने के बजाय मैं किसी
एक घटना को लेकर उपन्यास लिखू ?"
"यह प्रयास भी कर सकती हो। कण, कृष्ण पर
तो बहुत उपन्यास लिखे गय हैं। कुन्ती, द्रोपदी,
युधिष्ठिर पर काफी कुछ लिखा जा चुका है।"
' लिखा ही नही अत्यन्त सफल रूप से लिखा गया है
लेकिन हमे भी तो प्रयत्न करना चाहिए।"
"अवश्य करो।"
मैं बहुत देर तक सोचती रही और वह शान्त भाव से
अपनी चाय समाप्त करन म व्यस्त रह।
काफी देर चुप रहने के उपरान्त मैं ही बोली, पापा
मैं महाभारत के अपमानित गुरु द्रोणाचाय पर लिखना
चाहती हू, द्रोण एक ऐसा गुरु है जिसन एक नयी

परम्परा को जन्म दिया। द्रोण से पूर्व सभी शिष्य
आश्रम मे गुरु के घर पढने जाते थे भले ही वह
राज्य वश के उत्तराधिकारी क्या न हो गुरु उनके
द्वार पर कभी नही आते थे लेकिन द्रोणाचार्य वह
पहले अपमानित गुरु थे जो कौरवो एव पाण्डवो को
शिक्षा देने के लिए उनके पास उनके घर रहे। इसीलिए जीवन
भर कदम कदम पर उनका अपमान हुआ जिसके
कारण वह क्रोधी, असयमी और कानो के कच्चे हो
गये थे। सत्य ढूढने की समझ की या परखने
की उनमे शक्ति नही थी।'

"अच्छा है किसी भी विचार को अपने स्वतत्र विचारो
के अनुसार डेवलप करना भी स्वय मे एक बहुत
बडी कला है। और वह कला तुम को बहुत अच्छी तरह
आती है सुख' अधिकार एव पूर्ण स्वच्छन्दता उपभोग
करने के उपरान्त भी यह सत्य है कि द्रोण जीवन भर
दु खी रहे। वह कभी निष्पक्ष न्याय नही कर सके
अच्छा विषय है प्रयत्न करो।"

'मुझे प्रसन्नता हुई कि आपको मेरा विषय पसन्द आया।"

पापा मुस्करा दिए।

' मुझे तुम्हारा प्रत्येक विषय पसन्द आता है अब
आरम्भ कर दो उधेड बुन मे पडोगी तो काम नही
कर पाओगी।"

"जी हा।"

"वर्तमान के भौतिकी युग को उस चरित्र के उस
अतीत के वातावरण को अपने लेखन से ऐसे जोडना
कि तारतम्य मे बोधगम्यता रहे। देखो सभी अर्वाचीन
आदर्श नही होता और न ही समस्त प्राचीन
साधना के लिए होता है लेकिन हम उस अतीत को
वर्तमान की प्रगति मे आकर्षक रूप से बैठाना है
यही एक महत्त्वपूर्ण सत्य है यही एक कला है।"

"पापा कल का इतिहास और आज का सत्य ही तो एक
उपन्यास को जन्म देते हैं।"

"गुड"

"लिखना अच्छा लिखना "

"हू"

"लिखो, बस खूब अच्छा लिखो।"
"मरे प्रयत्नो म कमी नही करूगी।"
"एक बात लिखने समय सदा ध्यान मे रखना कि किसी भी प्रचलित धारणा या मा यता को बिना मन या विवेक की तराजू म तौले बिना कभी भी उमे अपनी लेखनी म नही ढाल लेना, परखे बिना कभी कोई सत्य स्वीकार मत करना। तुम्हारी लेखनी की यही शक्ति हानी चाहिए। जीवन मे, समाज म अकल्पनीय परिवतन हाते रहत है और आज जिस ओर हम बढ रहे हैं वहा तो परिवतना की गजना के अतिरिक्त कुछ है ही नही एसी अवस्था म बुद्धि को सदा मन और भावना से गहरी दास्ती करनी पडती है। यथाथ की भूमि पर वतमान का घर बनाकर आवश्यकता का वातावरण खडा कर दो तुम्हारी कलम से लिखे हुए शब्द पढे नही पूजे जायेंगे।"
"मैं भी चाहती हू पापा कि इस बार मेरा उप यास बहुत अच्छा हो जिसे पढकर पाठक जी जाए।"
"अवश्य हागा परिश्रम करा सफलता मिलेगी। तुम बहुत अच्छा साच सकती हो बहुत अच्छा लिख सकती हो बस एक बार अपने मन म दढ निश्चय करने की आवश्यकता है। वही तुम्हारा साहस है।"
"साहस और दढ निश्चयता किसी की कमी नही है मेरे मे पापा।"
"बस यह वाक्य ही तुम्हारे शब्दो की ध्वनि बनेगा।"
"अवश्य बनगा।"
"एक प्रख्यात लेखिका के रूप मे तुम्हे देखकर बीच मे ही बात काटकर मैंने पूछा "मुझे बेटी के रूप मे पाकर आपको प्रसन्नता नही हुई।'
"किसी भी बात को टिवस्ट करना अच्छा नही। तुम अपनी बहुत सारी Energy इस म अनावश्यक रूप से बबाद कर देती हो। My dear child it is not good, don't waste your eneregtic talent like this तुम मेरी रचना हो और अपनी रचना पर किसे गव नहीं होता।"
मैंने धीरे से उठकर पापा के पैर छू लिए, अनायास

मेरी आखें नम हो गयी।
"पापा धरती क गर्भ से प्यास बुझाई जाती है लेकिन मेरी
प्यास तो मात्र आपके सामीप्य से ही बुझती है।"
सामान्य भावो की भाति आज भी ओ० के० न आकर बताया
कि बारह बजन मे दस मिनट की देरी है।
पापा ने चौंककर पूछा, ' बारह बज गये, उठो मनचली।
बहुत देर हो गई।"
प्यार का कोई अत नही।
ममत्व का कोई परिचय नही।
प्यार मे अभाव, असुविधाए शब्द नही सुना
ममत्व के पास सम्भवत शब्द ही नही होते।
कडुवापन क्या होता है इस अनुभूति को कभी अनुभव
नही किया।
हमदर्दी, नसीहत, इन शब्दो से कभी व्यक्तिगत परिचय
ही नही हुआ।
प्यार और ममत्व,
बस यही जीवन था,
मैं और मेरी कल्पनाए
मेरा आकाशगगा मे बना चन्दन महल कितना सुरक्षित
एव सुदृढ है।
क्या मैं इतनी भाग्यशालिनी हू ?
क्या लगाने की आवश्यकता आज नही ?
कल भी नही थी।
आने वाले कल मे भी नही पडेगी।
फूलो से उठती महक, कलियो का उभरता तेज, पेडो
के बिखरते पत्ते प्रतिपल यह याद करो
मनचली कि इनके पास बैठकर तुम्हें क्या करना है
तुम क्या करोगी ? और इन्हीं के साथ जुडा है
मनुष्य, अपनी आकाशगगा मे बनी चचल चपल
मेघमालाओ के कणो से तुम और तुम्हारा परिश्रम
शाश्वत रूप से लिपटा है।
"जी।"
"यही तुम्हारी श्रेष्ठ से श्रेष्ठतम नियति होगी।"

(20)

आज हमारे घर मे बडी चहल पहल है।
पापा की प्यारी वहन आई हैं।
और उनके साथ पधारे हैं एक स्वामीजी,
बुआ जी ने आते ही आदश प्रसारित किया मनचली
सिर ढककर स्वामीजी के चरण छुओ। विद्रोही मन
तो शोला होता है। वह कब तत्पर होता ऐसी आज्ञा
मानन के लिए। अत उनके मुह से निकले शब्दो
न सीधा बुद्धि पर प्रहार किया।
"क्या सिर ढका जाए ?"
"वहस मत करो, जानती हो यह बहुत पहुचे हुए ज्ञानी हैं
महात्मा है।"
"पापा से अधिक ?"
"महात्मा और दादा मे अतर "
"नही हो सकता।"
"तुम कब तक अपने को छोटा बच्चा समझती रहोगी ?"
"छोटी तो हू ही।"
"इसम भी जिद।"
"जिद का प्रश्न कहा यह सत्य है।"
मैंन पैर नही छुए रात को भोजन के समय पापा
से शिकायत की गई। पापा पहले तो दो क्षण तक मुझे
देखते रहे फिर मुस्करा दिए।
स्वामीजी की ओर उमुख होत हुए बोले, "स्वामीजी
मैं आपके चरण स्पश कर लू। यह जरा असामाय
प्राणी है हमारे परिवार का।"
स्वामीजी ने बडे प्यार से अपने पास बुलाकर
बिठाया इधर-उधर की बातें की परिवार के सम्बध
मे, मेरी शिक्षा के सम्बध मे, मेरी रुचियो के
सम्बध मे बहुत-सी वार्तें वह करते रह। मुझे उनकी
बातचीत का ढग आकषक लगा। कुछ ही घण्टा में
मैं उनसे घुल मिल गई। मैं भूल गई कि वह यहा
एक विशिष्ट व्यक्तित्व के रूप मे लाए गये हैं
मुझे तो वह एक अच्छे हाजिर जवाब इसान लगे,

मैं भी शायद उनको अच्छी लगी हूगी तभी तो सारा
घर सो जाने के उपरान्त भी मैं और स्वामीजी
बातें करते रहे ।
अच्छा स्वामीजी, यह बताइये मृत्यु के उपरान्त जीव
का क्या होता है ?"
मैंने पापा को भी बैठा रखा था । अपने सामने
सिगरेट पीने पर उन्हें कोई एतराज नहीं था । अत पापा
भी हमारी बातों म रस ले रहे थे
स्वामीजी कुछ बात इससे पूर्व ही पापा ने कहा
एक बात सदा ध्यान रखना मनचली यह सब
बातें सामान्य चर्चा की नहीं हैं यह जीवन और
मृत्यु के रहस्य हैं और इनकी चर्चा करने
का न तुम्हारा अभी समय है और न तुम्हें
इसकी आवश्यकता यह साधना है जो
सामान्य जीवन से हटकर की जाती है, जानती
हो साम्य आतभाग ने एक बार याज्ञवल्क्य
जी से यही प्रश्न पूछा था, उन्होंने कहा—
साम्य आतभाग हाथ आगे बढ़ाकर वचन दीजिए
कि मात्र हम दोनों ही इस रहस्य को जानेंगे
यह चर्चा कभी भी ज्ञान या धर्म का
विषय नहीं बनेगी
आहार सोम्य हस्तमातभाग आवमिवैतस्य वेदिष्याव
न नावनत सजन इति तौ होत्क्रमय म त्रायाञ्चक्रते ।।
स्वामीजी।
एकटक एक क्षण तक पापा का मुह देखते रहे,
फिर अचानक अपने स्थान से उठकर पापा के पास
आकर बैठ गये और बोले दादा मैं तुमको
प्रणाम करता हू ।"
उस रात पता नहीं हम कितनी देर तक बातें
करते रहे । प्रात स्वामी जी बोले, अब मैं अक्सर
यहा आता रहूगा ।
कहकर प्रस्थान कर गये ।
"पापा स्वामी जी ने अपने हथियार आपके सम्मुख
डाल दिए । आपकी विद्वता का लोहा मान लिया
उन्होंने ।"

पापा मुस्करा दिए।
"पापा, आपने उपनिषद पढ़े है ?"
'हा।"
"क्या लिखा है उसमे ?"
"उपनिषद, वेदो का सार है। ब्रह्म वस्तुत ज्ञान का
विषय है उपासना का नही, उपनिषद शब्द का
अर्थ है वह गुह्य ज्ञान जिसे शिष्य गुरु के
चरणो मे बैठकर प्राप्त करता है। इस समय
कुल मिलाकर 250 के करीब उपनिषद उपलब्ध
है। दोएसन नाम के लेखक ने 60 उपनिषदो का
अंग्रेजी मे अनुवाद किया है।"
"पापा उपनिषद किस काल मे लिखे गये।"
"उपनिषदो के काल को निश्चित करना कठिन है।
ह्यूम और कीथ का मत है कि उपनिषदो का
आविर्भाव बुद्ध के जन्म से पूर्व ईसा पूर्व 600
वर्ष के लगभग हुआ। डा० राधाकृष्णनन ने उपनिषदो
का काल 800 से 30 ईसवी पूर्व माना है। यह
वह समय था जब यूनान, चीन, भारत आदि
ससार बडे-बडे देशो मे परम्परागत जीवन
पद्धति पर स्वतन्त्र रूप से छानबीन प्रारम्भ हुई,
काल यास्पस तो इसे विश्व का अक्षीय युग
कहते हैं। मनचली, यह बहुत बड बडे विषय हैं, हम
इतना ही कह सकते हैं कि उपनिषदो म उच्च
आध्यात्मिक सार तत्त्व विद्यमान है।
"पापा आपने कितने उपनिषद् पढ़े ?"
"मैंने तो शायद पांच छह ही उपनिषद पढ़े होंगे"
"आपको उनके आज नाम याद हैं ?"
"हा, मुण्डकोपनिषद, जैमिनीयोपनिषद् वृहदारण्यकोपनिषद्,
कठोपनिषद ईशोपनिषद, नारायणोपनिषद।"
"आपको कौनसा उपनिषद अच्छा लगा ?"
पापा के मुख पर उनकी चिरपरिचित मुस्कान खेल गई।
"इसमे अच्छा और बुरा लगने का प्रश्न ही नही
सभी उपनिषद श्रेष्ठ है जैसे मुण्डकोपनिषद् इसके
प्रथम खण्ड मे आचार्य परम्परा दी गई है।
सब देवताओ मे सब प्रथम ब्रह्मा उत्पन्न हुए उन्होंने

अपने वडे पुत्र अथव को ब्रह्म विद्या का उपदेश
दिया दूसरे अध्याय म वैदिक कम काण्ड का चित्रण
है। ब्रह्म का छदय म प्राप्त करन का उपाय बताया
गया है जिसक अ तगत सब कुछ आत प्रात है
वह आत्मा ज्ञेय है और अन्त म आत्म ज्ञानी
की पूजा के फलस्वरूप के वणन मे प्रारम्भ होता
है। इसी प्रकार इशोपनिषद म कम और ज्ञान
का सु दर सम वय बताया है। जो मनुष्य विद्या
और अविद्या का एक साथ सेवन करता है वह
कम के द्वारा मृत्यु को पार करके नान के द्वारा
अमृत को पा लेता है।"
'पापा आप इतनी वातें जानते हैं। आपन यह सब
पढा है फिर हमको क्यो नही पढाया ?"
"मनचली उपनिषद वेद यह सब विषय अत्य त गूढ
है जनसाधारण की सामा य लीक से थोडा हटकर
मन म ज्ञान उपजाकर अनक तर्कों को ज म देने
वाला, इसीलिए आज की वतमान शिक्षा प्रणाली मे
भी इसका चयन नही किया गया है इस वह ही
पढ सकता है जो स्वय इसे पढने का इच्छुक हो
अगर तुम आज भी यह ग्र थ पढना चाहती हो तो
अवश्य पढो इनको पढन के लिए किसी प्रकार
की उम्र की आवश्यकता नही होती, बस मानवीय
जिनासा ही मात्र सब कुछ है।
'मैं अब इतनी अच्छी सस्कृत पढ सकूगी ?"
'क्यो नही किसी भी ज्ञानी या भाषा को पढ़न क लिए जानने
के लिए, मैंने कहा न कि कोई उम्र नही होती।'
इसी समय ओ० के० चाय लेकर आया।
'पापा आपकी चाय और ओ० के० सदा ही बीच म
व्यवधान उपस्थित कर दत हैं।"
पापा चाय का कप हाथ मे लेते हुए बोले, 'तुम
चाहती हो तो सस्कृत अवश्य पढो। सस्कृत मात्र भाषा
नही है मनचली यह सब भाषाओ की मा है ?"
'लेकिन कितन कठिन हैं इसके शब्द देखकर ही
मस्तिष्क घूमन लगता है मैं कैसे पढ सकूगी ?'
'पढना एक व्यसन है माई डियर, तुम भी जब यह
पढ़ने लग जाओगी तो डूब जाओगी। उतरेगा नहीं इसका

नशा।"

चाय ठंडी हो रही है चाय पीजिए।" मैंने याद दिलायी
उनके हाथ में कब से चाय का प्याला था

□□

आज का समाचार पत्र टाइम्स आफ इण्डिया मेरे हाथ में है
इस बार भी मेरा नाम मेरिट लिस्ट में है मैं दौडकर पापा
के पास पहुच जाना चाहती थी।
लेकिन
पापा टूर पर थ।
इतने में ही टेलीफोन की घंटी बजी मैंने दौडकर रिसीवर
उठाया, पापा की आवाज थी। 'Well done my dear, I am
proud of you my sweet heart"
ओफ मेरे से पहले पापा को पता लग गया यह समाचार
मैं उन्हें अपने मुह से सुनाना चाहती थी।
'पापा आप कभी भी मुझे अवसर नहीं देते?"
"क्या?"
"यह समाचार मैं आपको देना चाहती थी।"
'मैं रात तक घर पहुच जाऊगा। तुम पहले कह देना।'
मैंने अनुभव किया पापा मुस्करा रहे थे। मैंने उन्हें
कभी खिलखिलाकर हसते नही देखा था उनकी
मुस्कराहट इतनी प्यारी थी कि मन के सातो तार
एक साथ बज उठते थे
"आप घर जल्दी जाइये।"
"हा मैं शीघ्र पहुचने का प्रयत्न कर रहा हूं।"
'कब तक पापा।"
"दस बजे तक अवश्य पहुच जाऊगा।"
'दस बजे तो बहुत देर हो जाएगी मैं भिनभिनाई"
'अच्छा बाबा आठ बजे तक पहुच जाऊगा।"
'Promise'
'Promise'
हम सब तैयार बैठे थे आते ही पापा से फरमायश थी
आज डिनर मामा मे खायेंगे।

'चला।'
उस दिन सब मूड म थ सबकी एक ही राय थी
हम सब एक सप्ताह के लिए कही बाहर जायें।
पापा की राय थी कोडयोकनाल चला जाए। रेणु और
पप्पू न कहा कि गाडी से महाराष्ट्र के टूर पर निकला
जाए बाईरोड बाहर गये काफी दिन हो गये हैं। बहुत देर
के वाद विवाद के उपरान्त तय हुआ कि कल पापा 15
दिन म अवकाश के लिए एप्लाइ करेंगे, और उसके उपरान्त
हम लोग महाराष्ट्र के टूर पर निकलेंगे, बम्बई, सिरडी,
पूना औरगाबाद, कोल्हापुर और नासिक।
पापा भी बहुत प्रसन्न थे।
"पापा अब मैं एल० एल० एम० करूगी।"
"क्या अब वकालत करने का इरादा है?" चिर-
परिचित मुस्कराहट पापा के मुख पर खेल रही थी
"दीदी वकालत अच्छी कर सकती है पापा," सबने एक साथ
कहा।
"इसमे शक नही दीदी वकील तो बढिया बन सकती है"
"पापा मैं जो भी काम करती हू अच्छा ही करती हू"
"हा हम सब मानते हैं"। पापा ने सब की ओर
देखते हुए कहा।
आप मेरा एक भी काम ऐसा बताइये जो गडबडिया
टाइप का हो, मेरे सभी काम सुव्यवस्थित ढग से
होते हैं।
"जी, हम मानते हैं," पापा का स्वर था।
'आप व्यग्य कर रहे हैं।"
' इसे तुम व्यग्य समझती हो मनचली?"
"पापा "
मैं कुछ बोलू इससे पूर्व ही पापा बोले, "अच्छा अब
तुम एल० एल० एम० ज्वाइन कर लो।"
"यह सब "
मेरी ओर उन्मुख होते हुए वह बोले छोडो इन्हें, यह सब
बच्चे हैं, वैम तो हम सब को वस्तुत तुम पर गर्व
है रेणु पप्पू यह तो विचारे कभी मैरिट लिस्ट मे
आते ही नही।
मैंने बीच मे ही बात काटकर पूछा "आप कब मेरे

साथ यूनिवर्सिटी चलेंगे ?"

' क्या भई, मुझे यूनिवर्सिटी ल जाकर क्या करोगी ?"

Built up your personality independently my dear पापा ने मेरा कधा थपथपाते हुए कहा।

(21)

पापा के रिटायर होने का समय आ गया था। एक वष ही सम्भवत शेष रहा था।

वह रिटायरमेंट से पूव ही क्लिअरिंग एजेन्ट का काम प्रारम्भ करना चाहते थे, इसी बीच एक फैक्टरी खोली गई। कालेज के साथ साथ पापा न आदेश दिए कि आपको फैक्टरी मे बैठना पडेगा पहले-पहले ता बहुत अखरा लेकिन धीरे धीरे फिर से आफिस मे बैठने की आदत पड गई।

या डाल लेनी पडी।

रिटायर होते ही पापा न मद्रास की एक प्रख्यात कम्पनी साउथ इडिया कारपोरेशन का काम लिया वह स्वतत्र रूप से व्यापार म अवतरित हुए।

और इसी के साथ,

पापा की व्यस्तता ने जीवन का एक नया मोड लिया।

वास्तविकता तो यह है,

कि—

उनके जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ।

पापा के पास भोजन का भी समय नही रहा।

हमारा घर फिर से बट गया।

अहमदाबाद गौण हो गया।

जामनगर, वीरावल, भावनगर और नवालखी ही नही पापा पूरे भारत के स्थाना म बट गये।

हम तो अवाक देखते ही रह गये

जहाज की रोप पकड कर जब पहली बार कैप्टेन से मिलन जहाज पर चढी तो विश्वास हो गया कि अब जिदा नही लौटूगी। समुद्र की चीत्कार करती हुई गजनाओ ने मेरा बहता लहू फ्रीज कर दिया, बरफ

की भांति पिघलती हुई भी स्थिर हो गई मैं
सरसराती हवाए और गर्जन करता हुआ समुद्र दोनों
मुझे सज्ञा शून्य करने के लिए पर्याप्त थे मैंने जीवन
मे कभी भय का शब्द नही सुना था और उस
दिन मेरे पास भय के अतिरिक्त कुछ नही था मात्र
भय से त्रसित, भय से शापित पहली बार मैंने
अनुभव किया कि जीने की चाह कितनी तीव्र होती है
मानव मन मृत्यु से कितना भयभीत रहता है, मैं
वह रोमाचक क्षण कभी नही भूल सकूंगी मेरे दोनो
ओर जिन्दगी और मौत का सघर्ष चल रहा था
दोनो की स्पर्धा अति द्रुतगामी थी, और दोनो
मे से कोई भी पीछे हटना नही चाहता था।
क्या विशाल समुद्र मे मेरी जल-समाधि बन
जायेगी, इसी झूले मे हिचकोले खाते मैं
कब ऊपर पहुच गई भय और
प्रसन्नता का मिश्रण मुझे थपकी दे रहा था मैं
आख भी नहीं खोलना चाहती थी ऊपर पहुचते
ही पापा से ऐसे लिपट गई मानो मुझे यमदूत
लेने आए हो और मैं जाना नही चाहती।
यह भी जीवन का एक प्रथम अनुभव था
हम कितनी आसानी से कह देते हैं मर जायेंगे लेकिन
वास्तव मे मरने से कितना डर लगता है, मृत्यु का
नाम! उस दिन मैंने अनुभव किया कि जीवन जीने से
बडी कोई साध नही और इसी अनुभव के
साथ जीवन की क्षणभगुरता का एहसास हुआ
जीवन की राह बदल गई,
प्रात सूरज उगता दिखाई देता, रात्रि कब अपने अधकार
मे सबको ढक लेती है पता ही नही चलता जब
पापा लौटते तो गगन के चाद तारे मुझे मुह
चिढा रहे होते
अथक परिश्रम करते थे पापा उनकी गाडी नेशनल हाइवे
पर ही दौडती रहती थी।
"पापा, आप बहुत काम करते हैं'
"अच्छा।"
"आप कितना ।" कुछ क्षण रुक कर मैं पुन बोली,
"आप थक नहीं जाते?'

"काम तो करना ही पडता है मनचली, उत्तरदायित्वो और कर्तव्यो को वहन करने के लिए हमे जीवन की इस लम्बी रेस म भाग लेना ही पडता है।"
"हमारा जीवन तो पापा ऐसा प्रतीत होता है मानो होटलो और सर्किट हाउसो का ही होकर रह गया है, अब अपने घर कब चलेंगे, मेरे शब्दो म उकताहट थी"
"घर"
"और क्या यह भी कोई जीवन है ?"
"तुम बहुत सोचती हो '
"आप सोच कहते हैं ?" अक्सर मैं चिढ जाती थी, पापा कहा वह आपके प्यारे प्यारे पन कहा वह वेद उपनिषदो की चर्चा और कहा यह जीवन जहा न समय है न शब्द पापा काम का प्रश्न नही है ना ही उससे घबराहट है लेकिन मैंने नौकरी इसलिए छोडी थी कि अब हम सब आपके पास रहेंगे राहगीरो या अतिथियो की भाति नही परिवार एक परिवार की भाति लेकिन यहा तो कुछ और ही हो गया पहले तो महीने म दो-तीन दिन तो मात्र मेरे ही होते थे लेकिन अब तो इस रोड ने सब कुछ छीन लिया।
पापा मुस्करा दिए।
वास्तव मे बहुत थक गई थी मैं।
' पापा मैं बहुत थक गई हू" मेरे शब्दो म निराशा थी।
' तुम अगर थक जाओगी तो हमारा क्या होगा ?" पापा ने पूछा।
"आप तो लोह पुरुष हैं मैं नही।"
"सतत कर्म करते रहने का नाम ही जीवन है"
' मुझे यह जीवन नही चाहिए। अगर इसी का नाम जीवन है तो। दिनभर टेलीफोन की घटिया कारो की रेस, सडको की मीलो लम्बी दौड, गेहू और खाद की बोरिया।"
इस बार पापा जोर से हस दिए।
"आप हसते हैं।"
"मुझे अब विश्वास होता जा रहा है कि तुम कभी बडी नहीं होओगी।"
"आप टालिए मत।"
"टाल नही रहा, वास्तव मे मुझे तुम्हारी चिन्ता होने लगी है।

मेरे बाद तुम्हारा क्या होगा ?"
"क्या ?" मैंने अनुभव किया कि वह गम्भीर हो गये हैं
ऐसा वाक्य तो उन्होंने आज तक कभी नही कहा था। मैं
एकटक उनका मुह देखती रही।
पापा पुन बोले "मैं सच कह रहा हू मुझे तुम्हारी
बडी चिन्ता होती है।"
'मेरी चिन्ता और आपको ?"
पापा अभी भी गम्भीर थे बोले, "my only problem is
that I will never stop thinking about you
as long as I live How to treat this love
of mine is in your hand"

'पापा"
'हा मनचली इतना अवश्य विश्वास रखना कि मैं पहले
तुमको और बाद मे स्वय को देखता हू तुम कैसे खुश
रहोगी इसकी ही चिन्ता करता हू।"
मेरा मन भर आया।
आखें भीग गईं।
ऐसे वाक्य इससे पूर्व कभी पापा के मुह से नही सुने थे
आज यह अनुभूति कुछ विचित्र सी लगी।
पापा डाक पर चले गये।
मैं पलग पर लेटी अपने विचारो की खाई म गहरी उतरती
गई। मानस पट पर पापा के शब्दों का जाल बिछ गया था
उस जाल मे एक भी छिद्र न था जहा से फाडकर उसे
बाहर निकल सकती।
आज यह चर्चा क्यो ?
मन विचारो के सघर्ष को लेकर बीहड जगल मे भटकता रहा
पर राह उसे कही नही मिली डर नही, पर आश्वस्तता भी
नही थी पता नही कब आख लग गई।
मेरे लिए यह भी एक विचित्रता थी दिन मे सोना, वह
अपने लिए लाचारी हो सकती है मन का द्वन्द्व तन की
थकान जो कुछ भी हो पर सो अवश्य गई थी इसम
न शका थी न प्रश्न।
भावी झझावतो क कुछ सकेत होते हैं जो सामान्य
घटना क्रम कहकर या तो हम टाल जाते हैं या भूल
जाते हैं उन्हें उपेक्षित कर देत हैं लेकिन जब जीवन के
पृष्ठ पलटते हैं तब पता लगता है कि उस दिन

की उदासी क्यों थी, उस उमस का अर्थ क्या था,
शायद महापुरुष इस अवस्था को समझ सकते हैं ?
मैं और तुम या आप का एकात्मक लयलीन होने
पर भी सम्भवतः यह भावना या यह अनुभूति
समझना मेरे सामर्थ्य से बाहर !
जीवन चक्र चल रहा था।
मन में कहीं कुछ अच्छा नहीं लगता था, मुझे ऐसा
लगता कि हम अधिक प्रसन्न हैं, मैं पापा के बहुत
नजदीक हूं, नहीं मैं पापा से बहुत दूर हो गई
हूं, कैसी विचित्र अनुभूति थी, जब पापा सर्विस
में थे। भौतिक रूप से शायद हम आज
जितने सम्पन्न नहीं थे पर आत्मिक रूप से बहुत
अधिक। धीरे धीरे विचारों के संघर्ष या टकराव
की उथल-पुथल की पीड़ा ने क्षय का रूप ले लिया था
और यह रोग मेरे मात्र मन मस्तिष्क पर ही नहीं
सम्पूर्ण अस्तित्व पर छाता जा रहा था।
मेरा परीक्षाफल घोषित हुआ मैंने एल० एल० एम० में भी
प्रथम स्थान प्राप्त किया।
सदैव की भांति इस बार भी पापा बहुत प्रसन्न थे।
परीक्षाफल के दूसरे दिन ही मेरी पुस्तक प्रकाशित
होकर आई।
पापा की प्रसन्नता का वर्णन शायद शब्दों में कभी नहीं
कर पाऊंगी।
मैं तो आसमान पर थी।
प्रथम प्रकाशित कृति का एक नशा होता है यह मैंने उस दिन
अनुभव किया था फिर तो यह नशा मेरे जीवन की आवश्यकता
बन गया। शर्नः-शर्नः मैं व्यसनी होती गई और पापा तो
यही खोजते रहे कि अपने हृदय के कौन से कोने में मुझे
छिपा लें।
इस अप्रतिम प्रसन्नता में निमग्न पापा
को बहुत दिनों के उपरान्त अवकाश मिला था कल ही
जहाज रवाना हुआ था और आगामी एक सप्ताह तक किसी
भी पोर्ट पर जहाज आने वाला नहीं था, मैंने पोर्ट बच्चे की
भांति जिद की।
"पापा क्यों न एक सप्ताह के लिए हम सागर पर चलें ?"

पापा मेरी अकुलाहट स परिचित थ अत मुस्करा कर बोले
"दुपहर का खाना खाकर अहमदाबाद के लिए निकलते हैं।"
मेरी तो प्रसन्नता के मारे भूख ही समाप्त हो गई। पिछले
पाच महीने से इस बन्दर स उस बन्दर, यहा से वहा
कर रहे थ। घर म अर्थात् अहमदाबाद म एकछत्र
राज्य बस ओ० के० का था।
घर आकर लगा स्वग म आ गई पता नही क्यो बचपन
स ही मेरे मन म अपने घर की एक विशेष कल्पना थी
साफ सुथरा गुडिया की भाति सजा हुआ मेरा घर
भीनी-भीनी अगरबत्तियो की सुगन्ध से महकता मेरा
घर।
पापा अक्सर मुझसे कहा करते थे। "मनचली जानती
हो मैंन एक साथ बहुत से प्रशसात्मक रूप देखे
हैं तुम्हारे इसीलिए तो मुझे गव है तुम पर।"
पापा की प्रशसा।
मेरी खुराक थी।
पचभूति का सम्मिश्रण था उसम।
उनकी प्रशसा मे मुझे देवत्व के दशन होते थे
मेरे जीवन की वह सफलता थी उपलब्धि थी,
क्या थी
यह लिखना मेरी लेखनी के लिए असम्भव है।

(22)

दो वष व्यतीत हो गय।
समय पख लगा कर उन्मुक्त पक्षी की भाति ही
शायद गगन मे विहार करता है इसीलिए तो
शायद हम उसे कभी पकड नही पाते।
Time and tide waits for nobody हा
वह प्रतीक्षा भी कब करता है ?
इसम,
और एक दिन,

उस दिन की एक सामान्य घटना ने जीवन का
चक्र मोड दिया, राह मे, नितान्त अकेली ही
खडी रह गई। आगे पीछे, दाए बाए कोई नही
इस विश्व की दुगम राहो पर जहा प्रवेश की
कठिनाई एक समस्या होती है, वहा मेरी जैसी
जो कभी किसी उद्यान मे भी राह खोजने, टहलने
के बहान से नही गई वह विश्व के ढेरो
अपरिचित रास्तो म से अपना रास्ता कैसे चुनेगी,
या तो ठगी सी खडी रह जाती या हिंसक जानवरो
का ग्रास बन जाती।
लेकिन ऐसा कुछ नही हुआ।
वेदना इसी बात की है।
रात रोते जीना और जीते-जीते रोना दोनो म मा
जाया रिश्ता है।
शायद इसीलिए सुख और दुख भी मा जाये हैं।
भटकाव ही जीवन का सम्बल है नही, सच तो यह
भावनाओ के साथ किया हुआ दुराग्रह है।
मेरे जीवन का सबसे अभिशापित दिन।
भावनाओ की भूमि पर आन्तरिक मन की प्रयोगशाला मे
से बवडर उठा जिसन मुझे मेरे चन्दन महल से निकाल
कर त्रिशुक की भाति गगन म लटका दिया। धरती के
गभ से कोमल कोपलो के स्थान पर निकले दहकते
आग बबूले जिन्होंने मुझे भस्म कर दिया।
एक शापित मानव बनाकर मेरी आखो पर पट्टी बाधने
के लिए मुझे ही विवश कर दिया।
पापा उस दिन आफिस से जल्दी लौट आये थे उन्होंने
बताया कि उनके घुटन मे बहुत दद हो रहा है।
उस दिन क्या पता था कि वह सामान्य दद नही था
हमारे खिलखिलाते परिवार को किसी की नजर लग गई थी
और स्वय काल हमारे द्वार पर आकर दस्तक दे रहा था।
कब तक हम द्वार बन्द रख सकते थे ?
आसमान टूट पडा,
कितने तारे एक साथ टूट ?
कितने पर्वत ढहे
मन तो बडा कोमल है ?

जब डाक्टर ने यह बताया कि उन्हें कैंसर है
और इस मंच से उनका कलाकार जीव अब विदा
लेने की तत्परता में है।
सुनकर रोंगटे खड़े हो गये।
पृथ्वी थम गई।
जीव जो मेरे अन्तगत कुलबुला रहा था वह
तो थम गया, स्तब्ध
त्रिशुंक हां न ऊपर आकाश न नीचे धरती।
कितने युगों के उपरान्त आज अग्नि और अम्बर
एक साथ रो दिये, सिसकियां भी इतनी तीव्र थीं
कि कान पड़ी आवाज नहीं सुनाई दे रही थी,
नियति ढोल बजा-बजाकर, काल के साथ आकर
हमें सचेत कर रही थी लेकिन किस को
अवकाश था काल से वार्तालाप करने का हम
तो जीवन चाहते थे जिन्दा रहना चाहते थे
लेकिन क्या काल रहम करेगा ?
सत्य !
उसने किसी पर रहम किया है ?
पापा को कैंसर !
कैंसर !
कैंसर !
कैंसर !
हां लंग कैंसर था।
"डॉ॰ कोई उपाय नहीं ?"
"नहीं'
कितनी मर्मभेदी शब्द थे अन्तर को चीर जाने वाले
फिर भी पूछा था, "डॉ॰ सच बता दीजिये यह
सांसें कब तक हैं ?"
मेरी प्रतिपल रोती आंखें मेरा बहका बहका चेहरा,
मेरी पापा के प्रति प्रगाढ़ आसक्ति सब कुछ वह
एक सप्ताह मे पहचान गया था,
"मुझे गलत नहीं बताइयेगा डॉ॰ साहिब।'
"डॉक्टर !"
' सच यही है अधिक से अधिक, Be brave young Lady '
"पीड़ा, यातना यह तो बहुत छोटे शब्द हैं।"

सारी रात आखों मे कट गई।
पापा के बिना जीवन
जी, पाऊगी, क्या करूगी जीकर ?
दशो दिशायें एक साथ प्रकम्पित होकर आत्तनाद
क– रही थी मेरे साथ, कैसी विवशता थी मैं जी रही
थी या मर गई थी ?
घुट रही थी।
आकाश की धु ध
शहरो की धु-ध,
सभी ने देखी है, मन का धुध भी कभी कोई देख
पाता, आज तक मैंने जीवन म कोई काम घुट घुट
कर नही किया पर आज मेरा सम्पूण अस्तित्व
ही घुट रहा था मैं न कुछ सोचने मे समथ
थी न कुछ बोलन म, क्या सोचू क्या बोलू
की स्थिति म जीने के लिए विवश थी, यह
कैसी विवशता थी, कैसी भाग्य की विडम्बना
अरे।
मैंने अपनी पीडा का चोला उतार कर फेंक दिया। तन
से मन विलग कर दिया।
यह मेरे दुख करन का समय नही था।
जो कैंसर सुनन के उपरा त स्वय को जीवित लाश
समझने लगी थी वह स्वय स्वचालित यत्र बन
गई। उसके अन्तगत अदम्य साहस का प्रादुर्भाव
हा गया। प्रात से सध्या, सध्या से मध्य रात्रि
तक सडको पर चक्कर लगान लगी। इस डाक्टर से
उस डाक्टर तक। इस मन्दिर से उस मस्जिद
तक, इस बैरागी स उस बाबा तक इस ओझा
से उस मौलवी तक।
जिनका जीवन मे कभी नाम भी नही सुना था
उन्ही के दिन रात चक्कर लगा रही थी। आशा
कितनी बडी विडम्बना है।
"आप सिगरेट पीना छोड दीजिय।' डॉ० पटेल न मुस्कराते
हुए कहा।
"डाक्टर कैंसर का रोगी बचता नही है न फिर मेरा
जीवन तो आप बहुत थोडा बता रहे हैं, बस कुछ

ही दिनों का मेला है और आप जानते हैं कि
यह मेरी चालीस वर्ष पुरानी दोस्त है अब इस
समय इसे क्या रोकते हैं ?"
पापा डाक्टर से कह रहे थे, "मेरा रोम-रोम
हाहाकार रहा था।"
"डॉक्टर मैं पापा को बाहर ले जाऊं ?"
"आप क्यों उन्हें भारत से बाहर ले जाने की बार-बार
जिद कर रही हैं वह इस स्टेज पर है कि
उन्हें कुछ फायदा नहीं होने वाला है।"
"एक बार ले जाने मे क्या हर्ज है डॉक्टर ?"

□□

एअर बस हमें भारत से दूर ले जा रही थी। मैं
बराबर अनुभव कर रही थी कि पापा को बहुत कष्ट
हो रहा है मैं उनके मुख की प्रत्येक रेखा पढ
सकती थी, काश मैं उनका थोडा सा भी कष्ट
बटा सकती ?
एक महीना
"मनचली वापिस घर चलो।"
सेण्ट जोजफ मेरी अस्पताल, अमरीका वीजोन
अस्पताल कोई पापा को रोक नहीं सका।
उनकी आकृति हां अब वह मात्र आकृति
ही रह गये थे उनकी आकृति में याचना थी या
अधिकार यह मैं नहीं समझ पाई
लेकिन वह मेरे सम्मुख प्रतिपल
आगे बढते जा रहे थे। मैं उन्हें अपलक मौन
देखती रहती इतना क्रूर और घृणित उपहास नियति
का मेरे साथ क्यों ?
मन का भ्रम इतने पर भी जीवित था।
शायद कुछ चमत्कार हो जाए।
देवी, देवता, व्रत, जप, अनुष्ठान भूत-प्रेत पिशाच

जीवन मे जिन्हें कभी भूलकर भी स्मरण नही
किया था आज वह सभी मेरे विश्वास
के सशक्त स्तम्भ थे । मैं बडी निष्ठा से प्रत्येक
क द्वार पर दिन मे अगणित बार हाथ जोडती
थी ।
प्रत्यक्ष एव परोक्ष दोनो रूपा मे ।
मब व्यथ
सब निरथक ।
कभी कभी लगता, जाने वाला शायद जाना नही
चाहता, वह चाह भी कैसे सकते थे । मुझे छोडकर
जाना लेकिन प्रहरी निरतर दस्तक दे रहा था ।
दोना ही सत्य थे ।
बालना प्राय बन्द हो गया था जब कुछ मैं बहुत
पूछनी तो वह मात्र सिर हिला देते थे ।
उन्हे बहुत पीडा होती थी ।
डाक्टर कहता था कि इस रोग मे भयकर दद होता
है ।
दिन मे चौदह-चौदह इजेक्शन लगते थे, मैं मौन
मूक ।
रो भी तो नही सकती थी ।
एक दिन पता नहीं किस बात पर वह डाक्टर से कह
रहे थे । "तुम क्या जानो मुझे कितना दर्द होता है ।
डॉक्टर !"
आज सोचती हू अगर मैं नही जान सकी तो
डॉक्टर क्या जानेगा ?
दद का अनुपात कितना है जा इन्सान स्वय सह
रहा है क्या मैं उस दद को अनुभव कर सकी ।
समझ सकी ?
सच !
नही !
पीडा तो मुक्ति देनी है । अर्थात् पीडा की मुक्ति
एक दिन
आफ
मैं डॉक्टर को बुलाने जा रही थी उन्होंने मुझे इशारे
स बुलाया और धीरे से बोले, "मनचली

खिड़की खोल दो।"

"क्या पापा ?"

"I am awaiting far my death"

काँप गई मैं।

शायद एक पूरे वाक्य के रूप म यही उनका अन्तिम
वाक्य था।

दूसरे दिन।

पूव की ओर से लाल आ.ी चली जो अपने साथ
सब कुछ उडाकर ले गई।

पापा न एक दिन बताया था कि, कालिदास सस्कृति हैं
ता शेक्सपीयर प्रगति !

तो पापा आप क्या और मैं क्या ?

आप सस्कृति हो सकते ह लेकिन मैं प्रगति नही हो
पाई। प्रगति हा प्रगति अगर होती
ता आप जा कैसे सकत थे।

मेरा प्रेम शायद प्रेम नही,
मेरी भक्ति शायद भक्ति नही, पापा न मैं आपकी
अहेतुकी भक्ति कर पाई न अव्यभिचारिणी और
न ही अनपायिनी।

विश्वास कीजिए आविक्षकी भक्ति मे भी सफल
नही हो पाई लेकिन ?

तीन माह दस दिन।

पूव की ओर से ऐसी भयानक आधी चली जो
अपन साथ सब कुछ उडा कर ले गई। कितनी बार
दोहराऊगी यह वाक्य, कितनी बार।

विवशता मात्र विवशता ही तो है मेरे पास।

पूव की ओर ही उनके पैर थे।

तीन माह, दस दिन।

कितनी बार उगलियो पर मैंन दिन गिने हैं।

हजारो बार,

लाखो बार।

मैं बार-बार बोले जा रही थी।

लेकिन

सब व्यथ,

मेरा एक शब्द भी शायद उन तक नही पहुच रहा

था।

शायद क्या सत्य।
क्रूर काल ने,
नियति ने,
या,
स्वय आपने।
किसन
मेरे साथ
विश्वासघात किया था।
क्यो ?
क्या अपराध था मेरा ?
रोग तो शायद मुझ छोड जाने का मात्र बहाना था।
लेकिन,
स्मृति रोग तो मेरा निजी है, मेरी इस आत्म पीडा
की कोई चिकित्सा नही। किसी शास्त्र म इसका
निदान नही।
मुझसे पापा आपने अथाह अगाध प्यार किया।
क्या,
मृत्यु से भी आपने अथाह-अगाध प्यार किया था ?
मैं हार गयी।
पराजय की पीडा
वह विजयी घोषित कर दी गयी।
क्यो ?
क्या हुआ ऐसा ?
जीवन भर जिसको आपने विजयी घोषित किया उस
ही आप पराजित कर गये।
पना।
नही,
कब तक मौन एकाकी अपने प्रश्नो के लिए घमती
रहूगी ?
चातक।
पर मुझे अब कभी कोई बूद नही मिलेगी।
कभी नही।
जीवन
के सतत सघर्षो

का,
पीड़ा
या
पूर्वजन्म के अभिशाप का,
प्रथम अध्याय,
प्रारम्भ,
वास्तव में कफन की आज मुझे आवश्यकता है।
मात्र,
मेरे कफन की।

डॉ इन्दिरा दीवान

- पी एच० डी०, एम० ए० (समाजशास्त्र) एम० ए० (अर्थशास्त्र) एल० एल० बी०, साहित्यरतन
- कई वर्ष तक मध्य प्रदेश समाज कल्याण बोर्ड की मनोनीत सदस्य
- अनेक सामाजिक शैक्षणिक संस्थाओं से सम्बद्ध
- देश विदेश का व्यापक भ्रमण। बहुत बड़े व्यवसाय से सम्बद्ध होने के बावजूद लिखने पढ़ने का अपरिमित शौक। नौ उपन्यास प्रकाशित हो चुके है।